HINDI
HISTORY OF INDIA

PART I

BY

Dr. Ishwari Prasad, M.A., D.Litt., LL.B.
(University of Allahabad)

भारतवर्ष का इतिहास

प्रथम भाग

लेखक

डाक्टर ईश्वरीप्रसाद एम. ए., डि. लिट्., एल-एल. बी.

प्रयाग-विश्वविद्यालय

ALLAHABAD
THE INDIAN PRESS, LTD.

जहाँ तक हो सका है भाषा सरल रक्खी गई है और विषय को साफ़ बनाने की चेष्टा की गई है। तब भी यह नहीं कहा जा सकता कि पुस्तक सर्वथा दोष-रहित है। जो सज्जन त्रुटियों की ओर लेखक का ध्यान आकृष्ट करेंगे उनकी बड़ी कृपा होगी।

इलाहाबाद } ईश्वरीप्रसाद

शुद्धि-पत्र

		अशुद्ध	शुद्ध
पृ०	४	निट्टी	छट्टी
,,	२३	४०७ ई० पू०	४८३ ई० पू०
,,	३१	भीनसिंह	रतनसिंह
,,	११२	महमूद गवाँ	महमूद गावान
,,	१४९	मुहम्मदख़ाँ	मुबारिज़ख़ाँ

विषय-सूची

अध्याय			पृष्ठ
१ भारतवर्ष का भूगोल	...	...	१
२ हिन्दुस्तान का आर्यों के आक्रमण से पहले का हाल	...		४
(१) पाषाण-काल	...	...	४
(२) धातु का समय	...	...	४
(३) भारतवर्ष की पुरानी जातियाँ	...	...	६
३ आर्यों का हिन्दुस्तान में आना	...	...	६
४ आर्यों की सभ्यता	...	...	६
(१) वेद	...	...	६
(२) आर्यों का चलन और धर्म	...	...	६-११
(३) ऋग्वेद	...	...	११-१२
(४) हिन्दू-साहित्य और पुरातत्व	...	...	१२-१३
(५) सूत्र-काल	...	...	१३-१४
(६) आयु के चार भाग	...	...	१४
(७) जाति की उत्पत्ति तथा विकास	...	...	१४-१७
५ रामायण-महाभारत का समय	...	...	१७
६ बौद्ध-धर्म जैन-धर्म	...	...	२३
(१) बौद्ध-धर्म	...	...	२३-२६
(२) जैन-धर्म	...	...	२६-३१
७ प्राचीन भारत की रियासतें	...	...	३१
८ हिन्दुस्तान पर यूनानियों का आक्रमण	...	...	३५
६ मौर्य-वंश	...	...	३८
१० शक जाति का प्रवेश और आन्ध्र-वंश	...	...	४४
११ कुशन-वंश	...	...	४६
१२ गुप्त-वंश	..	..	४७
१३ हर्ष अथवा शीलादित्य	.		५३

अध्याय			पृष्ठ
१४ चालुक्य वंश—दक्षिण के राज्य	...	...	५७
१५ भारत की प्राचीन सभ्यता	...	...	५८
१६ धार्मिक स्थिति	...	...	६१
१७ उत्तरी भारत के राजपूत राज्य	...	...	६६
१८ मुसलमानों के आक्रमण	...	...	७१
(१) महमूद ग़ज़नवी	...	...	७४
(२) मुहम्मद गोरी	...	...	७६
१९ गुलाम-वंश	...	...	८२
२० खिलजी-वंश	...	...	८८
२१ तुग़लक़-वंश	...	...	९८
२२ सैयद-वंश	...	...	१०७
२३ बहमनी-वंश	...	...	१०८
२४ दक्षिण के मुसलमानी राज्य और विजयनगर का अन्त		...	११३
२५ लोदी-वंश	...	...	११६
२६ मुग़ल-वंश	...	...	१२२
२७ हुमायूँ	...	...	१३१
२८ शेरशाह सूर	...	...	१४०
२९ अकबर (चढ़ाइयाँ)	...	...	१४६
३० अकबर ([illegible])	...	...	१६०
३१ जहाँगीर	...	...	१६६
३२ शाहजहाँ	...	...	१७६
३३ औरंगज़ेब	..	...	१८३
३४ शिवाजी	...	...	१९९
३५ मुग़ल-साम्राज्य की अवनति	...	...	२००
३६ मराठों का उत्थान		.	२०४
३७ मुग़ल काल की सभ्यता			२१

भारतवर्ष का इतिहास

अध्याय १

भारतवर्ष का भूगोल

भूगोल का इतिहास से सम्बन्ध—भूगोल का इतिहास से घनिष्ट सम्बन्ध है। किसी देश का इतिहास जानने के लिए उसका भूगोल जानना आवश्यक है क्योंकि देश की प्राकृतिक दशा तथा जल और वायु का प्रभाव उसके निवासियों की चाल-ढाल और रहन-सहन पर बहुत पड़ता है। भारतवर्ष की भूमि उपजाऊ है। धन-धान्य की यहाँ प्राचीन समय में प्रचुरता थी। यही कारण है कि इस देश पर सर्वदा विदेशियों के आक्रमण होते रहे। भारतवर्ष दो बड़े भागों में विभक्त है, (१) उत्तरी भारतवर्ष जिसे हिन्दुस्तान भी कहते हैं, और (२) दक्षिणी भारत। उत्तरी भाग हिमालय से विन्ध्याचल तक और खम्भात से महानदी तक फैला हुआ है। इसमें मालवा, बुन्देलखण्ड आदि देश भी सम्मिलित हैं। इस देश में बड़ी बड़ी नदियाँ बहती हैं। सिन्धु नदी हिमालय से निकलती है और पञ्जाब की सारी नदियों का पानी लेकर, १८०० मील बहकर, अरब सागर में गिरती है।

दोआब की भूमि—गङ्गा में यमुना, घाघरा, गण्डक और [illegible] नदियों का जल लेकर [illegible] मील बहकर [illegible] है। गङ्गा और यमुना के [illegible]

बीच की भूमि, जिसे दोआब कहते हैं, बड़ी उपजाऊ है। हिन्दुस्तान पर बाहर से जितने आक्रमण हुए हैं उनसे दोआब को ही विशेष हानि उठानी पड़ी है। विदेशी हमला करनेवालों का दाँत सदा दोआब पर ही रहता था। जो हमला करनेवाले हिन्दुस्तान में ठहर गये, उन्होंने दोआब में ही अपना राज्य स्थापित किया। उत्तर में हिमालय पर्वत अगम्य है। इसी कारण चीन की ओर से कभी कोई हमला नहीं हुआ। परन्तु उत्तर-पश्चिम के कोने में हिन्दूकुश पहाड़ में खैबर और उत्तरी बलोचिस्तान में बोलान में बोलान आदि दर्रे हैं जिनमें होकर लोग बाहर से आ जा सकते हैं। सिकन्दर के समय से लेकर अहमदशाह अब्दाली के समय तक हिन्दुस्तान पर जितने आक्रमण हुए वे सब इसी मार्ग से हुए हैं। इन्हीं में होकर फ़ारस, तुर्किस्तान और मध्य एशिया के मुसलमानों ने हिन्दुस्तान पर हमले किये और लूट-मार की। उत्तरी हिन्दुस्तान में बहुत लम्बे चौड़े मैदान हैं जिनको बड़ी-बड़ी नदियाँ सींचती हैं। बंगाल का सूबा भी सदा सुखी रहा है, इसका कारण यह है कि बाहर से जितने हमले हुए उनका प्रभाव वहाँ पर कुछ भी नहीं पड़ा। बंगाल के लोग जैसे रहते आये थे वैसे ही रहते रहे। दिल्ली से दूर होने के कारण वहाँ लूट-मार भी नहीं हुई। पश्चिम की ओर राजपूतानावालों की रक्षा वहाँ के रेगिस्तान ने की। बाहर से हमला करनेवालों के लिए मरुदेश पर विजय प्राप्त करना कठिन था। यही कारण है कि किसी मुसलमान बादशाह ने अलाउद्दीन के समय तक राजपूताना पर हमला नहीं किया और अलाउद्दीन की मृत्यु के पीछे कई सौ वर्ष तक वहाँ दिल्ली का आधिपत्य स्थिर रखना कठिन हो गया। राजपूताना बाबर के समय तक स्वाधीन रहा। ऐसी प्राकृतिक स्थिति होने के कारण राजपूत लोग अपने स्वाधीन राज्य स्थापित कर सके और यही कारण था कि वे

भारतवर्ष
का
प्राकृतिक अवस्था
ति ब त
अरब समुद्र
बंगाल की खाड़ी

हिन्दुस्तान की अन्य जातियों से अधिक वीर और पराक्रमशील हो गये।

दक्षिण—दक्षिण बिलकुल दूसरा ही देश है। उत्तरी हिन्दुस्तान और दक्षिण के बीच में नर्मदा नदी, सतपुड़ा पहाड़ और विन्ध्याचल पहाड़ हैं। इसी कारण आक्रमण करनेवाले दक्षिण की ओर कम गये। दक्षिण पर अपना आधिपत्य स्थापित करने का मुसलमानों ने बहुत प्रयत्न किया, परन्तु बड़ी-बड़ी लड़ाइयाँ लड़ने पर भी उन्हें पूरी सफलता नहीं प्राप्त हुई। उत्तरी हिन्दुस्तान से बिलकुल अलग होने के कारण वहाँ के मनुष्यों की बोल-चाल, रीति-रिवाज, रहन-सहन आदि पर उत्तर के लोगों का रत्ती भर भी प्रभाव नहीं पड़ा। दक्षिण में पहाड़ों की दो प्रसिद्ध श्रेणियाँ हैं जिनको पूर्वीय और पश्चिमीय घाट कहते हैं। ये बहुत दूर तक फैली हुई हैं। इन पहाड़ों में गढ़ अथवा दुर्ग बनाना सुगम था। इसीलिए १७ वीं और १८ वीं शताब्दी में मरहठों ने यहाँ क़िले बनाये और वे मुग़लों से लड़ते रहे। मुग़लों के साथ लड़ने में इन क़िलों से उन्हें ख़ासी सहायता मिली। मैदान यहाँ पर बहुत कम हैं। पहाड़ घने जङ्गलों से ढके हुए हैं जिनमें होकर निकलना बहुत कठिन है। यही कारण है कि दक्षिण को पराजित करने में मुसलमानों को बड़ी कठिनाई हुई। जल-वायु का प्रभाव भी मनुष्यों के जीवन पर इस देश में बहुत पड़ा है। वे कष्ट से नहीं घबराते और परिश्रम करने के लिए सदा कटिबद्ध रहते हैं। दक्षिण पर बाहरी हमलों के न होने का एक कारण और भी है। वह यह कि दक्षिण के तीन ओर जल है और अँगरेज़ों से पहले ऐसी किसी जाति ने हिन्दुस्तान पर हमला नहीं किया जो सामुद्रिक युद्ध करना जानती हो। इस कारण सब आक्रमण करनेवाले स्थल के मार्ग से ही आये और उसी राह से लौट गये।

अध्याय २

हिन्दुस्तान का आर्यों के आक्रमण से पहले का हाल

पाषाण-काल—यद्यपि हिन्दुस्तान की सभ्यता बहुत प्राचीन है परन्तु एक समय ऐसा था जब यहाँ के भी निवासी जङ्गली जानवरों को मार कर खाते और वृक्षों के पत्ते पहना करते थे। उनके पास पत्थर के भद्दे औज़ार रहते थे। वे वृक्षों के नीचे या चट्टानों की ओट में रहते थे। ये लोग न तो धातु का प्रयोग करना जानते थे और न बर्तन इत्यादि बनाना ही। इनके औज़ार पत्थर, लकड़ी या मिट्टी के होते थे। परन्तु मिट्टी के औज़ारों का कोई पता नहीं है। पत्थर के औज़ार अब तक हिन्दुस्तान के बहुत से हिस्सों में पाये जाते हैं, जिनसे पता लगता है कि मनुष्य के इतिहास में एक पाषाण-काल था जिसमें पत्थर ही से धातु का काम लिया जाता था।

धातु का समय—धीरे-धीरे इन लोगों ने सभ्यता में उन्नति की। पहले-पहल इन्होंने पत्थर के ही तेज़ और अच्छे औज़ार बनाये और फिर ये धातु का उपयोग करने लगे। फिर इन्होंने चाक पर मिट्टी के बर्तन बनाना भी आरम्भ कर दिया। अब ये पशु जानवर भी पालने और खेती-बारी करने लगे। ये लोग मुर्दों को पृथ्वी में गाड़ते थे। हिन्दुस्तान की पुरानी जातियों का निर्णय करना कठिन है क्योंकि भिन्न-भिन्न जातियों के लोग आकर इस देश के लोगों में मिल गये। परन्तु दो तरह के मनुष्य सारे हिन्दुस्तान में दिखाई देते हैं— एक तो वे जो लम्बे गोरे और सुडौल हैं और

जो उत्तरी भारतवर्ष में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और मुसलमानों में पाये जाते हैं तथा दक्षिण में भी मिलते हैं; दूसरे वे जो काले, कुरूप और चपटी नाकवाले हैं जो अब तक जङ्गलों में पाये जाते हैं। एक तीसरी शकल के लोग और भी हैं। किन्तु उनकी संख्या अधिक नहीं है। वे ब्रह्मा, तिब्बत, नैपाल और हिमालय की तराई में पाये जाते हैं। दक्षिण में अधिकांश द्रविड़ जाति के लोग हैं। पाषाण-काल के लोगों की अपेक्षा द्रविड़ लोग अधिक सभ्य थे। निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता कि भारत में यह जाति कहाँ से आई परन्तु यह विचार किया जाता है कि वह उत्तर-पश्चिम के दर्रों से आई होगी। इस जाति के लोग आज-कल मद्रास और बम्बई प्रान्तों में पाये जाते हैं। ये लोग तामिल, तैलंगू और कनाड़ी भाषा बोलते हैं। बंगाल में भी कुछ द्रविड़ क़ौम के लोग रहते थे परन्तु बाद में आर्यों ने उनको बंगाल और उत्तरी हिन्दुस्तान से निकाल दिया तब वे लोग उड़ीसा और छोटा नागपुर में रहने लगे। वहाँ ये गोंड तथा संथाल के नाम से प्रसिद्ध हुए। कुछ इतिहासकार वर्णन करते हैं कि ये उत्तरी भाग के दक्षिण-पूर्व की ओर से जल और स्थल द्वारा आये थे। हिन्दुस्तान के निवासी किसी एक जाति के नहीं हैं। बहुत-सी विदेशी जातियों के लोग यहाँ आये और रहने लगे। उनमें से मुख्य ये हैं—

' आर्य—ये लोग कई शताब्दियों तक मध्य-एशिया से हिन्दुस्तान में आते रहे। ऋग्वेद में इनका वर्णन है। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य इन्हीं की सन्तान समझे जाते हैं। पहाड़ों और जंगलों ने इन्हें बहुत दिन तक दक्षिण में जाने से रोका। इसी लिए आर्यों के रहन-सहन, रीति-रिवाजों का दक्षिण में कम असर हुआ।

में इस बात का प्रमाण है कि पुरोहितों को दक्षिणा के बदले गायें ही दी जाती थीं। पहले आर्य पंजाब में बसे। वेदों की रचना इसी देश में हुई। तदनन्तर सिन्ध और गुजरात होते हुए कुछ लोग मालवा तक पहुँच गये परन्तु विन्ध्याचल पहाड़ के कारण दक्षिण की ओर न बढ़ सके। कुछ लोग काश्मीर होते हुए हिमालय पर्वत के नीचे-नीचे संयुक्त-प्रदेश आगरा व अवध और बिहार में पहुँच गये। इन लोगों ने अवध में कोशल और विहार में विदेह राज्य स्थापित कर लिये। जो पंजाब में बस गये वे धीरे-धीरे पूर्व की ओर बढ़ते रहे और गङ्गा-यमुना के बीच की उपजाऊ भूमि को पाकर उन्होंने अपने छोटे-छोटे राज्य बना लिये। कौरवों ने दिल्ली के आस-पास के देश में अपना राज्य स्थापित किया जिसकी राजधानी इन्द्रप्रस्थ थी और पाञ्चालों ने गङ्गा के किनारे कन्नौज और कम्पिल के समीप के देशों को अपने अधीन कर लिया। धीरे-धीरे ये लोग सारे भारतवर्ष में फैल गये। विन्ध्याचल के उस पार के दक्षिणी हिन्दुस्तान को ये लोग म्लेच्छ देश कहते थे परन्तु कुछ काल के बाद वहाँ भी द्रविड़ों की छोटी-छोटी रियासतें—जैसे पाण्ड्य, चोल, चेर अथवा केरल आदि—स्थापित होगईं।

यूरोप के निवासी जर्मन, फ्रेंच, इटालियन आदि, फ़ारस के मुसलमान, और हिन्दुस्तान के हिन्दू तथा मुसलमान सब इन्हीं आर्यों की सन्तान हैं। भिन्न भिन्न देशों में रहने से उनके रूप रङ्ग और भाषा में अन्तर तो हो गया है तथापि उनकी भाषाओं के बहुत से शब्द एक ही से हैं।

अध्याय ४

आर्यों की सभ्यता

आर्य और अनार्य—आर्य लोग जिस समय पंजाब में आये उस समय उन्हें इस देश में कोल, द्रविड़ आदि जातियाँ मिलीं। इनको आर्य घृणा की दृष्टि से देखते थे। इसलिए उनको इनसे बहुत-सी लड़ाइयाँ लड़नी पड़ीं। परन्तु आर्यों ने जब यह देखा कि वे लोग संख्या में थोड़े हैं तब उन्होंने देशी जातियों से मेल कर लिया और उनके साथ बराबरी का बर्ताव करने लगे।

वेद—आर्य लिखना नहीं जानते थे। परन्तु अपने देवताओं की स्तुति करने के लिए उन्होंने बहुत से मन्त्र बनाये थे। इन मन्त्रों को वे कण्ठस्थ कर लेते थे और इनका शुद्ध उच्चारण करना और पढ़ना अपनी सन्तान को भी सिखा देते थे। जब उन्होंने लिखना सीख लिया तब ये मन्त्र भी लिख डाले गये। वेद उन ग्रन्थों को कहते हैं जिनमें इन मन्त्रों का संग्रह किया गया है। वेद शब्द का अर्थ है जानना। वेद चार हैं—ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद। ऋग्वेद इन सबमें प्राचीन है। हिन्दू लोग वेदों को अपौरुषेय यानी ईश्वरोक्त मानते हैं।

आर्यों का चलन—वेदों से हमें उस समय के आर्यों के रहन-सहन का हाल ज्ञात होता है। जब आर्य पंजाब में आये तब उन्होंने जङ्गलों को काट कर साफ़ किया और खेती की ओर ध्यान दिया। उन्होंने गेहूँ, जौ आदि अनाज पैदा किये जिससे सारी जाति का भरण-पोषण हुआ। उनके पास गाय, बैल इत्यादि पशु भी थे। वे गाय का विशेष आदर करते

॥ इस बात का प्रमाण है कि पुरोहितों को दक्षिणा के बदले गायें ही दी जाती थीं। पहले आर्य पंजाब में बसे। वेदों की रचना इसी देश में हुई। तदनन्तर सिन्ध और गुजरात होते हुए कुछ लोग मालवा तक पहुँच गये परन्तु विन्ध्याचल पहाड़ के कारण दक्षिण की ओर न बढ़ सके। कुछ लोग काश्मीर होते हुए हिमालय पर्वत के नीचे-नीचे संयुक्त-प्रदेश अवध, बंगाल और बिहार में पहुँच गये। इन लोगों ने अवध में कोशल और बिहार में विदेह राज्य स्थापित कर लिये। जो पंजाब में बस गये थे धीरे-धीरे पूर्व की ओर बढ़ने लगे और गङ्गा-यमुना के बीच की उपजाऊ भूमि को पाकर उन्होंने अपना कुरु-पञ्चाल राज्य बना लिया। कौरवों ने दिल्ली के हस्तिनापुर के पास में अपना राज्य स्थापित किया जिसकी राजधानी इन्द्रप्रस्थ थी और पाण्डवों ने गङ्गा के किनारे कम्पिल और कौशाम्बी के समान के देशों को अपने अधीन कर लिया। धीरे-धीरे ये आर्य लोग भारतवर्ष में फैल गये। विन्ध्याचल के उस पार के दक्षिणी हिन्दुस्तान में ये लोग अवश्य बहुत काल के पश्चात् कुछ काल के बाद यहाँ भी द्रविड़ों की अलग-अलग रियासतें—जैसे पाण्ड्य, चोल, और चेर आदि—स्थापित हुईं।

यूरप के निवासी अरब, चीन, ईरानियन आदि, फ़ारस के मुसलमान, और हिन्दुस्तान के हिन्दू तथा मुसलमान सब इन्हीं आर्यों की सन्तान हैं। भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनके रङ्ग रूप और भाषा में अन्तर तो हो गया है परन्तु इनकी भाषाओं में बहुत से शब्द एक ही से हैं।

— — —

अध्याय ४

आर्यों की सभ्यता

आर्य और अनार्य—आर्य लोग जिस समय पंजाब में आये उस समय उन्हें इस देश में कोल, द्रविड़ आदि जातियाँ मिलीं। इनको आर्य घृणा की दृष्टि से देखते थे। इसलिए उनको इनसे बहुत-सी लड़ाइयाँ लड़नी पड़ीं। परन्तु आर्यों ने जब यह देखा कि वे लोग संख्या में थोड़े हैं तब उन्होंने देशी जातियों से मेल कर लिया और उनके साथ बराबरी का बर्त्ताव करने लगे।

वेद—आर्य लिखना नहीं जानते थे। परन्तु अपने देवताओं की स्तुति करने के लिए उन्होंने बहुत से मन्त्र बनाये थे। इन मन्त्रों को वे कण्ठस्थ कर लेते थे और इनका शुद्ध उच्चारण करना और पढ़ना अपनी सन्तान को भी सिखा देते थे। जब उन्होंने लिखना सीख लिया तब ये मन्त्र भी लिख डाले गये। वेद उन ग्रन्थों को कहते हैं जिनमें इन मन्त्रों का संग्रह किया गया है। वेद शब्द का अर्थ है जानना। वेद चार हैं—ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद। ऋग्वेद इन सबमें प्राचीन है। हिन्दू लोग वेदों को अपौरुषेय यानी ईश्वरोक्त मानते हैं।

आर्यों का चलन—वेदों से हमें उस समय के आर्यों के रहन-सहन का हाल ज्ञात होता है। जब आर्य पंजाब में आये तब उन्होंने जङ्गलों को काट कर साफ़ किया और खेती की ओर ध्यान दिया। उन्होंने गेहूँ, जौ आदि अनाज पैदा किये जिससे सारी जाति का भरण-पोषण हुआ। उनके पास गाय, बैल इत्यादि पशु भी थे। वे गाय का विशेष आदर करते

थे क्योंकि वह उनको खाने के लिए घी-दूध देती थी और खेती करने के लिए बैल। उनके पास घोड़े भी थे जो लड़ाई के समय रथों में जोते जाते थे। ये लोग सुन्दर स्वच्छ स्थानों में, नदियों के किनारे, रहते और लकड़ी या काठ के घर बनाते थे। भोजन उनका साधारण था। वे एक प्रकार का रस भी अपने देवताओं को अर्पण करते थे जिसे सोम कहते थे। यह एक बेल के डंठल को कुचल कर निकाला जाता था। ये लोग गाना-बजाना भी जानते थे और उत्सवों के समय रथों और गाड़ियों में बैठकर निकलते थे। इनमें कारीगर भी थे जो तलवार, कुल्हाड़ी, तीर आदि युद्ध की सामग्री बनाना, कपड़े बुनना, और नाव, रथ आदि बनाना जानते थे। ये लोग सोने-चाँदी के आभूषण भी बनाते थे जिन्हें उनकी स्त्रियाँ पहनती थीं। आर्यों की सामाजिक दशा आज-कल की दशा से भिन्न थी। उनमें जाति-पाँत का भेद नहीं था। स्त्रियों को काफ़ी स्वतन्त्रता थी। उस समय पर्दा-प्रणाली का प्रचार नहीं था। समाज में स्त्रियों का आदर होता था और उन्हें शिक्षा भी दी जाती थी। स्त्रियाँ अपने पतियों के साथ यज्ञ-शाला में बैठतीं और हवन करती थीं। स्त्रियों में बहुत-सी विदुषी होती थीं जो लिखना-पढ़ना जानती थीं। इससे जान पड़ता है कि स्त्रियों की दशा आजकल की सी न थी। घर में पिता शासक होता था। घर के सब लोग उसी के आज्ञानुसार चलते थे। पुरोहित यज्ञ कराते थे। सारी आर्य-जाति छोटे-छोटे कुण्डों में विभक्त थी। प्रत्येक कुण्ड का एक नेता होता था जो युद्ध के समय सेनापति का काम करता और अपने साथियों की रणक्षेत्र में देख-रेख करता था।

आर्यों का धर्म—[illegible]

[illegible]

बहुत आवश्यकता होती थी। खेती के लिए उन्हें जल की आवश्यकता होती थी। इसलिए वे इन्द्र की स्तुति करने लगे जिससे वृष्टि हो और खेती करने में सुविधा हो। इस समय वे द्यौ, इन्द्र, वरुण, उषा, वायु और अग्नि आदि की उपासना करते थे और इन्हें सन्तुष्ट करने के लिए यज्ञ किया करते थे। ये लोग वर्तमान समय के हिन्दुओं से भिन्न थे। इनके न मन्दिर थे और न ये मूर्ति-पूजा ही करते थे। परन्तु धीरे-धीरे बुद्धिमान आर्यों ने इस बात का अनुभव किया कि ऐसी कोई शक्ति अवश्य है जिसने बिजली, मेघ, सूर्य, चन्द्र आदि बनाये हैं और वे उसके अस्तित्व पर विचार करने लगे। इस प्रकार उन्हें ईश्वर का ज्ञान हुआ और वे उसकी उपासना करने लगे। कालान्तर में एक ऐसी जाति बन गई जिसने ईश्वर के अस्तित्व और जन्म-मरण की समस्या पर बहुत विचार किया। यह जाति ब्राह्मणों की थी, जो पीछे से अपनी विद्वत्ता और पवित्रता के कारण दूसरी जातियों से श्रेष्ठ समझी जाने लगी।

ऋग्वेद—जैसा कि ऊपर कह चुके हैं, ऋग्वेद सब वेदों में प्राचीन है। यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद पीछे के बने हुए हैं। विद्वानों का मत है कि ऋग्वेद के मन्त्र ईसा से २००० वर्ष पहले रचे गये होंगे। इसमें १० मण्डल हैं और लगभग १०२८ सूक्त* हैं। ये मन्त्र देवताओं की स्तुति के लिए बनाये गये थे। जिन देवताओं का वेद में वर्णन है, वे ये हैं—इन्द्र, अग्नि, सविता, वायु, वरुण, अश्विनै, मरुत् आदि। और जिन ऋषियों ने वेद के मन्त्रों की रचना की उनके नाम ये हैं—वशिष्ठ, विश्वामित्र, अत्रि, अगस्त्य, जमदग्नि इत्यादि। ऋग्वेद में उन युद्ध का भी वर्णन है जो भारतवर्ष

* सूक्त भिन्न भिन्न विषयों के मंत्रों के समूह को कहते हैं।

में आने पर आर्यों को अनार्यों से करना पड़ा था। इससे जान पड़ता है कि आर्य लोग बड़े वीर और चतुर थे और बड़ी पवित्रता से जीवन व्यतीत करते थे। उनका अपने देवताओं पर पूरा विश्वास था और उन्हें प्रसन्न करने के लिए वे सत्य पर चलते और धर्म के नियमों के अनुसार आचरण करते थे। किसी बुरी रीति अथवा रिवाज का वेदों में वर्णन नहीं है। इससे सिद्ध होता है कि उस समय के लोग सदाचारी तथा सच्चरित्र थे। भविष्य को उत्तम बनाने की आशा और इस लोक तथा परलोक में सुख पाने की इच्छा उन्हें बुरे मार्ग में जाने से रोकती थी।

मृतक-क्रिया—आर्य लोग मृतक-क्रिया बड़ी धूमधाम से करते थे। उनका विश्वास था कि मृत्यु के बाद सदाचारी और पवित्रात्मा पुरुष ऐसे लोक में जाते हैं जहाँ केवल सुख ही सुख और शान्ति है। इस लोक के शासक को ये लोग यम कहते थे, जिसके सम्मुख मृत्यु के बाद प्रत्येक मनुष्य को जाना पड़ता था। मनुष्य के शव (लाश) को ये लोग जलाते थे और जली हुई अस्थियों की राख को गाड़ देते थे।

वैदिक संस्कृत—जिस काल का हम ऊपर वर्णन कर चुके हैं वह वैदिक काल कहलाता है। वेद की संस्कृत पिछले काल की संस्कृत से भिन्न है और कठिन भी। आज-कल अँगरेज़ी और योरप की अन्य भाषाओं में वेदों का अनुवाद हो गया है। छपने की सुविधा के कारण वेद का प्रचार अब अधिक हो गया है और बहुत-से लोग जान गये हैं कि वेदों में क्या लिखा है। वेदों से ज्ञात होता है कि हिन्दू जाति की प्राचीन सभ्यता कैसी थी और उसके पूर्वज किस प्रकार रहते थे।

हिन्दूसाहित्य और पुरातत्व—पहले कह चुके

है कि वैदिक काल के अन्तिम भाग में ब्राह्मणों की एक पृथक् जाति बन गई थी जिसका काम विद्या पढ़ना और यज्ञ करना था। ये लोग विद्वान् थे। इसलिए समाज में इनका विशेष आदर होता था। वे विद्या-प्रचार के लिए सदा यत्न करते थे। वेदों का इन्होंने भली भाँति अध्ययन किया था। इन्होंने ज्योतिष विद्या भी पढ़ी और नक्षत्रों की स्थिति और चाल पर विचार किया। गणितशास्त्र का भी इन्होंने अध्ययन किया। परन्तु विशेष ध्यान इनका तत्त्वज्ञान की ओर था। इस विषय पर इन्होंने बहुत विचार भी किया। इन्होंने ब्राह्मण और उपनिषद् नामक ग्रन्थ बनाये। ब्राह्मणों में वैदिक धर्म की व्याख्या है और उपनिषदों में आत्मा और ईश्वर का सम्बन्ध बतलाया गया है। ब्राह्मण ग्रन्थ गद्य में हैं। इनमें यज्ञ की व्याख्या की गई है और यह भी बतलाया गया है कि यज्ञ करने का क्या अभिप्राय है और यज्ञ करने के लिए किन-किन पदार्थों की आवश्यकता है। इनमें कुछ मन्त्रों का अर्थ भी दिया हुआ है। इनसे पता लगता है कि आर्य लोग सरस्वती नदी के किनारे से कुरुक्षेत्र, पाञ्चाल, मत्स्य (जयपुर), शूरसेन (मथुरा), काशी, कोसल, मगध आदि देशों में गये और वहाँ बस गये।

सूत्रकाल—वैदिक काल के बाद सूत्र-काल का आरम्भ होता है। सूत्र तीन प्रकार के हैं—श्रौतसूत्र, गृह्यसूत्र और धर्मसूत्र। श्रौतसूत्रों में यज्ञों की विधियों का वर्णन है। गृह्यसूत्रों में हिन्दू संस्कार, कर्मकाण्ड आदि के नियम इकट्ठे किये गये और धर्मसूत्रों में रीति-रिवाज, नाते तथा फौजदारी के कानून। हर एक हिन्दू बालक को बचपन ही से तीनों सूत्र पढ़ा दिये जाते थे। पाँचवें बालक गुरु के पास विद्या पढ़ने के लिए भेज दिया जाता था। वह गुरु के घर रहता और उसको

सेवा करता था। विद्या पढ़कर वह विवाह करके गृहस्थ की तरह अपना जीवन व्यतीत करता था। हर एक गृहस्थ के पाँच मुख्य कर्त्तव्य थे—देवताओं और पितरों को प्रसन्न करने के लिए यज्ञ करना, अतिथि-सत्कार, देवताओं की स्तुति, ईश्वर की आराधना।

हिन्दुओं का फ़ौजदारी क़ानून अन्य प्राचीन जातियों के क़ानून की अपेक्षा नरम था। अभियुक्तों के साथ कठोर बर्ताव नहीं किया जाता था। मनुजी के धर्मशास्त्र में ऐसे ही आचार-व्यवहार के नियम लिखे हुए हैं।

आयु के चार भाग—सूत्रों के अनुसार ब्राह्मण की आयु चार भागों में विभक्त की गई थी—प्रथम अवस्था ब्रह्मचर्य की थी जिसमें २५ वर्ष तक मनुष्य का मुख्य कर्त्तव्य विद्योपार्जन था, दूसरी गृहस्थ-अवस्था थी जिसमें वह विवाह करके अपने परिवार-सहित घर में रहता और अपनी जीविका कमाता था; तीसरी वानप्रस्थ-अवस्था थी जिसमें वह घर-बार त्याग कर वन में वह ईश्वर की आराधना में तत्पर हो जाता था। इस अवस्था में कभी-कभी लोग अपनी स्त्रियों को भी साथ ले जाते थे। चौथी अवस्था सन्यास-आश्रम की थी। इसमें मनुष्य संसार से विरक्त होकर आत्म-विचार को निष्कर्ष [illegible] गृहस्थियों को धर्म और कर्त्तव्य का उपदेश करते थे। इन लोगों में बड़े-बड़े विद्वान, महात्मा और साधु होते थे जो अब तक हिन्दुओं में ऋषियों के नाम से प्रसिद्ध हैं। ये लोग वेद और शास्त्रों का अध्ययन करते और तपस्या करते थे। इन लोगों ने वैद्यक, [illegible], [illegible], धर्मशास्त्र, न्याय, वेदान्त तक अनेकानेक [illegible] पर अनेक ग्रन्थ लिखे हैं, [illegible]

जाति की उत्पत्ति [illegible]

प्राचीन जातियों पर आक्रमण किया तब उनको ईश्वर की स्तुति के लिए अवकाश नहीं मिलता था। इस आवश्यकता के कारण ये लोग चार बड़ी बड़ी जातियों अथवा वर्णों में विभक्त हो गये। कुछ लोग ऐसे नियत किये गये जिनका काम केवल वेद पढ़ना, देवताओं की पूजा करना और यज्ञ इत्यादि करना था। ये लोग ब्राह्मण कहलाने लगे। धीरे-धीरे समाज में इनका विशेष आदर होने लगा। लड़ाई-झगड़े के कारण यह आवश्यकता हुई कि कुछ लोग केवल युद्ध करने के लिए नियत किये जावें। इस प्रकार क्षत्रिय जाति बन गई। इस जाति के लोग युद्ध की सामग्री तैयार करने और दूसरी जातियों की रक्षा करने लगे। पहले इनमें और ब्राह्मणों में विशेष भेद नहीं था परन्तु कालान्तर में ये ब्राह्मणों से छोटे दर्जे के समझे जाने लगे।

तीसरी जाति वैश्यों की बन गई। इसका काम वाणिज्य और कृषि करना नियत हुआ। ये लोग अन्न पैदा करते थे जिससे समाज का पालन होता था।

इन तीन जातियों के लोग श्रेष्ठ समझे जाते थे और द्विज कहलाते थे। यज्ञोपवीत अथवा जनेऊ पहनने का केवल इन्हीं को अधिकार था। इनके अतिरिक्त चौथी जाति शूद्रों की बन गई जिसका काम अन्य जातियों की सेवा करना था। इन लोगों की संख्या अधिक थी। इनसे छोटे दर्जे के भी लोग समाज में थे जो चाण्डाल अथवा अन्त्यज कहलाते थे और जिनको दूसरी जातियों के साथ रहने की आज्ञा नहीं थी।

जातियों का विकास—सामाजिक आवश्यकताएँ बढ़ने से जातियों की उत्पत्ति हुई परन्तु धीरे-धीरे जातियों

वैसे नई जातियाँ बनती गईं यहाँ तक कि भिन्न-भिन्न पेशे करनेवालों की भिन्न-भिन्न पचासों जातियाँ बन गईं। इससे हिन्दुस्तान की बड़ी हानि हुई है। राष्ट्रीयता का अभाव इसी का परिणाम है। एक जाति के लोग अपने को दूसरों से भिन्न समझते हैं और खान-पान तथा पारस्परिक व्यवहार न होने के कारण एक दूसरे से बहुधा अलग रहते हैं। जाति के नियम कड़े होने के कारण बहुत-से लोगों को विदेश जाने में बड़ी कठिनाई होती है क्योंकि समुद्रयात्रा में छूत-अछूत का विचार नहीं किया जा सकता। जाति के बन्धन ही के कारण बहुत-से विद्यार्थी विदेशों में शिक्षा प्राप्त करने नहीं जा सकते। हाँ, अब यह कठिनाई पहले से बहुत कम हो गई है। प्रत्येक जाति का पेशा अर्थात् व्यवसाय नियत है। जो मनुष्य जिस जाति में उत्पन्न हुआ है उसी के पेशे को [illegible] करता है। इससे समाज की उन्नति में बड़ी बाधा पड़ती है और बहुत-से योग्य मनुष्य उन्नति नहीं कर सकते।

कुछ विद्वानों का कथन है कि जाति की संस्था ने भारतवर्ष की प्राचीन सभ्यता की रक्षा करने में बड़ी मदद की है। जाति का धर्म से गहरा सम्बन्ध है। यही कारण है कि जातियाँ हिन्दुस्तान में सैकड़ों वर्षों से चली आती हैं। अपनी अपनी जाति का मनुष्यों पर बड़ा दबाव रहता है और जब कोई मनुष्य अनुचित काम कर बैठता है तब जाति की पञ्चायत उसको दण्ड देती है। जाति की एक विशेषता यह है कि भिन्न-भिन्न जातियों में चाहे समानता हो या न हो परन्तु एक जाति के लोग आपस में छोटे-बड़े का भेद-भाव नहीं रखते और बिना किसी संकोच के मिलते-जुलते और खान-पान में सम्मिलित होते हैं।

[illegible] के आन्दोलन हुए हैं और मेल इत्यादि के [illegible] बहुत कुछ [illegible] हो गया है।

अँगरेज़ी शिक्षा का भी बहुत प्रभाव पड़ा है। आर्यसमाज ने भी जाति की रुकावटों के दूर करने का प्रयत्न किया है। समाज-संशोधकों का उद्देश यह होना चाहिए कि वे जाति के कड़े नियमों को ढीला करें और जाति का सङ्गठन ऐसा करें कि देश और समाज की उन्नति में कोई बाधा न हो।

सूत्रकाल में विद्या की उन्नति—सूत्रकाल में विद्या की बड़ी उन्नति हुई। वैद्यक, ज्योतिष, रेखागणित आदि विषयों पर ग्रन्थ रचे गये। पाणिनि का व्याकरण भी इसी समय बना। इसी काल में रामायण-महाभारत रचे गये। हिन्दू गणितशास्त्र में बड़े प्रवीण थे। उन्होंने दशमलव का आविष्कार किया। यज्ञ की वेदियों को बनाते-बनाते उन्हें वर्गक्षेत्र, वृत्त, त्रिभुज आदि का ज्ञान हो गया। दहाई पर गिनती करना भी उन्होंने निकाला। धर्मशास्त्र के बड़े-बड़े ग्रन्थ भी इसी काल में बने। परन्तु इन्होंने तत्त्वज्ञान की ओर अधिक ध्यान दिया और जीवन की अस्थिरता, ईश्वर का अस्तित्व, आत्मा, आदि कठिन विषयों पर बड़ा विचार किया। बरसों तक खोज करने के बाद जो इनकी समझ में आया वह इन्होंने पुस्तकों में लिखा जिनको दर्शनशास्त्र कहते हैं। ये दर्शन छः हैं—सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा और वेदान्त।

अध्याय ५

रामायण-महाभारत का समय।

रचना-काल—सूत्रकाल में ही रामायण और महाभारत नामक काव्यों की रचना हुई। [illegible] किस [illegible] समय का [illegible] नहीं है। [illegible]

ग्रन्थ ईसा से ५०० वर्ष पूर्व रचा गया होगा *। ऐसा अनुमान किया जाता है कि मूल-ग्रंथ में केवल उस महायुद्ध का वर्णन था जो कौरवों और पाण्डवों के बीच कुरुक्षेत्र के मैदान में हुआ था। महाभारत का अवशेष भाग ५०० ईसवी तक का बनाया हुआ मालूम होता है। वाल्मीकीय रामायण एक ही महा-पुरुष का बनाया हुआ है। इसका रचना-काल विद्वानों ने ५०० ई० पू० निश्चित किया है।

कोशल-जाति—पंजाब से चलकर आर्य लोग गंगा-यमुना के बीच के देश और उसके उत्तर में पश्चिम देश की तरफ़ गये। उनमें से कुछ दक्षिण की तरफ़ विन्ध्याचल और सतपुड़ा पहाड़ों की ओर चले गये और मध्यप्रदेश में रहने लगे। जो उत्तर की तरफ़ गये उनमें से एक क्षत्रिय जाति ने, जिसका नाम कोशल था, सरयू नदी के आस-पास अपना राज्य स्थापित करके अयोध्या को अपनी राजधानी बनाया। इसी वंश में एक राजा दशरथ हुए जिनके चार पुत्र थे—रामचन्द्र, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न। रामायण हिन्दुओं की धार्मिक पुस्तक है। उसको हिन्दू लोग बड़े आदर की दृष्टि से देखते हैं। उसमें श्रीरामचन्द्रजी और उनके भाइयों की कथा है।

रामायण की कथा—अवध-देश में, प्राचीन समय में, सरयू नदी के किनारे एक अयोध्या नाम का नगर था। इसमें राजा दशरथ नाम के एक बड़े प्रतापी राजा हुए। उनके तीन रानियाँ थीं—कौशल्या, सुमित्रा और कैकेयी। इन तीन रानियों से उनके चार पुत्र हुए। कौशिल्या से राम, सुमित्रा से लक्ष्मण और शत्रुघ्न, और कैकेयी से भरत। चारों

* यूरोपीय विद्वानों का मत है कि महाभारत का रचना-काल २०० ई० पू० से भी पहले मानना चाहिए।

भाइयों में राम बड़े बुद्धिमान, गुणवान, वीर तथा प्रतिभाशाली थे। उनका मिथिला* के राजा जनक की पुत्री सीता से विवाह हुआ था। राजा दशरथ अपने सब बेटों में श्रीरामचन्द्रजी ही को अधिक प्यार करते थे। जब वे वृद्ध हुए तब उन्होंने रामचन्द्र जी को युवराज बनाना चाहा। राज्याभिषेक की तैयारी हो गई परन्तु कैकेयी ने बड़ा विघ्न डाला। उसने राजा से कह कर श्रीरामजी को १४ वर्ष का वनवास कराया। उन्होंने पिता की आज्ञा का सादर पालन किया। सीताजी तथा लक्ष्मण भी वन को गये। श्रीरामचन्द्रजी ने उन्हें बहुत समझाया परन्तु उन्होंने न माना।

विन्ध्याचल पर्वत को पार कर दोनों भाई सीता सहित दक्षिण की तरफ़ गये। वहाँ कुछ समय तक वे दण्डक वन में रहे। यहाँ लंका का राजा रावण सीताजी को हर ले गया। इस पर लड़ाई छिड़ गई। परन्तु रावण राक्षसों का राजा था। उसको युद्ध में हराना कठिन था। श्रीरामचन्द्रजी ने किष्किन्धा के राजा सुग्रीव और अन्य वानरों की सहायता से लंका पर चढ़ाई की और रावण को पराजित किया। रावण युद्ध में मारा गया और उसके भाई विभीषण को लंका का राज्य मिला। इसके बाद रामचन्द्रजी, लक्ष्मणजी और सीता के साथ, अयोध्या लौट आये। राजा दशरथ उनके वन जाने के थोड़े दिन बाद ही मर गये थे। भरत जी राज्य का काम करते रहे। उन्होंने अब अपने पूज्य भाइयों का प्रेम से स्वागत किया। बड़ी धूम-धाम से श्रीरामजी का राज्याभिषेक हुआ। [illegible] बहुत काल तक सुख से राज्य किया। उनके राज्य में [illegible] लगा था कि हिन्दू-जाति अब तक राम-राज्य की प्रशंसा करती है।

*मिथिला का राज्य अवध के पूर्व में था। [illegible] तिरहुत कहते हैं

तेरह वर्ष समाप्त होने पर जब वे लौट कर घर आये और अपना राज्य माँगा तब दुर्योधन ने अभिमान-पूर्ण शब्दों में कहा कि बिना युद्ध के मैं एक सुई की नोक के बराबर भी जमीन नहीं दूँगा। अब दोनों ओर से युद्ध की तैयारी होने लगी। कुरुक्षेत्र की रणभूमि में, जो दिल्ली के उत्तर में थानेश्वर के समीप है, दोनों दल इकट्ठे हुए। हिमालय से लेकर दक्षिण तक के सब राजा अपनी अपनी सेनायें लेकर इस युद्ध में सम्मिलित हुए। अठारह दिन तक घमासान युद्ध हुआ। दोनों ओर के लाखों योधा और शूरवीर मारे गये। अन्त में कौरवों का सर्वनाश हो गया। केवल धृतराष्ट्र जीवित रहे। युधिष्ठिर हस्तिनापुर के राजा हुए। परन्तु कुछ समय के बाद वे अपने भाइयों और स्त्री-सहित हिमालय की ओर चले गये।

सामाजिक दशा—इन काव्यों के पढ़ने से हमें उस समय की हिन्दू-सभ्यता का पता लगता है। राज्यों का प्रबन्ध अच्छा था। राजा प्रजा की भलाई के लिए यथाशक्ति उद्योग करते और उसे सन्तुष्ट रखने का उपाय करते थे। समाज में वर्ण-व्यवस्था थी। सब लोग ब्राह्मणों का विशेष आदर करते थे। वर्णों में परस्पर ईर्ष्या अथवा द्वेष बिलकुल नहीं था। स्त्रियों का समाज में आदर था। उनमें शिक्षा भी काफ़ी थी। [illegible]

...[illegible] थे। परन्तु वे विश्वासघात नहीं करते थे और न किसी [illegible] कन्याओं को मारते थे। व्यवहार की सच्चाई इनमें थी। स्त्रियों को पर्दे की प्रथा नहीं थी। [illegible] [illegible] में जीवन व्यतीत करते थे।

अध्याय ६

बौद्ध-धर्म—जैन-धर्म

(ईसा से पूर्व [illegible] वर्ष से [illegible] वर्ष तक

बौद्धधर्म की उत्पत्ति—छठी शताब्दी ई० पू० के बाद उत्तरी भारत में सन्यासियों तथा धर्मोपदेशकों की संख्या बढ़ गई। इन्होंने जनता को धर्म की शिक्षा दी और ईश्वर-भक्ति पर विचार किया। इनमें से बहुत ने ब्राह्मणधर्म का विरोध किया और कर्मकाण्ड की भी कड़ी आलोचना की। धीरे धीरे ऐसे सन्यासियों और आचार्यों की संख्या अधिक हो गई जो ब्राह्मण-धर्म के अनुयायी नहीं थे। नये नये सम्प्रदाय बन गए जिन में से बौद्ध और जैन अधिक प्रसिद्ध हैं।

बौद्धधर्म के मूल प्रवर्तक सिद्धार्थ [illegible] कपिलवस्तु के [illegible]

और उन्होंने लौट चलने का आग्रह किया परन्तु बुद्धदेव ने न माना। फिर शुद्धोदन ने अपने मन्त्री के बेटे को भेजा कि बुद्धदेव को कपिलवस्तु लिवा लाओ। वे संन्यासी का वेष धारण किये कपिलवस्तु पहुँचे। उनके कुटुम्बी और अनेक स्त्री-पुरुष उन्हें देखने आये। सबने उपदेश सुना। पिता, स्त्री, पुत्र और सम्बन्धी लोग सब उनके शिष्य हो गये। इसके बाद वे अनेक स्थानों में घूमे। बहुत-से लोग उनके धर्म के अनुयायी हो गये। बुद्धदेव का शरीर अब दुर्बल हो गया था। अपने शिष्यों को बुला कर उन्होंने कहा—'हे भिक्षुगण! मेरा अन्तिम समय निकट आ गया है, तुम्हारा कर्तव्य है कि धर्म का पालन करो और संसार का दुःख दूर करने का उपाय करो'। कुशीनगर में, जो राप्ती और गण्डक के संगम पर नैपाल में है, ८० वर्ष की अवस्था में बुद्धजी ने शरीर छोड़ा। उनके सिद्धान्तों का प्रचार होता रहा। धीरे-धीरे बौद्धमत मगध, कोशल अर्थात् बिहार और संयुक्त-देश आदि देशों में फैल गया; और चीन, तिब्बत, ब्रह्मा, लङ्का आदि दूर देशों में भी उनके अनुयायी हो गये। इन देशों में बौद्धमत अब तक माना जाता है परन्तु हिन्दुस्तान में इस मत के माननेवालों की संख्या अधिक नहीं है।

बौद्धधर्म—बुद्धदेव का उपदेश ऐसा उत्तम था कि उसे ब्राह्मण-शूद्र, धनी-निर्धन, सब लोगों ने सुना और ग्रहण किया। उनका मूल सिद्धान्त यह था कि मनुष्य अपने कर्म के फल से नहीं बच सकता [illegible]

है। वे यह भी कहते थे कि इस आवागमन के बन्धन से मनुष्य तभी छूट सकता है जब उसका हृदय पवित्र हो जाय, वह काम, क्रोध और लोभ को छोड़ दे और सुख-दुख में समान आचरण करे। इसी बन्धन से मुक्त होने को महात्मा बुद्ध निर्वाण कहते थे।

बुद्धदेव का मूल सिद्धान्त था कि मोक्ष अथवा निर्वाण मनुष्य के कर्मों पर निर्भर है। मनुष्य का जन्म उसके लाभ के लिए हुआ है। इसलिए उसे स्वार्थपरता छोड़कर, इन्द्रियों को वश में करके संसार के सारे जीवों के साथ दया का बर्ताव करना चाहिए। बुद्धजी ने यह भी बताया कि जाति कोई चीज़ नहीं है। मनुष्य किसी जाति का क्यों न हो निर्वाण प्राप्त कर सकता है। अपने शिष्यों को बुद्धजी ने शिक्षा दी कि मनुष्य को मन, वचन और कर्म से शुद्ध होना चाहिए। किसी को कष्ट न पहुँचाना चाहिए, झूठ न बोलना चाहिए और ईर्ष्या, द्वेष, चोरी, व्यभिचार आदि पापों से बचना चाहिए। सत्य और अहिंसा के मार्ग पर चलना किसी के लिए असम्भव नहीं है। बुद्ध के उपदेश का लोगों पर बड़ा प्रभाव पड़ा। इसके दो कारण थे। एक तो यह कि उन्होंने अपना उपदेश ऐसी सरल भाषा में दिया जिसे सब लोग समझ सकते थे। दूसरे एक विशेष बात उन्होंने यह बताई कि जाति के कारण मोक्ष प्राप्त करने में कोई रुकावट नहीं हो सकती। इसी कारण छोटी जाति के लोगों पर उनके उपदेश का बड़ा प्रभाव पड़ा।

महात्मा बुद्ध संन्यास पर अधिक [illegible] देते थे। उनका कहना था कि [illegible] [illegible] निर्वाण प्राप्त नहीं [illegible] [illegible]

अपना मठों में रहने लगे। इनका अधिकांश समय लोक-सेवा करने और योगादिक क्रियायें करने में व्यतीत होता था। बड़े बड़े राजा महाराजा इनका उपदेश सुनने आते और कुछ समय तक इन विहारों में ठहरते थे।

बुद्धजी की मृत्यु के पीछे उनके शिष्यों ने उनके उपदेशों का संग्रह किया और उनके तीन भाग किये जिन्हें त्रिपिटक कहते हैं। ज्यों-ज्यों बौद्धमत के अनुयायियों की संख्या बढ़ती गई, मतभेद भी उत्पन्न होता गया। इनका निर्णय करने के लिए सभायें हुईं जिनमें नैतिक सिद्धान्तों का निर्णय हुआ।

बौद्धधर्म की अवनति—छठी शताब्दी ईसवी के बाद बौद्धधर्म की अवनति होने लगी। इसका मुख्य कारण यह था कि हिन्दू-धर्म की शक्ति कम नहीं हुई थी। नवीं शताब्दी ईसवी में ब्राह्मण-धर्म की फिर उन्नति हुई। शंकराचार्य ने बौद्धधर्म का घोर विरोध किया जिससे उसका प्रभाव बहुत कम हो गया। बौद्ध-मत में जो दोष पैदा हो गये थे, उनके आचार्यों का जीवन पहले के समान पवित्र और सात्विक नहीं रहा था। ब्राह्मणों ने बौद्धमत का कड़ा विरोध किया जिसका नतीजा यह हुआ कि वह भारतवर्ष से लोप हो गया।

जैनधर्म—जैनमत बौद्धमत से प्राचीन है। इसकी नींव [illegible]

वंश के एक क्षत्रिय राजा के पुत्र थे। तीस वर्ष की अवस्था में उन्होंने संसार छोड़कर संन्यास ले लिया और अपने धर्म का प्रचार करना आरम्भ किया*। वे ४० वर्ष तक विहार के उत्तर-दक्षिण के प्रान्तों में भ्रमण करते रहे। बहुत-से लोग महावीर स्वामी के शिष्य हो गये और उनके सिद्धान्तों को मानने लगे। इस मत का प्रचार बौद्धमत से कम हुआ पर इसके अनुयायी अब तक हिन्दुस्तान में पाये जाते हैं। महात्मा बुद्ध कहते थे कि सत्कर्म करने, अपनी वासनाओं को रोकने और जीवों के साथ दया का बर्ताव करने से निर्वाण प्राप्त हो सकता है। महावीर का भी उपदेश था कि तप और दया से मोक्ष मिल सकता है। वे ईश्वर के अस्तित्व को नहीं मानते थे। उनका कहना था कि जीव अनेक हैं और प्रत्येक जीव कर्म के बन्धन से मुक्त होकर दैवी गुणों को प्राप्त कर सकता है। वे अहिंसा पर अधिक ज़ोर देते थे और कर्म को भी मानते थे। महावीर के सिद्धान्त के मानने वाले जैन कहलाते हैं। जैन शब्द "जिन" से निकला है जिसका अर्थ है इन्द्रियों को वश में करनेवाला। जैन भी कर्म को मानते हैं और कहते हैं कि मृत्यु के पीछे मनुष्य का आत्मा योनियों में जन्म लेता है। जैनों के दो सम्प्रदाय हैं। एक श्वेताम्बर जो बहुधा सफ़ेद वस्त्र धारण करते हैं और दूसरे दिगम्बर जो नग्न प्रतिमा की पूजा करते हैं।

जैन लोग बहुधा धनी होते हैं। हिन्दुस्तान के बड़े शहरों में उनके बनाये हुए सुन्दर-सुन्दर मन्दिर हैं जिनमें वे अपने तीर्थंकरों की पूजा करते हैं। गुजरात में जैनों के अत्यन्त सुन्दर

[illegible]

मन्दिर बने हुए हैं जिनको देखने के लिए प्रतिवर्ष सैकड़ों यात्री दूर दूर से जाते हैं। इनके मन्दिरों में तीर्थङ्करों की पूजा होती है और कहीं-कहीं बड़ी मूर्त्तियाँ होती हैं। दक्षिण में कनाड़ा देश में कार्कल नामक स्थान में जैनियों की एक विशाल मूर्त्ति है जिसकी ऊँचाई ४२ फ़ुट है। जैन लोग जीवों पर बड़ी दया करते हैं। वे छोटे-छोटे जीवों को भी मारने में पाप समझते हैं। वे रात में भोजन नहीं करते और पानी छान कर पीते हैं जिससे जीवहत्या न हो। ये लोग दान भी बहुत करते हैं। इन्होंने मनुष्यों की चिकित्सा और जानवरों की रक्षा के लिए अपने धन से अनेक औषधालय खुलवा दिये हैं। जैन लोगों की धारणा है कि उनका मत बहुत प्राचीन है और इस पर यूरोपीय विद्वान भी सहमत हैं।

जैन हिन्दुस्तान के सब प्रान्तों में पाये जाते हैं। उनकी संख्या लगभग १५ लाख है। हिन्दुस्तान के बाहर जैनमत का प्रचार नहीं हुआ और यहाँ भी पौराणिक हिन्दू-धर्म की उन्नति के कारण उसके अनुयायियों की संख्या बढ़ने नहीं पाई।

अध्याय ७

प्राचीन भारत की रियासतें

ईसा के ६०० वर्ष पहले आर्यावर्त में बहुत-सी छोटी-छोटी रियासतें थीं। उनमें एक रियासत गान्धार (कंधार) थी जिसकी राजधानी तक्षशिला (टैक्सिला) थी। यह पेशावर के आसपास थी। दूसरी अवन्तिका (मालवा), जिसकी राजधानी उज्जैन थी, और तीसरी कोशल (उत्तरी अवध), जिसकी राजधानी सरस्वती थी। कोशल ने पूर्व में काशी राज्य को और उत्तर में शाक्य-जाति का प्रदेश लेकर नैपाल की तराई तक अपना राज्य फैला लिया था।

चौथी रियासत मगध की थी। आरम्भ में मगध का विस्तार आधुनिक पटना तथा गया के जिलों के बरा[illegible] था। परन्तु जब बिम्बिसार मगध का राजा हुआ तब रा[illegible] का विस्तार अधिक हो गया। उसके राजत्व-काल में [illegible] देश भी मगध-राज्य में सम्मिलित हो गया। मगध की रा[illegible]धानी इस समय राजगृह नामक नगर था जिसकी नींव बि[illegible]सार ने डाली थी। बिम्बिसार के बाद उसका बेटा अज[illegible]शत्रु गद्दी पर बैठा। पाटलीपुत्र (पटना) नगर की नींव [illegible] के समय में पड़ी। उसने कोशल-राज्य पर चढ़ाई की [illegible] वहाँ के राजा को युद्ध में पराजित किया। कुछ समय के ब[illegible] कोशल-नरेश ने भी अजातशत्रु को युद्ध में हराया। इसी प्रक[illegible] बहुत काल तक परस्पर युद्ध होता रहा। अन्त में कोशल-रा[illegible] की हार हुई और वह मगध-राज्य में मिला लिया गया।

बिम्बिसार और अजातशत्रु शिशुनाग-वंश में से थे। इ[illegible] वंश के अन्तिम राजा ने एक शूद्र स्त्री से विवाह किया। उस[illegible] बेटे महापद्मनन्द ने नन्दवंश की स्थापना की। नन्दवंश [illegible] राजा शक्तिशाली थे। कहते हैं कि सिकन्दर के आक्रमण [illegible] समय मगध-नरेश के पास बहुत बड़ी सेना थी। नन्द-वंश [illegible] अन्तिम राजा को उसके भाई चन्द्रगुप्त ने जो एक शूद्र [illegible] के गर्भ से उत्पन्न हुआ था गद्दी से उतार दिया और राज्य [illegible] अपना अधिकार स्थापित कर लिया।

पूर्व की तरफ वह देश था जिसे आज-कल बंगाल कह[illegible] हैं। इसका पश्चिमी भाग अङ्ग कहलाता था और पूर्वी बङ्ग [illegible] यहीं उड़ीसा का राज्य था जिसे कलिङ्ग कहते थे। सौरा[illegible] वाली गुजरात का भी [illegible] था। दक्षिण में अन्ध्र[illegible] [illegible] इसके [illegible]

[illegible]

और प्राचीन राज्य थे—पाण्ड्य, चोल, चेर। चोल-राज्य पूर्वीघाट की तरफ़ था। उनकी राजधानी काञ्ची अथवा काञ्जीवरम थी। चेर राज्य पश्चिमोघाट की तरफ़ कर्नाटक देश में था। पाण्ड्य सुदूर दक्षिण में था। उनकी राजधानी मदूरा थी। इन राज्यों में सदा परस्पर लड़ाई रहती थी। बहुतसे विद्वानों का मत है कि इन राज्यों की नींव उत्तरी भारत के आर्यों ने डाली थी परन्तु दक्षिण के विद्वान कहते हैं कि वहाँ पहले ही से द्रविड़ राजा राज्य करते थे।

ईसा के पूर्व छठी शताब्दी में फ़ारस के बादशाह डेरीअस ने पञ्जाब के उत्तरी भाग को जीतकर अपने राज्य का एक सूबा बना लिया। फ़ारस के राज्य में उस समय १९ सूबे और थे और यह सूबा बहुत अच्छे सूबों में से था। हर साल बहुतसा कर फ़ारस को भेजा जाता था।

प्राचीन प्रजातंत्र राज्य—बहुत लोग समझते हैं कि प्राचीन काल में भारत में प्रजातन्त्र राज्यों का अभाव था। ऐसा समझना बड़ी भूल है। भारत के लोग प्रजातन्त्र राज्यों के नियमों को जानते थे। ऐसे राज्यों का महाभारत और बौद्ध ग्रन्थों में वर्णन है। यूनानियों के लेखों से भी पता लगता है कि सिकन्दर के आक्रमण के समय भी भारत में ऐसे राज्य मौजूद थे। हिन्दुस्तान में सबसे प्रसिद्ध प्रजातन्त्र राज्य शाक्य, लिच्छवि, विदेह इत्यादि के

[illegible]

क्षत्रियों के थे। शाक्यों की राजधानी कपिल-वस्तु थी। गौतमबुद्ध इन्हीं क्षत्रियों में से थे। लिच्छवि जाति के क्षत्रियों की राजधानी वैशाली नगर था जो बिहार में मुज़फ़्फ़रपुर नामक ज़िले में है। इन क्षत्रियों ने गुप्त-साम्राज्य के स्थापित करने में बड़ी मदद की थी। गुप्तवंश के प्रथम राजा चन्द्रगुप्त ने एक लिच्छवि क्षत्रिय की पुत्री के साथ विवाह किया था। विदेहों की राजधानी मिथिला थी। राज्य का प्रबन्ध एक सभा द्वारा होता था जिसमें सब लोग इकट्ठे होते थे। हर एक बात का निर्णय बहस के बाद होता था। शासन-प्रबन्ध का काम बड़े बूढ़ों के सुपुर्द किया जाता था। इन्हीं वृद्ध पुरुषों में से एक राष्ट्रपति अथवा प्रेसीडेंट चुना जाता था।

चौथी शताब्दी ई० पू० में भी सिकन्दर के आक्रमण के समय उत्तरी भारत में ऐसे राज्य मौजूद थे। मेगेस्थनीज़ ऐसे राज्यों का वर्णन करता है। जहाँ आजकल लाहौर और अमृतसर ज़िले हैं वहाँ कठ जाति के लोग रहते थे। ये बड़े बलवान् थे। इन्होंने एक बार पोरस को भी लड़ाई में हराया था। इस जाति के स्त्री पुरुष अपनी इच्छा से स्वतंत्रतापूर्वक विवाह करते थे और दहेज़ में रुपया नहीं लेते थे। जब सिकन्दर पंजाब से लौटा तब उसे क्षुद्रक, मालव, शिवि आदि जातियों के प्रजातन्त्र राज्यों का सामना करना पड़ा। एक यूनानी लेखक कहता है कि इन राज्यों की सेना कुल मिला कर एक लाख थी। उनकी ऐसी ताक़त को देखकर सिकन्दर के साथी भी घबरा गये। इसी कारण उन्होंने सन्धि कर ली।

इन राज्यों के लोग हृष्ट पुष्ट और बलवान थे। किसी का

[illegible]

क्षत्रियों के थे। शाक्यों की राजधानी कपिल-वस्तु थी। गौतमबुद्ध इन्हीं क्षत्रियों में से थे। लिच्छवि जाति के क्षत्रियों की राजधानी वैसाली नगर था जो बिहार में मुज़फ्फरपुर नामक ज़िले में है। इन क्षत्रियों ने गुप्त-साम्राज्य के स्थापित करने में बड़ी मदद की थी। गुप्तवंश के प्रथम राजा चन्द्रगुप्त ने एक लिच्छवि क्षत्रिय की पुत्री के साथ विवाह किया था। विदेहों की राजधानी मिथिला थी। राज्य का प्रबन्ध एक सभा द्वारा होता था जिसमें सब लोग इकट्ठे होते थे। हर एक बात का निर्णय बहस के बाद होता था। शासन-प्रबन्ध का काम बड़े बूढ़ों के सुपुर्द किया जाता था। इन्हीं वृद्ध पुरुषों में से एक राष्ट्रपति अथवा प्रेसीडेंट चुना जाता था।

चौथी शताब्दी ई० पू० में भी सिकन्दर के आक्रमण के समय उत्तरी भारत में ऐसे राज्य मौजूद थे। मेगेस्थनीज़ ऐसे राज्यों का वर्णन करता है। जहाँ आजकल लाहौर और अमृतसर ज़िले हैं वहाँ कठ जाति के लोग रहते थे। ये बड़े बलवान थे। इन्होंने एक बार पोरस को भी लड़ाई में हराया था। इस जाति के स्त्री पुरुष अपनी इच्छा से स्वतंत्रतापूर्वक विवाह करते थे और दहेज़ में रुपया नहीं लेते थे। जब सिकन्दर पंजाब से लौटा तब उसे क्षुद्रक, मालव, शिवि आदि जातियों के प्रजातन्त्र राज्यों का सामना करना पड़ा। एक यूनानी लेखक कहता है कि इन राज्यों की सेना कुल मिला कर एक लाख थी। उनकी ऐसी ताक़त को देखकर सिकन्दर के साथी भी चकरा गये। इसी कारण उन्हों ने सन्धि कर ली।

इन राज्यों के लोग हृष्ट पुष्ट और बलवान थे। शिक्षा का प्रचार सब जगह था [illegible] और अन्य कला-

कौशल के लिए प्रसिद्ध थे। वे युद्ध-विद्या में भी प्रवीण थे। महाभारत युद्ध के समय से गुप्त-साम्राज्य के स्थापित होने तक प्रजातंत्र-राज्यों का बराबर लेख मिलता है। स्कन्दगुप्त के समय में जब हूणों के आक्रमण हुए तब इन राज्यों का भी धीरे धीरे लोप हो गया।

अध्याय ८

हिन्दुस्तान पर यूनानियों का आक्रमण

सिकन्दर का आक्रमण—यूनान यूरोप के दक्षिण में एक छोटा-सा प्रायद्वीप है। यहाँ के बादशाह सिकन्दर महान् ने फ़ारस पर अधिकार जमाने के बाद हिन्दुस्तान पर हमला किया। हिन्दूकुश को पार करके उसने काबुल के क़िले को जीत लिया और वहाँ से चल कर स्वात और बजौर की घाटी के जङ्गली निवासियों को पराजित किया। सन् ३२७ ई० पू० में वह सिन्धु नदी के किनारे आ पहुँचा और ओहिन्द नामक स्थान पर एक पुल बना कर उसने नदी को पार किया। वहाँ से वह टैक्सिला (तक्षशिला) की ओर बढ़ा जो उस समय एक बहुत धनाढ्य और विशाल नगर था। टैक्सिला के राजा ने सिकन्दर का बड़ा सत्कार किया और सहायता के लिए कुछ आदमी भी उनको दिये। टैक्सिला उस समय शिक्षा का केन्द्र था। खोज करने से पता लगा है कि यहाँ एक बड़ा विश्व-विद्यालय था जहाँ दूर-दूर से विद्यार्थी विद्या पढ़ने आते थे। यहा सिकन्दर कुछ समय तक ठहरा और उनकी सेना ने भी आराम किया। यहाँ से

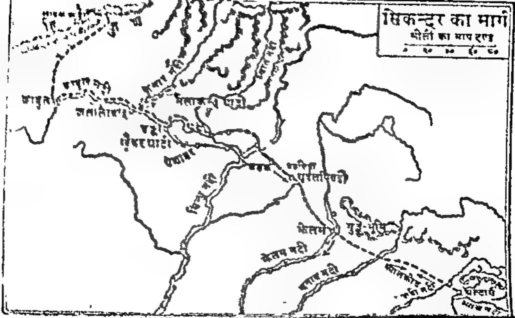

सिकन्दर का मार्ग
मीलों का माप दण्ड
काबुल
सिन्धु नदी
झेलम

वह पूर्व की ओर पोरस पर, जो झेलम और चिनाव के बीच के देश का राजा था, चढ़ाई करने के लिए आगे बढ़ा।

पोरस पर चढ़ाई—शत्रु को आता हुआ देख कर पोरस भी अपनी सेना लेकर युद्ध के लिए चला। इतिहास-लेखकों का अनुमान है कि पोरस की सेना में ३०,००० पैदल, ४,००० सवार, ३०० रथ और २०० हाथी थे। घमासान लड़ाई के बाद पोरस की हार हुई। हाथी मारे गये और रथ इत्यादि भी नष्ट हो गये। बहुत-से मनुष्य घायल हुए और बहुत-से मारे गये। पोरस स्वयं बड़ी वीरता से लड़ा। उनके नौ घाव लगे। परन्तु अन्त में उसको शत्रु ने पकड़ लिया। पोरस जब सिकन्दर के सामने लाया गया तब उसने कहा, मेरे साथ वही बर्ताव करो जो एक राजा को दूसरे राजा के साथ करना चाहिए। इस बात को सुनकर सिकन्दर बड़ा प्रसन्न हुआ और उसने वैसा ही बर्ताव किया। सिकन्दर की जीत का कारण उसकी वीरता थी। पोरस के हाथी युद्ध के समय बिगड़ गये और कोई उनको सँभाल न सका। पैदल सिपाही भी अपनी वीरता न दिखा सके।

सिकन्दर का लौटना—पोरस पर विजय पाने के बाद सिकन्दर ने मगध पर हमला करने का विचार किया। परन्तु उसकी सेना थक गई थी, इस कारण वह अपने सेनापतियों को भिन्न-भिन्न स्थानों में छोड़ कर अपने देश की ओर लौटा, और बेबीलोन नगर में पहुँच कर मर गया। उसके सेनाध्यक्षों ने यहाँ काम जारी रक्खा और कई सूबों को जीत लिया।

सिकन्दर के हमले से एक बड़ा लाभ यह हुआ कि संसार की दो बड़ी जातियों (हिन्दुओं और यूनानियों) में मेल

हो गया। एक जाति दूसरी जाति के विचारों और सभ्यता से लाभ उठाने लगी। यूनान के लोगों पर हिन्दुस्तान की विद्या का बहुत प्रभाव पड़ा और वहाँ के विद्वानों ने यहाँ से बहुत-सी बातें सीखीं। परन्तु यह समझना भूल होगी कि हिन्दुस्तान पर सिकन्दर के हमले का बहुत गहरा प्रभाव पड़ा। यहाँ तो हिन्दू-समाज ज्यों का त्यों रहा। जाति की संस्था पर कुछ भी प्रभाव न पड़ा और युद्ध करने की रीति-नीति भी वैसी ही बनी रही। परन्तु इसमें सन्देह नहीं कि हिन्दुस्तान की बहुत-सी बातें यूनानियों के द्वारा यूरोप में पहुँचीं और पश्चिमी सभ्यता का अङ्ग हो गईं।

अध्याय ६

मौर्य वंश

चन्द्रगुप्त—सिकन्दर के मरने के बाद चन्द्रगुप्त ने उसके यूनानी अफसरों को हराकर हिन्दुस्तान के बाहर निकाल दिया। मगध के नन्द राजा को अपने अधीन करके यह उत्तरी हिन्दुस्तान का राजा बन बैठा और ईसा के ३२१ या ३२२ वर्ष पूर्व उसने पाटलिपुत्र की गद्दी पर अपना अधिकार स्थापित कर लिया। चन्द्रगुप्त की माता का नाम मुरा था। वह एक शूद्र की लड़की थी। मुरा के नाम पर ही इस वंश का नाम मौर्य पड़ा। सिकन्दर के मरने के बाद उसके सरदारों में [illegible] आपस में [illegible] आरम्भ हो गई। सिकन्दर का सबसे बड़ा सरदार सिल्यूकस था। उसने अपना राज्य हिन्दूकुश पर्वत के उत्तर में सिकन्दर के नाम से स्थापित किया और [illegible]

हिन्दुस्तान पर धावा किया। परन्तु चन्द्रगुप्त से हार कर उसे सन्धि करनी पड़ी। सिल्यूकस ने अपनी कन्या का विवाह चन्द्रगुप्त से करके काबुल, हिरात और कन्दहार उसको दहेज़ में दे दिये। इस प्रकार चन्द्रगुप्त का राज्य हिन्दूकुश तक फैल गया। सिल्यूकस ने अपना एक दूत चन्द्रगुप्त के दरबार में छोड़ दिया। इसका नाम मेगेस्थनीज़ था।

मेगेस्थनीज़—मेगेस्थनीज़ ने हिन्दुस्तान के शासन-प्रबन्ध का हाल और बहुत-सी बातें लिखी हैं। वह लिखता है कि चन्द्रगुप्त के दरबार में बहुत उत्तम और बहुमूल्य सुख का सामान मौजूद था। बादशाह के नीचे राजधानी के प्रबन्ध के लिए ६ छोटी छोटी कमेटियाँ थीं। एक कमेटी दस्तकारों का हिसाब रखती थी। दूसरी टैक्स वाली चुंगी वसूल करती थी। तीसरी दस्तकारी का प्रबन्ध करती थी। चौथी विदेशी लोगों की देख-भाल करती थी। पाँचवीं व्यापार का प्रबन्ध करती, नाप-तोल की जाँच करती और बाट इत्यादि को भी देखती थी। छठी दस्तकारों की बनाई हुई चीज़ों की बिक्री का प्रबन्ध करती थी। दूर के सूबों में राजा की ओर से सूबेदार नियत थे। लोगों से पैदावार का ¼ भाग सर्कार मालगुज़ारी के लिया जाता था। खेती की उन्नति के लिए नहरें और सड़कें भी मौजूद थीं। इनके प्रबन्ध के लिए एक अलग महकमा था। यात्रियों की सुविधा के लिए सड़कों पर [illegible]

किसी सरकारी कारीगर को किसी तरह की हानि ·ऽ तो उसको फाँसी का दण्ड मिलता था।

सामाजिक दशा—यूनानी लोगों ने, जो सिकन्दर साथ भारत में आये थे, उस समय का हाल लिखा है। · और शिव की पूजा सारे देश में होती थी। गंगा को पवित्र मानते थे। सती की प्रथा प्रचलित थी। लोग सत्यवादी थे और अपनी बात के पक्के थे। ब्राह्मण उच्च वर्णों के लोग मांस नहीं खाते थे। पुस्तकें एक · के कपड़े पर लिखी जाती थीं। लोग शान्ति-प्रिय परिश्रमी थे और मितव्ययिता को पसन्द करते थे। घ· ताले नहीं लगते थे। चोरी बहुत कम होती थी। विद्वानों का आदर करते थे। जब कोई विद्वान् नया आ· ष्कार करता था तब वह आजन्म करों से मुक्त कर · जाता था।

बिन्दुसार—चन्द्रगुप्त की मृत्यु के बाद सन् २९७ पू० के लगभग उसका बेटा बिन्दुसार गद्दी पर बैठा। · भी अपने पिता की तरह पूर्ण रीति से देशों को जीत अपने अधीन रक्खा।

अशोक (२७२—२३२ ई० पूर्व)—बिन्दुसार के उसका छोटा पुत्र अशोकवर्धन अर्थात् अशोक, जो टैक्सि· का सूबेदार था और फिर उज्जैन का सूबेदार नियत कि· गया था, गद्दी पर बैठा। अशोक के राज्याभिषेक के विषय बहुत-सी झूठी कहानियाँ प्रचलित हैं। कोई-कोई कहते कि राज्य लेने के लिए उसने अपने अस्सी या नब्बे भाइयों मार डाला। इसमें सन्देह नहीं कि ये सब बातें कपोलकल्पि· हैं। यह हो सकता है कि अशोक का अपने बड़े भा· मुक

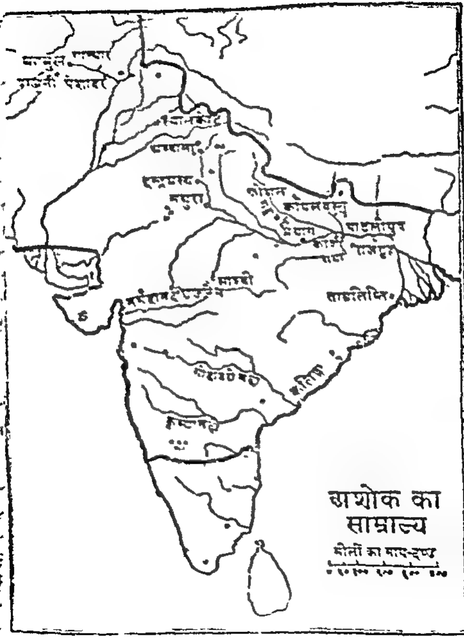

अशोक का साम्राज्य

में थोड़ा-बहुत लड़ाई करनी पड़ी हो। अशोक ईसा के २ [illegible] वर्ष पूर्व गद्दी पर बैठा। उस समय मौर्य-राज्य का वि[illegible] वर्तमान मद्रास हाते तक था।

कलिङ्ग-विजय—ईसा के २६१ वर्ष पूर्व अशोक कलिङ्ग अर्थात् उड़ीसा देश पर हमला किया और बड़ी लड़ाई के बाद उसे जीत लिया, परन्तु कलिङ्ग की लड़ाई उस पर बड़ा प्रभाव पड़ा। इस युद्ध में लगभग डेढ़ ल[illegible] आदमी क़ैद हुए और एक लाख मारे गये। अशोक ने [illegible] पश्चात्ताप किया और प्रतिज्ञा की कि आयन्दा मैं कभी यु[illegible] करूँगा। यह राजा बौद्धमत का माननेवाला था। इ[illegible] राज्य सारे हिन्दुस्तान में था। राज्य की सीमा उत्तर में हि[illegible] कुश पर्वत तक थी जिसमें काश्मीर, नैपाल और अफ़ग़ानि[illegible] भी शामिल थे। पश्चिमी सूबे बिलोचिस्तान, सिन्ध, गु[illegible] और मालवा थे। पूर्वी सीमा कलिङ्ग और बंगाल तक [illegible] और दक्षिण की ओर उसका साम्राज्य मैसूर तक [illegible] रहा था। कृष्णा नदी के दक्षिण में द्रविड़ों के स्वतन्त्र [illegible] चेरा, चोल और पाण्ड्य मौजूद थे। परन्तु आन्ध्र देश [illegible] के राज्य में शामिल था।

धर्म-प्रचार—राजसिंहासन पर बैठने के १६ [illegible] वर्ष बाद अशोक बौद्धमत का अनुयायी हो गया। उस[illegible] सम्यक् साधु के उपदेश का उस पर बहुत प्रभाव पड़ा। बौ[illegible] मत के नियमों का वह पूर्ण रीति से अनुशीलन करता था [illegible] उसने प्रजा के लाभ पर धार्मिक आज्ञा धर्म-सम्ब[illegible] नियम पत्थर [illegible] पर खुदवा कर [illegible]। इनमें से [illegible]

[illegible]

ऐं और धर्मशालाएँ बनवाईं और औषधालय तथा अनाथा-
ग भी खुलवाये। उसने दीन मनुष्यों की सहायता का भी
बन्ध किया। प्रजा को वह सदा उपदेश करता था कि धर्म
े रास्ते पर चलना और अहिंसा-व्रत का पालन करना प्रत्येक
नुष्य का मुख्य कर्तव्य है। वह जीव-मात्र पर दया करता
ा। जानवरों के भी सुख का प्रबन्ध उसके राज्य में किया
या था। बौद्धमत के प्रचार के लिए अशोक ने बहुत प्रयत्न
किया। बौद्धमत के माननेवाले पण्डितों की सभाएँ हुईं
जनमें धर्म का प्रचार करने के उपाय सोचे गये। ईसा से
२४२ वर्ष पहले धर्म के मूल-सिद्धान्तों का निर्णय करने के
लेए अशोक ने पाटलिपुत्र में एक बड़ी सभा की जिसमें
लगभग एक सहस्र विद्वान् और महात्मा उपस्थित थे। बौद्ध-
धर्म के सिद्धान्त और उपदेश पालीभाषा में लिखे गये और
बहुत-से भिक्षु दूर-दूर के देशों में धर्म का प्रचार करने के लिए
भेजे गये। अशोक ने अपने पण्डितों और उपदेशकों को चीन,
जापान, तिब्बत, लंका, यूरोप और अफ़्रीका आदि दूर-दूर
देशों में धर्म्म का प्रचार करने के लिए भेजा। एक बार उसने
अपने लड़के और लड़की को भी इसी काम के लिए लंका
भेजा।

शासन-प्रबन्ध—अशोक बड़ा परिश्रमी था। उसने
अपने दादा की नीति के अनुसार काम किया। उसका यह
नियम था कि वह सदा लोगों की प्रार्थना सुनने को तैयार
रहता था। सरकारी नौकरों को हुक्म था कि प्रजा के काम
की उसे शीघ्र ख़बर दें। प्रजा के हित की चिन्ता उसको सदा
रहती थी और प्रजा के सुख के लिए वह सब-तरह उपाय
[illegible]
[illegible]

उन्नति हुई। शिक्षा का भी अच्छा प्रचार हुआ। बौद्धमत के विहारों में पण्डित लोग शिक्षा देते थे। अनेक शिला-स्तम्भों पर जो लेख खुदे हुए हैं उनसे प्रकट होता है कि उस समय बहुत-से लोग पढ़ना-लिखना जानते थे।

अशोक ने बहुत-से कुएँ खुदवाये और छायादार वृक्ष लगवाये। मनुष्यों और जानवरों की चिकित्सा के लिए शफ़ाख़ाने खोले। उसने पशुओं का वध करना बिलकुल बन्द करा दिया। राज्य के बड़े-बड़े हाकिमों को उसकी आज्ञा थी कि वे धर्म का प्रचार करें। अशोक ने बहुत-सी इमारतें बनवाईं, तालाब खुदवाये और नहरें निकालीं जिनसे प्रजा को बड़ा लाभ हुआ।

बौद्धधर्म के साहित्य में अशोक पियदसी अर्थात् प्रियदर्शी के नाम से प्रसिद्ध है। वास्तव में अशोक ऐसा राजा फिर भारतवर्ष में नहीं हुआ। उसने जगह-जगह स्तम्भों और शिलाओं पर जो लेख लिखवाये थे वे अब तक मौजूद हैं। इनसे पता लगता है कि उसके साम्राज्य का विस्तार कहाँ तक था। ईसा से २३२ वर्ष पूर्व अशोक का देहान्त होगया।

अध्याय १०

शक-जाति का प्रवेश और आन्ध्र-वंश

अशोक की मृत्यु के बाद मौर्य-साम्राज्य छिन्न-भिन्न हो गया। इस वंश के अन्तिम राजा बृहद्रथ को उसके सेनापति पुष्यमित्र ने १८४ ई० पू० में मार डाला। इसके बाद कन्व और आन्ध्र वंशों के राजाओं ने राज्य किया परन्तु उनका

आधिपत्य अधिक काल तक न रहा। आन्ध्र-साम्राज्य में भारत के सब सभ्य देश शामिल थे। दक्षिण के आन्ध्रवंशीय राजा बौद्ध धर्म के अनुयायी थे। अन्त में आन्ध्रवंशीय राजाओं को यूनानियों और सिदियनों ने निकाल दिया। यूनानियों ने हिन्दुस्तान पर कई हमले किये। पहला हमला यूनानी राजा डिमिट्रीअस ने पञ्जाब पर किया और उसे जीत लिया। बैक्ट्रिया और अफ़ग़ानिस्तान की फ़ौजें बराबर हिन्दुस्तान में आती रहीं और पञ्जाब में लूट-मार करती रहीं। इनमें से मैनेन्डर नामी राजा ने सारे उत्तरी भारत को अपने अधीन कर लिया। परन्तु थोड़े ही दिन बाद यूनानियों को सिदियन लोगों ने बैक्ट्रिया से निकाल दिया। ये लोग मध्य एशिया से आये और इन्होंने कई बार हिन्दुस्तान पर हमले किये। यूनानी, जो पञ्जाब में बस गये थे, हिन्दुओं में मिल गये और हिन्दू धर्म को मानने लगे। पहला शक्तिशाली सिदियन राजा मोअा था जिसके राज्य में पञ्जाब, अफ़ग़ानिस्तान आदि देश शामिल थे और जिसके हाकिम टैक्सिला और मथुरा तक शासन करते थे। सिदियन लोगों के कई फ़िरक़े थे। इनमें से एक का नाम यूची था। यूची जाति ने बैक्ट्रिया में अपना राज्य स्थापित कर लिया।

धीरे-धीरे यूची जाति की एक शाखा ने, जिसका नाम कुशन था, अफ़ग़ानिस्तान और पञ्जाब पर अपना अधिकार स्थापित कर लिया।

अध्याय ११

कुशन-वंश

कुशन-वंश में कनिष्क सबसे प्रतापी राजा हुआ। यह सन् ७८ ई० में पुरुषपुर में, जिसे आजकल पेशावर कहते हैं, गद्दी पर बैठा। उसने मगध, मालवा आदि देशों को जीता और हाकिम नियत किये। उसके समय में कुशन राज्य की सीमा बहुत बढ़ गई। काश्मीर को उसने अपने राज्य में मिला लिया और चीनी तुर्किस्तान पर भी अपना अधिकार जमाया। इसके बाद जब उसके पास लड़ाई का सामान काफ़ी हो गया तब उसने खुतन, काशगर, यारकन्द आदि देशों पर चढ़ाई की और उनको जीत लिया। दक्षिण में उसका राज्य विन्ध्याचल पहाड़ तक फैल गया। दूर-दूर के राजा लोग उसके अधीन हो गये। गुजरात और महाराष्ट्र भी उसके राज्य में सम्मिलित थे।

कनिष्क बौद्धमत को मानता था। उसने भी अशोक की तरह बौद्ध धर्म के अनुयायियों की सभा की और धर्म के सिद्धान्तों का निर्णय कराया। पेशावर के बाहर कनिष्क ने एक बुद्धदेव का मन्दिर तैयार कराया और उसके एक हाकिम ने तक्षशिला में एक विहार बनवाया। उसने अपने राज्याभिषेक के दिन से एक नया संवत् चलाया जिसे शाक संवत् कहते हैं।

कनिष्क के दो बेटे थे—वासिष्क और हुविष्क। वासिष्क कनिष्क से पहले ही मर गया था। इसलिए कनिष्क की मृत्यु के बाद हुविष्क राजगद्दी पर बैठा। उसने १३८ ईसवी तक राज्य किया। उसके बाद वासुदेव प्रथम गद्दी पर बैठा। उसने शैव मत स्वीकार कर लिया। उसके राजत्वकाल

में कुशान-साम्राज्य की अवनति होने लगी। भारतवर्ष में बड़े बड़े सत्रप और सूबेदार स्वतन्त्र हो गये। कनिष्क के समय में नागार्जुन नामी एक बड़ा वैद्य और तत्त्ववेत्ता हुआ। उसने सुश्रुत नामक वैद्यक के ग्रन्थ को फिर से प्रकाशित किया। कुशान सम्राटों के समय में भारतीय व्यापारी दूर-दूर के देशों के साथ तिजारत करते थे। भड़ौंच का बन्दरगाह प्रसिद्ध था। कहा जाता है कि लाखों रुपयों के मोती, रेशम, बारीक सूती कपड़े और मसाले आदि हर साल हिन्दुस्तान के बाहर भेजे जाते थे।

अध्याय १२

गुप्त-वंश

चन्द्रगुप्त प्रथम (३२०-३३५ ई०)—चौथी शताब्दी के आरम्भ में, सन् ३२० ई० के लगभग, राजा चन्द्रगुप्त प्रथम पाटलिपुत्र अर्थात् पटना के राजसिंहासन पर बैठा। उसने अपने राज्य को विस्तृत, अवध और बिहार तक फैलाया। गुप्तवंश* की नींव डालनेवाला यही राजा था। इस वंश ने लगभग २०० वर्ष तक राज्य किया। चन्द्रगुप्त ने अपना नया संवत् चलाया जिसका आरम्भ सन् ३२० ई० से होता है।

समुद्रगुप्त (३३५–३७५ ई०)—चन्द्रगुप्त के बाद उसका बेटा समुद्रगुप्त गद्दी पर बैठा। उसने ४० [illegible] तक राज्य

* गुप्तवंश [illegible]

किया। थोड़े ही समय में दूर-दूर के देशों को पराजित वह हिन्दुस्तान का सम्राट् बन बैठा। मध्यभारत को जीत कर उसने जङ्गली जातियों को परास्त किया। उसका राज्य ... तक फैल गया और बहुत-से राजा उसके अधीन हो गये। जिन देशों को समुद्रगुप्त ने जीता उनको उसने अपने राज्य में नहीं मिलाया परन्तु पराजित राजाओं से बहुत-सा धन लिया। जब उसका राज्य पूर्ण रीति से स्थापित हो गया तब उसने मेध यज्ञ किया जिसमें दूर-दूर के राजा लोग सम्मिलित हुए। समुद्रगुप्त बड़ा योग्य और प्रभावशाली राजा था। विदेशी राजा भी उसको मानते और उसका आदर करते थे। इलाहाबाद के किले में जो अशोक का स्तम्भ है उस पर एक लेख उसका भी खुदवाया हुआ है जिससे पता लगता है कि उत्तरी भारत और दक्षिण के राजा उसको अपना राजराजेश्वर मानते थे। प्रतापी सम्राट् होने के अतिरिक्त समुद्रगुप्त कविता करने में भी निपुण था और वीणा भी खूब बजाता था। वह विद्वानों से बड़ा प्रेम करता और उनसे धार्मिक ग्रन्थों की व्याख्या कराता था। यद्यपि वह स्वयं हिन्दू-धर्म को मानता था परन्तु बौद्धधर्म को भी आदर की दृष्टि से देखता था।

चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य—सन् ३७५ ई० के लगभग उसका बेटा चन्द्रगुप्त द्वितीय गद्दी पर बैठा। उसने ४१३ ई० तक राज्य किया। कुछ समय के बाद उसने विक्रमादित्य की पदवी धारण की जिसका अर्थ है "वीरता का सूर्य"। उसने मालवा, गुजरात और सौराष्ट्र आदि देशों को, जहाँ शक जाति के राजा राज्य करते थे, जीत लिया और शकों के राज्य का अन्त कर दिया। मालवा और गुजरात को जीतने के बाद उसने अपनी राजधानी पाटलिपुत्र से अयोध्या को हटा ली और फिर ४०९ ई० के लगभग कौशाम्बी को अपनी राजधानी

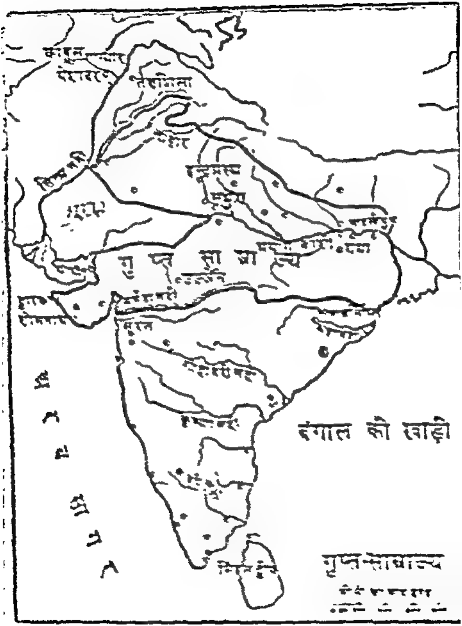
गुप्त साम्राज्य
बंगाल की खाड़ी
अरब सागर
गुप्त-साम्राज्य

बनाया जिससे वह अपने नये जीते हुए देशों का
प्रबन्ध कर सके।

चन्द्रगुप्त शूरवीर भी था और विद्या-प्रेमी भी। सभा में बहुत-से पण्डित और विद्वान् पुरुष थे जिनमें सर्वोपरि थे। ये नवरत्न कहलाते थे। इनमें सबसे बड़ा वि. कालिदास था जिसके रचे हुए ग्रन्थ—रघुवंश, मेघदूत, कुमारसम्भव आदि—आज तक पढ़े जाते हैं। सिंह का बनाया हुआ अमरकोष संस्कृत की पाठशालाओं अब तक पढ़ाया जाता है। धन्वन्तरि वैद्य भी इसी समय हुए थे जिनके नाम से प्रत्येक भारतवासी परिचित है। भी एक रत्न थे। इन्होंने प्राकृत भाषा का व्याकरण है। इनमें वराहमिहिर नामक प्रसिद्ध एक ज्योतिषी भी थे। चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य ने लगभग ४० वर्ष सुख और शान्ति पूर्वक राज्य किया। वह बड़ा वीर और पराक्रमी था। राज्य का प्रबन्ध करने में भी वह कुशल था उसकी वीरता की बहुत-सी कहानियाँ अब तक सारे भारत में प्रसिद्ध हैं।

फाहियान—इसी राजा के शासन-काल में एक यात्री बौद्धमत-सम्बन्धी ग्रन्थों की खोज करने भारत में आया था इसका नाम फाह्यान था। लगभग ६ वर्ष तक वह चन्द्रगुप्त के राज्य में रहा और जो कुछ उसने थोड़ा बहुत भारत का वर्णन किया है उससे उस समय के रीति-रिवाज और शासन-प्रणाली का बहुत कुछ हाल मालूम होता है। वह लिखता है कि प्रजा सुख से रहती थी। महसूल अथवा कर भी अधिक नहीं लिया जाता था। [illegible] सड़कों के किनारे [illegible] में एक [illegible] औषधालय [illegible] बड़ा

शहर था। उसमें दो बड़े मठ थे जहाँ सहस्रों विद्यार्थी विद्या पढ़ते थे। राज्य का प्रबन्ध अच्छा था। लोग बेखटके एक जगह से दूसरी जगह आ-जा सकते थे। मामूली अपराधों का दण्ड केवल जुर्माना था। फाँसी बहुत कम दी जाती थी और अङ्ग-भङ्ग का दण्ड केवल राजद्रोहियों, डाकुओं अथवा लुटेरों को दिया जाता था। राज्य के कर्मचारियों को नियत वेतन मिलता था। वे प्रजा को कष्ट नहीं देने पाते थे। यात्री लिखता है कि मगध और दक्षिण बिहार में बड़े-बड़े शहर थे। लोग ख़ुश-हाल थे। पाटलिपुत्र ख़ूब आबाद शहर था। सारे देश में न तो कोई जीवहिंसा करता था, न शराब पीता था और न प्याज़ खाता था। न कोई सूअर खाता था न मुर्गे। क़साइयों और शराब बेचनेवालों को दूकानें शहर में खोलने का हुक्म नहीं था। धर्म के विषय में प्रजा को पूर्ण स्वतन्त्रता थी। भिन्न-भिन्न धर्मों के अनुयायी अपने सिद्धान्तों का ठीक-ठीक प्रति-पालन करते थे। कुछ विद्वानों का मत है कि चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य वही हैं जो वीर विक्रमादित्य के नाम से प्रसिद्ध हैं, जिनकी राजधानी उज्जैन थी और जो हिन्दू-धर्म का पक्ष-पाती और संस्कृत-विद्या का बड़ा प्रेमी था।

कुमारगुप्त — [illegible]

सामाजिक दशा—चन्द्रगुप्त के समय में बौद्धधर्म की अवनति हो रही थी और वैष्णव धर्म धीरे-धीरे उन्नति कर रहा था। ब्राह्मणों की महिमा बढ़ रही थी जैसा कि कालिदास के ग्रन्थों से पता लगता है। बहुत-से शिवालय और मन्दिर बन गये थे जिनमें हिन्दुओं के देवताओं की पूजा होती थी। राजा स्वयं वैष्णव अर्थात् विष्णु का उपासक था परन्तु बौद्धों के साथ दया का बर्ताव करता था। गुप्त-काल में विद्या की बड़ी उन्नति हुई। गणित-शास्त्र और ज्योतिष-शास्त्र के बड़े-बड़े विद्वान् इसी समय में हुए। संस्कृत के बहुत से नाटक और पुराण इसी काल में लिखे गये। कला-कौशल की भी उन्नति हुई और इस समय की मूर्तियों और स्तम्भ इत्यादि से, जो अभी तक हैं, पता लगता है कि भारतवर्ष में चौथी, पाँचवीं शताब्दी में बड़े चतुर कारीगर और शिल्पकार रहते थे।

विक्रमी संवत्—कुछ लोगों का कहना है कि विक्रमी संवत् जो सन् ५८–५७ ई० पू० से आरम्भ होता है उज्जैन के राजा विक्रमादित्य के समय से चला। यह भूल है। डाक्टर स्मिथ की राय है कि इस संवत् को पहले पहल उज्जैन के ज्योतिषियों ने चलाया होगा। कई भारतीय विद्वान् कहते हैं कि यह संवत् पहले से चला आता था परन्तु चन्द्रगुप्त द्वितीय ने इसका नाम 'विक्रमादित्य संवत्सर' कर दिया।

गुप्त वंश की अवनति—[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] परन्तु

इसमें सफलता प्राप्त न हुई। थोड़े दिनों के बाद जब फ़ारस का दल कम हो गया तब मध्यएशिया की असभ्य जातियों ने बड़े वेग के साथ हिन्दुस्तान पर आक्रमण करना आरम्भ कर दिया। हूण-जाति का एक सर्दार तोरमाण था। इसने सन् ४९९ या ५०० ई० में अपने को मालवा का राजा बनाया। तोरमाण के बाद उसका बेटा मिहिर-कुल गद्दी पर बैठा। वह बड़ा अत्याचारी और निर्दयी था और प्रजा को बहुत कष्ट देता था। उसके इन दुष्ट व्यवहार के कारण अशान्ति फैल गई और सन् ५२८ ई० के लगभग मालवा के राजा यशोधर्मन् ने, मगध के राजा बालादित्य की सहायता से, मिहिरकुल को मुलतान के पास परास्त किया। मिहिरकुल काश्मीर की ओर चला गया और वहाँ मर गया। छठी शताब्दी में तुर्कों के आक्रमणों के कारण हूण-जाति की शक्ति एशिया में बहुत घट गई। वास्तव में छठी शताब्दी में बड़ी अशान्ति फैली हुई थी। उत्तर में हूण-जाति ने बड़ा उपद्रव किया और इसी कारण गुप्त-वंश के राजाओं का बल बिलकुल घट गया।

अध्याय १३

हर्ष अथवा शीलादित्य

(६०६-४७ ई० तक)

प्रभाकरवर्धन—छठी शताब्दी के अन्त में थानेश्वर के राजा प्रभाकरवर्धन के पुत्र हर्षवर्धन ने उत्तरी हिन्दुस्तान पर अपना [illegible] प्रभाकरवर्धन पहले [illegible] के

राजा के अधीन था। वह सन् ५७५ ई० में स्वतन्त्र हो गया। उसके बेटे राजवर्धन ने हूण लोगों को हरा कर कन्नौज पर चढ़ाई की और मालवा के राजा को पराजित कर कन्नौज जो उसके राज्य का एक सूबा था, अपने राज्य में मि-लिया। फिर उसने बंगाल पर चढ़ाई की परन्तु वहाँ पर कपट से मारा गया।

हर्षवर्धन (६०६–४७ ई०)—उसकी मृत्यु के उसका छोटा भाई हर्ष गद्दी पर बैठा। उसने तुरन्त पर चढ़ाई करके वहाँ के राजा को हरा दिया और प्रकार अपना राज्य समस्त हिन्दुस्तान में नर्मदा तक किया। नैपाल और कामरूप आदि देश भी उसके हो गये। दक्षिण को भी पराजित करने की उसने चेष्टा की सन् ६२० ई० के लगभग उसने चालुक्यवंश के राजा केशी द्वितीय पर चढ़ाई की परन्तु इसमें उसे सफलता प्राप्त हुई। कन्नौज को उसने अपनी राजधानी बनाया और बड़े बड़े सुन्दर विशाल महलों से उसको सुशोभित किया। इस में तालाब और मन्दिर बनवाये और उपवन लगवाये। बौद्ध मठों की भी संख्या बढ़ गई।

ह्वेनसांग—इसके समय में ह्वेनसांग नामक चीनी यात्री हिन्दुस्तान आया। उसने जो कुछ हिन्दुस्तान में देखा उसका हाल लिखा है। पण्डित बाण की लिखी हुई पुस्तक हर्षचरित्र [illegible] भी इस राजा के समय का बहुत सा वृत्तान्त ज्ञात होता है। ह्वेनसांग लगभग १५ वर्ष अर्थात् सन् ६३० ई० से ६४५ ई० तक हिन्दुस्तान में रहा। वह लिखता है कि अफ़गानिस्तान में बौद्धमत के माननेवाले अधिक थे और [illegible] कन्नौज में बौद्धमत

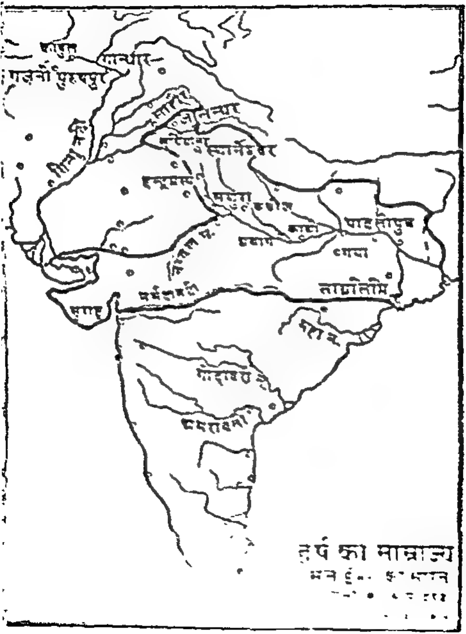

काबुल
गान्धार
गज़नी
पुरुषपुर
जालन्धर
स्थानेश्वर
मथुरा
कन्नौज
प्रयाग
पाटलिपुत्र
गया
ताम्रलिप्ति
नर्मदा नदी
गोदावरी
कृष्णा नदी
हर्ष का साम्राज्य

का प्रभाव घटता जाता था और हिन्दूमत उन्नति कर रहा था। कन्नौज में, जैसा कि ऊपर कह चुके हैं, बौद्धधर्म के १०० विहार थे। राजा हर्ष हिन्दूधर्म और बौद्धधर्म का समान आदर करता था और हिन्दुओं के देवताओं की भी पूजा करता था। सन् ६३४ ई० में हर्ष ने एक बड़ी सभा की। इसमें २० राजा आये और उन्होंने हर्ष का आधिपत्य स्वीकार किया। पहले दिन बुद्ध भगवान की मूर्ति स्थापित की गई और दूसरे-तीसरे दिन सूर्य और शिव की पूजा हुई। फिर ७७ दिन तक राजा ने सब लोगों को भोज दिया और बहुत-सा सामान—जिसमें आभूषण, वस्त्र इत्यादि थे—हिन्दू और बौद्धधर्म के माननेवालों को बाँट दिया। इसके बाद उसने अपने राजसी वस्त्र उतार दिये और साधारण संन्यासियों के कपड़े पहन लिये।

हर्ष का शासन-प्रबन्ध—*ह्वेनसांग के लेख से मालूम* होता है कि हर्ष का राज्य-प्रबन्ध मौर्य राजाओं का-सा नहीं था, परन्तु प्रजा सुखी थी। हर पाँचवें वर्ष राजा प्रयाग जाता था और *गङ्गा-यमुना* के सङ्गम पर जैन, बौद्ध और वैष्णव धर्म के साधुओं को धन और वस्त्र दान करता था। चीनी यात्री लिखता है कि हर्ष के नियम गुप्त-वंशीय राजाओं के नियमों से कड़े थे। अपराधियों को दण्ड भी कड़ा दिया जाता था। राज्य की कार्यवाही का पूरा ब्योरा कर्मचारी प्रत्येक सूबे में लिखते थे। शिक्षा का भी प्रचार था और गया से थोड़ी दूर नालन्द में एक बहुत बड़ा मठ था जहाँ लगभग १० सहस्र विद्यार्थी धार्मिक शिक्षा प्राप्त करते थे। ह्वेनसांग स्वयं भी नालन्द में रहता था। हर्ष विद्वान था। वह कविता भी करता था। उसने नागानन्द, रत्नावली आदि नाटक लिखे हैं। उसके दरबार में बाण नामक एक

विद्वान था। उसने अपनी पुस्तक 'हर्षचरित' में अपने समय का अच्छा हाल लिखा है।

हर्ष की मृत्यु—सन् ६४६ या ६४७ ई० में हर्ष का देहान्त हो गया। उसके पीछे कोई राजा ऐसा नहीं हुआ जो उसके साम्राज्य को सँभालता। सारे देश में अशान्ति फैल गई। इससे प्रजा को बड़ा कष्ट हुआ। हर्ष की मृत्यु के बाद उत्तरी हिन्दुस्तान में स्वतंत्र राज्य बनने लगे और दक्षिण में कांची का राजा नृसिंहवर्मा, जिसने ६४२ ई० में पुलकेशी द्वितीय चालुक्य राजा को युद्ध में हराया था, महाराजाधिराज बन बैठा।

अध्याय १४

चालुक्यवंश—दक्षिण के राज्य

उत्तरी हिन्दुस्तान में हर्ष की मृत्यु के बाद इसी प्रकार छोटे-छोटे स्वतंत्र राज्य हो गये। दक्षिण में सन् ६०८ ई० से ७५३ ई० तक चालुक्यों का राज्य था [illegible] था। इस वंश की [illegible]

शाली राजा था। उसने आसपास के राजाओं को हरा कर उनके राज्यों पर अपना अधिकार जमा लिया; फिर गुजरात, मालवा और कोनकन को मिला कर पूर्व में पल्लवों की रियासत वेंगी को जीत कर दक्षिण में चोल और पाण्ड्य राज्यों को भी अपने अधीन कर लिया। सन् ६२० ई० में उसने हर्ष की सेना को परास्त कर नर्मदा के नीचे-नीचे समस्त दक्षिण पर अपना अधिकार जमा लिया। ह्वेनसांग चीनी यात्री उसके दर्बार में भी गया था और जो कुछ उसने देखा उसका सब हाल लिखा है। सन् ६४२ ई० में काञ्ची के पल्लव राजा नृसिंहवर्मा ने चालुक्य राजा को लड़ाई में हराया और स्वयं दक्षिण का सम्राट् बन बैठा। १३ वर्ष के बाद सन् ६५५ ई० के लगभग पुलकेशी ने अपने पिता की मृत्यु का बदला लिया और काञ्ची को जीत लिया। पल्लवों और चालुक्यों में कई वर्ष तक युद्ध होता रहा। अन्त में दोनों के बलहीन हो जाने पर राष्ट्रकूटों ने अपना राज्य स्थापित करके दक्षिण में अपना प्रभुत्व जमाया। इन्होंने उत्तरी भारत के देशों को जीतने की भी कोशिश की परन्तु पाल-वंशीय राजाओं ने उन्हें आगे बढ़ने से रोक दिया।

अध्याय १५

भारत की प्राचीन सभ्यता

विद्या की उन्नति—हिन्दू-सभ्यता प्राचीन है। यूरोपीय विद्वान भी भारतीय सभ्यता की प्रशंसा करते हैं। निस्सन्देह यह बात सिद्ध हो चुकी है कि एक समय था [illegible] था और संसार का

[illegible]

ग्रहण और सूर्यग्रहण का कारण भी बताया जिसे आजकल के विद्वान् भी मानते हैं। भास्कराचार्य ने भी बड़ी दलीलें देकर साबित किया कि ज़मीन गोल है और उसमें आकर्षण-शक्ति है। वराहमिहिर ने बृहत्संहिता नामक ग्रन्थ लिखा जो ज्योतिष के प्रधान ग्रन्थों में समझा जाता है।

वैद्यक शास्त्र की भी बड़ी उन्नति हुई। आयुर्वेदिक चिकित्सा में चरक और सुश्रुत बहुत निपुण थे। इन्होंने ऐसे ग्रन्थ लिखे जिनमें रोगों के निदान, चिकित्सा आदि का वर्णन है। सुश्रुत में जर्राही अर्थात् चीरने-फाड़ने की विधि बताई गई है। इसी ग्रन्थ में यन्त्रों का भी वर्णन है और उनके प्रयोग की विधि भी लिखी हुई है। यन्त्र धातु के होते थे। कोई-कोई तो ऐसे सुन्दर चमकीले और तीक्ष्ण होते थे कि बाल को सीधा चीर कर दो कर देते थे। जानवरों की भी चिकित्सा होती थी। अशोक के समय में जानवरों की चिकित्सा के लिए औषधालय खुले हुए थे।

कला स्थापत्य आदि—हिन्दुओं को ६४ कलाओं का ज्ञान था। वे नृत्यविद्या, गानविद्या, चित्रकारी, भास्कर्य, शिल्पविद्या में प्रवीण थे। उन्होंने बहुत-सी सुन्दर इमारतें बनाईं। उनकी कारीगरी के नमूने अभी तक मौजूद हैं। अजंता और एलोरा की गुफाएँ प्राचीन हिन्दुओं के कला-कौशल के अनन्य प्रमाण हैं। उन्होंने बड़े-बड़े विशाल मन्दिर बनवाये। काशी, जगन्नाथ, भुवनेश्वर और मदुरा के मन्दिर प्राचीनकाल के ही बने हुए हैं। आबू का जैन मन्दिर भी भारत की अद्भुत इमारतों में से है।

सामाजिक स्थिति—हिन्दू-समाज की दशा अच्छी थी। शिक्षा का खूब प्रचार था। ब्राह्मण विद्यार्थियों को [illegible]

हो गई थी। यद्यपि वैदिक काल में ऐसा नहीं था परन्तु और सामाजिक ज़रूरतों के बढ़ने और अनार्य जातियों के मिल जाने से नई-नई जातियाँ बन गईं। ब्राह्मण समाज के नेता थे। राजा लोग उन्हीं की सलाह से काम करते थे। राजनीतिक, धार्मिक तथा कानूनी विषयों में ब्राह्मणों की सलाह ली जाती थी। बड़े-बड़े राजा महाराजा उनके सामने सिर झुकाते थे और उनकी आज्ञा का पालन करते थे। इस गौरव का कारण यह था कि ब्राह्मण विद्वान थे और कभी धन की इच्छा नहीं करते थे। उनका जीवन समाज की सेवा के अर्पित होता था। [illegible]

धार्मिक स्थिति में भी [illegible]

[illegible]

के अनेक प्रमाण हैं कि हिन्दू राजाओं का लक्ष्य प्रजा को सुखी बनाना था। राजा लोकमत का आदर करते थे और अपने मन्त्रियों की सलाह से काम करते थे। बहुत से लोगों का यह ख़याल है कि प्राचीन काल में भारत में स्वेच्छाचारी शासक होते थे जो मनमानी करते थे। यह बड़ी भूल है। रामायण और महाभारत से पता लगता है कि बड़े बड़े शक्तिमान् राजा भी अपनी प्रजा की इच्छा के विरुद्ध काम करने का साहस नहीं करते थे। बौद्ध काल में कई प्रजा-तन्त्र राज्य भी थे। हर एक मामले में जनता के प्रतिनिधियों की राय ली जाती थी। मौर्य-साम्राज्य का सङ्गठन भी इस बात को प्रकट करता है कि हिन्दू राजनीतिक मामलों में बड़े कुशल थे। यही शासन-प्रणाली हर्ष के समय तक रही। चीनी यात्री, जो उसके समय में भारत में आये, लिखते हैं कि देश में शान्ति थी, राज्य का प्रबन्ध अच्छा था, प्रजा सुखी थी, लोग सत्यवादी थे और शिक्षा का खूब प्रचार था। टैक्स भी ज़ियादा नहीं थे और हर्ष को धार्मिक पक्षपात छू तक नहीं गया था।

प्राचीन भारत के लोग यूरोप तथा एशिया के देशों के साथ व्यापार करते थे। रोम से बहुत सा रुपया चीज़ों के बदले में हिन्दुस्तान में आता था। देश में धन बहुत था। इसी को लेने के लिए बहुत से बाहरी आक्रमण हुए जिनका आगे वर्णन किया जायगा।

अध्याय १६

धार्मिक स्थिति

पौराणिक धर्म—पौराणिक धर्म प्राचीन है परन्तु सातवीं-आठवीं शताब्दी में जब बौद्धधर्म की अवनति होने लगी तब फिर उसकी उन्नति हुई। राजपूत राजाओं ने अपने अपने राज्य स्थापित कर लिये। उन्होंने नये-नये मन्दिर बनवाये जिनमें विष्णु, शिव, आदि देवताओं की पूजा होने लगी। वैदिक काल के देवताओं की महिमा घट गई और शैव और वैष्णवधर्म का प्रचार होने लगा। मूर्ति-पूजन का भी प्रचार हुआ। संस्कृत के स्थान [illegible] एक नई भाषा बोलने लगे जिसे प्राकृत कहते हैं। हिन्दू लोगों के खान-पान, रहन-सहन में भी बड़ा परिवर्तन हो गया। मन्दिरों की संख्या बढ़ गई और ईश्वर की उपासना एक नई रीति के अनुसार होने लगी। इस काल में समाज के [illegible] में। बड़े-बड़े [illegible] [illegible] [illegible] और [illegible] [illegible] के बिना कोई काम नहीं करते थे। [illegible] [illegible] [illegible] और समाज के [illegible] के [illegible] [illegible] हैं। [illegible] के [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] लिखे हुए हैं [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] हैं।

पुराण—पुराण का अर्थ है [illegible] और [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है [illegible]

विष्णु और ब्रह्मा की महिमा का वर्णन है। पुराणों में और भी बहुत-सी कथाएँ हैं जिनसे ७ वीं और ८ वीं शताब्दियों की सामाजिक दशा का पता लगता है। एक पाश्चात्य विद्वान् का मत है कि पुराण सन् ७०० ई० तक बने थे।

शङ्कराचार्य—ब्राह्मणों का प्रभुत्व स्थापित होने से हिन्दू-धर्म की विशेष उन्नति हुई। हर्ष की मृत्यु के बाद सातवीं और आठवीं शताब्दी में भारतवर्ष में बहुत से सम्प्रदाय बन गये और अपने-अपने सिद्धान्तों की पुष्टि करने लगे। बौद्धमत की दिन पर दिन अवनति होने लगी। इसके कई कारण थे। ब्राह्मणों ने अपना प्रभुत्व फिर स्थापित करने का यथाशक्ति प्रयत्न किया। उन्होंने बौद्धमत के बहुत से उत्तम सिद्धान्तों को अपने धर्म में मिला लिया। गौतमबुद्ध को भी वे विष्णु का अवतार मानने लगे। इस प्रकार बौद्ध-धर्म की उत्तम बातें सब हिन्दू-धर्म में आ गईं। बौद्ध-मत की प्राचीन पवित्रता और सरलता जाती रही। उसे अब पाखण्ड और आडम्बर ने घेर लिया था। भिक्षु लोग अपने विहारों में तप करने के बजाय आनन्द से जीवन व्यतीत करते थे। उनके पास सुख के सारे सामान मौजूद थे। बौद्ध-मत के आचार्यों में ऐसे विद्वान् कोई नहीं थे जो कुमारिल तथा शंकराचार्य से शास्त्रार्थ में टक्कर लेते। मुख्य कारण बौद्ध-मत की अवनति का यही है कि लोग महात्मा बुद्ध की शिक्षाओं को भूल गये और भोग-विलास में लिप्त हो गये।

कुमारिल भट्ट ने सबसे पहले बौद्ध-धर्म का खण्डन किया। [illegible] के युग में [illegible] सम्पादन का काम [illegible] का खण्डन किया। [illegible] किया उस अद्वैत- [illegible] और उनके

माया का प्रपञ्च है। 'ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या' यही अद्वैतवाद का मूल मन्त्र है। माया से प्रेरित होकर जीव अपने को ब्रह्म से भिन्न मानता है परन्तु वास्तव में दोनों एक ही हैं। शङ्कराचार्य का जन्म सन् ७८८ ई० के लगभग मालाबार देश में, दक्षिण में, हुआ था। इन्हें बहुत-से हिन्दू शिवजी का अवतार मानते हैं। अल्पावस्था में ही इन्होंने बहुत-सी विद्या पढ़ डाली और विद्वानों से शास्त्रार्थ करना आरम्भ कर दिया। वे बनारस भी गये। वहाँ उन्होंने शिवजी की पूजा का प्रचार किया। ३२ वर्ष की अवस्था में केदारनाथ तीर्थ में, जो हिमालय पर्वत पर है, शङ्कराचार्य का देहान्त हो गया। बौद्ध-धर्म पर वेदान्त ने विजय तो प्राप्त कर ली परन्तु वह भी लोगों को अधिक पसन्द न आया। संन्यास और वैराग्य के आदर्श जो उसके मुख्य अंग थे वे जनता को कठिन मालूम हुए। इसका परिणाम यह हुआ कि थोड़े ही समय में भक्ति-मार्ग की उन्नति होने लगी। बारहवीं शताब्दी से १७ वीं शताब्दी तक इसका ख़ूब ज़ोर शोर रहा। अनेक विद्वान् और महात्मा ऐसे हुए जिन्होंने इसका दूर दूर तक प्रचार किया।

रामानुज—शङ्कराचार्य के बाद स्वामी रामानुज ने भक्ति का उपदेश किया। इनका जन्म १२ वीं शताब्दी में दक्षिण में हुआ था। उन्होंने काञ्चीवरम् में विद्या पढ़ी और फिर श्रीरङ्गपट्टन में आकर वैष्णवधर्म का प्रचार किया। स्वामी रामानुज ने सारे भारतवर्ष में भ्रमण किया और वैष्णव-धर्म को फैलाने का उद्योग किया। बहुत-से लोग स्वामीजी के मत को मानने लगे और उनके शिष्य हो गये। इन्होंने संस्कृत-भाषा में कई ग्रन्थ भी लिखे जिनमें उनके सिद्धान्तों का वर्णन है। स्वामी रामानुज के बाद और कई महात्माओं ने भक्ति का उपदेश किया जिनका आगे वर्णन किया जायगा।

अध्याय १७

उत्तरी भारत के राजपूत-राज्य

राजपूतों की उत्पत्ति—जैसा कि पहले लिख चुके हैं, हर्ष की मृत्यु के बाद राजपूतों ने धीरे-धीरे समस्त उत्तरी भारत में अपने राज्य स्थापित कर लिये। राजपूत अपने को सूर्यवंश और चन्द्रवंश की सन्तान कहते हैं और बहुत-से विद्वान इसको स्वीकार भी करते हैं। परन्तु बहुत-से विद्वानों का, विशेषकर पाश्चात्य विद्वानों का, मत है कि अधिकतर राजपूत सिथियन, शक, हूण जाति के लोगों की सन्तान हैं। ये लोग दूसरी-तीसरी शताब्दी ई० पू० में हिन्दुस्तान में आये और यहाँ के निवासियों से मिल गये। राजपूतों की वंशावली ठीक हो या नहीं परन्तु इतना अवश्य मानना पड़ेगा कि जो राजपूत दिल्ली, कन्नौज और मध्यप्रदेश में राज्य करते थे वे क्षत्रिय जाति के थे और प्राचीन आर्यों की सन्तान थे। इन लोगों पर बौद्ध-मत का प्रभाव बहुत कम पड़ा क्योंकि ये शूरवीर योधा थे और युद्ध के लिए सदा तैयार रहते थे। इन्हीं की मदद से ब्राह्मणों ने फिर से अपने धर्म को स्थापित किया और बौद्ध-मत का नाश किया। ब्राह्मणों ने राजपूतों के प्रभुत्व को अधिक बढ़ाया और उनकी बड़ी प्रशंसा की। परिणाम यह हुआ कि उन्होंने ब्राह्मणों को अपना अभीष्ट सिद्ध करने में पूरा-पूरा मदद दी।

सामाजिक दशा—राजपूत राजा शासन-प्रबन्ध में कुशल थे परन्तु आपस की फूट के कारण उनके शासन का संगठन कभी पूर्ण रीति से नहीं हुआ। उनका अधिकांश समय [illegible] झगड़ों में [illegible] था। युद्ध के लिए वे

सदैव तैयार रहते थे। युद्ध के नियम बने हुए थे। उन्हीं के अनुसार युद्ध किया जाता था। युद्ध के समय किसानों को किसी प्रकार की हानि नहीं पहुँचाई जाती थी और न प्रजा को कष्ट दिया जाता था। विश्वासघात भी नहीं किया जाता था। राजपूत अपनी बात के पक्के होते थे। शत्रु के साथ भी उदारता का बर्ताव करते थे। जब चित्तौड़-नरेश राणा साँगा ने मालवा के सुलतान महमूद खिलजी को युद्ध में परास्त किया तब वह बुरी तरह घायल हुआ। युद्ध-क्षेत्र से उठा कर उसे वे अपने डेरे में लिवा लाये और वहाँ उनका इलाज कराया। ऐसे ही अनेक उदाहरण राजपूत-जाति के औदार्य्य के दिये जा सकते हैं। राजपूत सत्य का पालन करते थे और दीन दुखियों की मदद के लिए सदा कटिबद्ध रहते थे। राजपूत-समाज में स्त्रियों का आदर था। वे भी शूरवीरता में मर्दों से कम नहीं थीं। उनका पतिव्रत-धर्म, वीरता तथा साहस भारतीय इतिहास में प्रसिद्ध हैं। लड़ाई के समय अपने सतीत्व की रक्षा करने के लिए सहस्रों राजपूत-स्त्रियाँ अग्नि में जलकर भस्म हो जाती थीं। इस रिवाज को जौहर कहते थे। राजपूत स्वामिभक्त और देशभक्त होते थे। इसके इतिहास में अनेक प्रमाण हैं। परन्तु राजपूत-समाज सर्वथा दोषरहित नहीं था। राजपूत भंग और अफ़ीम का इस्तेमाल करते थे। इस कारण आलस्य उनमें अधिक था। आपस में वे बड़ी ईर्ष्या रखते थे। जिसका परिणाम यह हुआ कि वे युद्ध में विदेशी शत्रुओं के विरुद्ध भी मिल कर काम नहीं कर सकते थे।

राजपूत-राज्य—हर्ष की मृत्यु के बाद ८वीं और ९वीं शताब्दि ईस्वी में राजपूतों ने भारत में [illegible] स्वाधीन राज्य स्थापित किये। इनमें कुछ बड़े [illegible] राजपूताना के राजपूतों के स्वतन्त्र राज्य थे। [illegible]

ही शक्तिशाली दिखाई देते थे। सन् ७१२ ई० में अरबों ने सिन्ध देश पर हमला किया। उन्होंने सिन्ध को जीत लिया और अपना अधिकार स्थापित कर लिया। इसका वर्णन आगे किया जायगा। अब हम मुख्य राजपूत-राज्यों का वर्णन करते हैं।

कन्नौज अथवा पांचाल—नवीं शताब्दी में कन्नौज का राज्य प्रसिद्ध था। सन् ८४० ई० में भोज परिहार वहाँ राज्य करता था। सारा उत्तरी भारत उसके साम्राज्य में शामिल था। भोज की मृत्यु के बाद साम्राज्य छिन्न भिन्न होने लगा और उसके अधीन राज्य स्वाधीन हो गये। परन्तु तब भी परिहार-वंश का राज्य बहुत दिन तक रहा। महमूद ग़ज़नवी के हमलों के समय कन्नौज में परिहारों का राज्य था। चन्देल राजपूत, जिन्होंने बुन्देलखण्ड में अपना राज्य स्थापित किया था, पहले परिहारों के अधीन थे।

पालवंश—९ वीं शताब्दी के आरम्भ में पालवंशी राजपूत बंगाल में राज्य करते थे। धर्मपाल इस वंश में सब से प्रतापी राजा हुआ है। १२ वीं शताब्दी में जब मुसलमानों ने बंगाल पर चढ़ाई की तब से पाल-राज्य की शक्ति बहुत कम हो गई। बंगाल के एक भाग में सेन-वंशीय राजाओं का राज्य था। कहा जाता है कि ये दक्षिणी ब्राह्मणों की सन्तान थे।

चन्देल—चन्देल राजपूत ९ वीं शताब्दी में बड़े शक्तिमान थे। इनका राज्य उस देश में था जिसे आजकल बुन्देलखण्ड कहते हैं। महोबा इनकी राजधानी थी। राजा धंग के समय में चन्देल-राज्य का विस्तार अधिक हो गया। उसने कन्नौज के परिहार राजा को लड़ाई में हराया और उत्तर में जमुना नदी तक अपना राज्य बढ़ा लिया। धंग का बेटा

भी बड़ा प्रतापी था। जब कन्नौज के परिहार राजा राज्यपाल ने सन् १०१८ ई० में महमूद गज़नवी की अधीनता स्वीकार की तब गंडा ने अन्य राजपूतों को भड़काया। सबने मिलकर राज्यपाल पर चढ़ाई की और उसे मार डाला। इसी वंश में राजा परमाल हुआ जिसने पृथ्वीराज चौहान से खूब लड़ाई की। सन् १२०३ ई० में मुसलमानों ने परमाल को पराजित किया और कालिंजर का किला जीत लिया। देश का थोड़ा सा भाग चन्देलों के अधिकार में रह गया। शेष को मुसलमानों ने जीत लिया।

गुजरात—गुजरात भी परिहार-साम्राज्य का एक सूबा था। यहाँ सन् ९४३ ई० के लगभग मूलराज चालुक्य ने अपना स्वाधीन राज्य स्थापित कर लिया। जब महमूद ने सोमनाथ के मंदिर पर हमला किया तब वहाँ इस वंश का राजा भीमराज राज्य करता था। इस राज्य को भी १३ वीं, १४ वीं शताब्दी में दिल्ली के मुसलमान बादशाहों ने जीत लिया।

मालवा—अन्य राजपूतों की तरह परमार-वंश ने भी मालवा में ९ वीं शताब्दी में अपना राज्य स्थापित किया था। इस वंश में सबसे प्रसिद्ध राजा भोज (१०१८-१०६० ई०) हुआ है। उसकी अनेक कहावतें अब तक लोगों में प्रचलित हैं। वह बड़ा विद्वान था। उसने एक संस्कृत-पाठशाला भी स्थापित की थी और एक झील भी खुदवाई थी। १४ वीं शताब्दी के आरम्भ में मुसलमानों ने मालवा को भी जीत लिया।

दक्षिण—जैसा पहले कह चुके हैं ८ वीं शताब्दी में दक्षिण में राष्ट्रकूटों ने अपना प्रभुत्व जमाया। परन्तु ९७३ ई० के लगभग कल्याणी के चालुक्यों ने उन्हें लड़ाई में हरा दिया। बहुत काल तक वे अपने निकटस्थ देशों के राजाओं से

लड़ते रहे। १२ वीं शताब्दी के अंत में इस वंश का पतन हो गया। चालुक्यों के बाद यादव और हॉयसल-वंश अधिक बलवान् हुए। यादवों ने महाराष्ट्र में और हॉयसलों ने मैसूर में अपने राज्य स्थापित किये। सन् १२९४ ई० में अलाउद्दीन खिलजी ने यादव राजा रामदेव को युद्ध में हराया। सन् १३१० ई० के लगभग मलिक काफूर ने यादव और हॉयसल-वंश के राज्यों पर चढ़ाई की। राजा रामदेव ने दिल्ली की अधीनता स्वीकार कर ली। उसकी मृत्यु के बाद उसके बेटे शंकरदेव ने बग़ावत की परन्तु वह मारा गया। सन् १३१८ ई० में रामदेव के दामाद हरपाल देव ने फिर विद्रोह का झंडा खड़ा किया परन्तु वह भी मुसलमानों के हाथ से मारा गया।

तैलङ्ग देश—तैलंगाना में ककातीय-वंश के राजपूत राज करते थे। अलाउद्दीन खिलजी ने उनको परास्त किया। तब वे दिल्ली के अधीन हो गये। इनकी राजधानी वारंगल थी। इस वंश के राजा बहुत काल तक मुसलमानों से लड़ते रहे। मुहम्मद तुग़लक़ ने सन् १३२३ ई० में वारंगल को जीत लिया और राजा को क़ैद कर लिया। तभी से ककातीय-वंश की अवनति होने लगी।

सुदूर दक्षिण—सुदूर दक्षिण में तीन प्राचीन राज्य थे—चोल, चेर, पाण्ड्य। एक दूसरा शक्तिशाली राज्य पल्लवों का था। यह राज्य सन् २०० ई० से १००० ई० तक रहा। पल्लव-राज्य के कमज़ोर होने पर चोल-वंश का उत्कर्ष हुआ। राजेन्द्र चोल (१०१२-४२ ई०) इस वंश का सबसे प्रभावशाली राजा हुआ। उसने चालुक्यों को युद्ध में पराजित किया और बंगाल तक धावा मारा। लगभग १०० वर्ष तक चोलवंश उन्नत दशा में रहा। परन्तु १२

ताब्दी के अन्त में वह दुर्बल हो गया। चौदहवीं शताब्दी
के आरम्भ में मलिक काफ़ूर ने दक्षिण के इन सब राज्यों को
तस नहस कर डाला। इसका वर्णन आगे किया जायगा।

राजपूत-शासन-पद्धति—यह सच है कि राजपूत-
काल में भारत में अनेक छोटे छोटे राज्य थे। राष्ट्रीय संगठन
नहीं था। परन्तु राजपूत-राजा धर्म का पालन करते थे।
गाँवों का प्रबन्ध पंचायतों द्वारा होता था। धर्म तथा जाति
के दबाव के कारण शासक स्वेच्छाचारी नहीं होने पाते थे।
लोकमत का आदर किया जाता था। कर अधिक नहीं लिये
जाते थे। दक्षिण में चोलवंश के राजाओं का शासन-प्रबन्ध
बहुत अच्छा था। उन्होंने प्रजा के हित के लिए बहुत कुछ
किया था।

अध्याय १८

मुसलमानों के आक्रमण

इस्लाम-धर्म की उत्पत्ति—एशिया में दक्षिण की
ओर अरब देश है। इस देश के मनुष्य प्राचीन काल में मूर्ति
पूजते और परस्पर लड़ाई झगड़े किया करते थे। जब अरब की
ऐसी दशा थी तब सन् ५७१ ई० में मुहम्मद साहब का मक्का
शहर में जन्म हुआ। वे देश में शान्ति स्थापित करना चाहते
थे और शिक्षा देते थे कि मनुष्य को शुभ कर्म करना चाहिए
और ईश्वरभक्ति में मन लगाना चाहिए। इनके उपदेश का
मक्का के लोगों पर कुछ भी प्रभाव न पड़ा। उन्होंने इनको कष्ट
देना आरम्भ किया। इस पर सन् ६२२ ई० में मुहम्मद

साहब मक्का को छोड़कर मदीना चले गये। अब उनके
देश का अधिक आदर होने लगा। उनका कहना था
ईश्वर एक है सबको उसी की उपासना करनी चाहिए
उन्होंने यह भी कहा कि पहले इस्लाम का कर्तव्य है कि
अपने धर्म को अन्य देशों में फैलावें क्योंकि ऐसा कार्य
स्वर्ग में स्थान मिलेगा। बहुत से लोग उनके अनुग
होगये। सन् ६३२ ई० में मुहम्मद साहब की मृत्यु हुई
इसके बाद मुसलमानों के नेता ख़लीफ़ा हुए। इन्होंने मदीन
दमिश्क़ और बग़दाद में राज्य किया और थोड़े ही दिन
स्पेन, फ़ारस, शाम, एशिया कोचक, अफ़्रीक़ा आदि देशो
इस्लाम का सिक्का जमा दिया। फ़ारस में जब इस्लाम
प्रचार हुआ तब वहां कुछ लोग ऐसे भी थे जिन्होंने
स्वीकार नहीं किया। ये लोग हिन्दुस्तान चले आये
बम्बई प्रान्त में समुद्र के किनारे रहने और व्यापार
लगे। ये पारसी कहलाते हैं। व्यापार करने में ये लोग
कुशल हैं और इनमें से अधिकांश धनी हैं।

मुसलमान हिन्दुस्तान को जीतने की बहुत दिन से
कर रहे थे परन्तु अभी तक कोई बड़ा हमला नहीं हुआ

मुहम्मद बिन क़ासिम—सन् ७१२ ईसवी में
वालों ने ज़ोर के साथ सिन्ध पर हमला किया।
सर्दार मुहम्मद बिन क़ासिम था। राजा दाहिर लड़ाई
हार गया और मुसलमानों ने सिन्ध को जीत लिया
मुहम्मद बिन क़ासिम ने हिन्दुओं के मन्दिरों को नहीं
और जिन्होंने अधीन होना स्वीकार कर लिया उनके

मुसलमानों का मुख्य धर्म ग्रन्थ क़ुरान शरीफ़ है। इस ग्रंथ

या का बर्ताव किया। बहुत से हिन्दू बड़े-बड़े ओहदों पर
युक्त किये गये और राज्य का काम उन्हें सौंपा गया।
रन्तु पकड़े जाने के भय से हिन्दू-स्त्रियाँ बड़ी शूरवीरता
भाग में जलकर मर गईं। कुछ समय के बाद मुहम्मद
न क़ासिम मारा गया और २० या २५ वर्ष पीछे सिन्ध
। सूबा मुसलमानों के अधिकार से जाता रहा। परन्तु
। अरबवाले रह गये थे उन्होंने वहीं बसने का विचार
र लिया। हिन्दू-सभ्यता का अरबों पर बड़ा प्रभाव पड़ा।
न्होंने पण्डितों से तर्क, न्याय, वेदान्त तथा वैद्यक-शास्त्र की
हुत-सी बातें सीखीं और संस्कृत के कई ग्रन्थों का अपनी
ाषा में अनुवाद किया।

सुबुक्तगीन—मुहम्मद साहब के मरने के लगभग ४००
वे बाद मुसलमानी मज़हब पश्चिमी एशिया के कुल देशों में
ल गया। कुशान-वंशीय राजाओं के शक्तिहीन होने के कारण
फ़ग़ानिस्तान पर मुसलमानों ने अपना आधिपत्य जमा
या। दसवीं शताब्दी में अलप्तगीन नामक ग़ुलाम सर्दार ने
न हज़ार ग़ुलामों की मदद से एक राज्य स्थापित कर लिया
। उसकी मृत्यु के बाद सन् ९७७ ई० में उसके ग़ुलाम
र दामाद सुबुक्तगीन को मिला। जब सुबुक्तगीन ने अपनी
क़त बढ़ा ली तब उसने हिन्दुस्तान पर हमला करने का
ादा किया। लाहौर के राजा जयपाल ने उसे रोकने की
ोशिश की परन्तु उसकी हार हुई। उसे विवश होकर
न्धि करनी पड़ी। थोड़े दिन के बाद फिर लड़ाई आरम्भ
ई। दिल्ली, अजमेर, कालिंजर, कन्नौज आदि देशों के
जाओं ने उसकी सहायता की मगर वह फिर पराजित
आ और पेशावर को सुबुक्तगीन ने अपने राज्य में
ला लिया।

महमूद ग़ज़नवी ... सन् ... ई० में ... गया। ... में ले ... काफ़िले ... व्यापार ... यूरोप का व्यापार उसका के ज़रिये हुआ करता था। ... लिए आस पास के अफ़गानी फ़िरक़ों को इकट्ठा कर ... लालच देकर उसने हिन्दुस्तान में दीन-इस्लाम फैलाने और ... लूटने के लिए बहुत-से आक्रमण किये। उसका पहला ... पेशावर पर हुआ। वहाँ के राजा जयपाल ने उसका सा... किया, परन्तु वह परास्त हो गया। महमूद बहुत-सा माल ... गहना लेकर ग़ज़नी को चला गया। इस जीत के ... उसकी हिम्मत और भी बढ़ गई और २६ वर्ष के भीतर ... १६ हमले किये। ... शहरों में लूट-मार ... एक बार राजा ... किया परन्तु वह भी हार गया। सन् १०१८ ई० ... बढ़कर महमूद ने कन्नौज पर हमला किया। मन्दिरों को फोड़कर वह माल-असबाब लूट ले गया। सन् १०२० ई० में उसने थोड़ा हिस्सा पञ्जाब का अपने राज्य में मिला ... लाहौर में अपना सूबेदार नियत किया और ... १०२३ ई० में कालिंजर के चन्देल राजा को युद्ध में प... किया।

उसका एक हमला सन् १०२४ ई० में गुजरात में सो... नाथ पर हुआ। महमूद तीस हज़ार सवार लेकर ग़ज़नी ... चला और मुलतान, अजमेर, अन्हलवाड़ आदि देशों ... पार करता हुआ गुजरात आ पहुँचा। सोमनाथ का मन्दि...

[illegible] मे प्रसिद्ध था। उसके खर्च के लिए सैकड़ों गाँव लगे थे और ग्रहण के समय उसमें लाखों आदमी पूजा करने आते थे। उसकी रक्षा के लिए अनेक राजपूत राजा अपनी सेना लेकर आये। उन्होंने बड़ी वीरता से मुसलमानों का सामना किया परन्तु उनकी हार हुई। कहते हैं कि जब महमूद ने मूर्ति को तोड़ने के लिए गदा उठाई तब पुजारियों ने उससे कहा कि आप चाहे जितना धन ले लीजिए परन्तु मूर्ति न तोड़िए। महमूद ने उत्तर दिया कि मैं मूर्ति तोड़ने वाले के नाम से प्रसिद्ध होना चाहता हूँ, मूर्ति बेचने वाले के नाम से नहीं। इतना कहकर उसने मूर्ति को टुकड़े टुकड़े कर डाला।

महमूद बहुत सा धन लेकर गजनी को लौट गया। [illegible] के [illegible] और [illegible] मन्दिर के [illegible] पर [illegible] अपने [illegible]। [illegible] सन् १०२६ ई० में [illegible] के [illegible] के लिए [illegible] । [illegible] हुआ था।

महमूद का चरित्र—महमूद [illegible] [illegible]

पुस्तक "शाहनामा"* लिखी है, इसी के समय में हुई। महमूद न्याय-प्रिय और प्रजा-पालक बादशाह था। दीन-दुखियों का सदैव ख़याल रखता था।

उसने हिन्दुस्तान में राज्य स्थापित करने की कभी इच्छा नहीं की। वह तो द्रव्य लेकर हर बार अपने देश को जाता था। सन् १०३० ई० में यह शूर-वीर योद्धा, जिसने अनेक बार लड़ाई के मैदान में अपने दुश्मनों के दाँत खट्टे किये थे, परलोक सिधारा।

मुहम्मद ग़ोरी—महमूद की मृत्यु के बाद उसके बेटों और पोतों में लड़ाई-झगड़ा आरम्भ हो गया। उनमें कोई ऐसा न था जो उस बड़े साम्राज्य को सँभालता। उस समय ग़ोर नाम का एक दूसरा मुसलमानी राज्य ग़ज़नी के पास में था। वहाँ के सर्दार ने सन् ११५० ईसवी में ग़ज़नी को छीन लिया और ११७६ ईसवी में मुहम्मद ग़ोरी ग़ज़नी की गद्दी पर बैठा। महमूद की तरह उसने भी अपना जीवन हिन्दुस्तान में ही लड़कर समाप्त किया।

१२ वीं शताब्दी के हिन्दू-राज्य—मुसलमान विजय के पहले भारत में राजपूतों के कई स्वाधीन राज्य थे। इनमें मुख्य ये थे—(१) कन्नौज में गहरवार (२) दिल्ली में तोमर (३) अजमेर में चौहान (४) बंगाल, बिहार में पाल और सेन (५) गुजरात में बघेले।

* फ़िरदौसी ने महमूद की आज्ञा से "शाहनामा" नामक [illegible] लिखा था। बादशाह ने [illegible]

प्रतिहार-वंश का अन्त होने पर कन्नौज को गहड़वार [illegible] ने अपने अधिकार में कर लिया । गहड़वार राठौड़ [illegible] कहलाये । राजा जयचन्द जिसे मुहम्मद गोरी ने लड़ाई [illegible] था इस वंश का अन्तिम राजा था । दिल्ली, अजमेर [illegible] चौहानों का राज्य था । अजमेर के राजा विग्रहराज चतुर्थ [illegible] के हमलों को युद्ध में रोककर अपना आधिपत्य स्थापित [illegible] था । पृथ्वीराज चौहान उसका भतीजा था । बंगाल में [illegible] वंशीय राजा राज्य करते थे । पूर्वी बंगाल में सेन-वंश का [illegible] था । बल्लाल सेन इस वंश में प्रसिद्ध राजा हुआ है ।

गुजरात में सोलंकी राजपूतों का राज्य था । १० वीं [illegible] में चालुक्य-वंश का प्रमुख व्यक्ति बड़ा और [illegible] कि इसका राज्य दूर तक फैला हुआ था । बाद [illegible] के बाद सोलंकी राजपूतों ने इन्हें लड़ाई में हराया और [illegible] राज्य स्थापित कर लिया ।

गोरी का आक्रमण—सन् ११७५–७६ ई० में मुहम्मद गोरी ने मुल्तान पर हमला किया और इसके दो वर्ष [illegible] गुजरात पर चढ़ाई की परन्तु [illegible] हरा दिया । सन् ११८६–८७ ई० में [illegible]

[illegible] सन् ११९१ ई० में [illegible]

जयचन्द और पृथ्वीराज—[illegible]

संगठन नहीं हुआ । इसका परिणाम यह हुआ कि हिन्दू सदा आपस में लड़ाई-झगड़ा करते रहे । जब युद्ध का [illegible] आता था तब मुसलमान अपने एक सर्दार की आज्ञा [illegible] और धर्म के कहने पर चलते थे । हिन्दुओं में [illegible] थे । वे परस्पर द्वेष और ईर्ष्या के कारण कभी [illegible] का सामना नहीं कर सकते थे ।

तीसरे, मुसलमान जी-जान से लड़ने के लिए [illegible] थे क्योंकि उन्होंने सुना था कि हिन्दुस्तान में धन [illegible] मन्दिरों की और राजाओं की अथाह सम्पत्ति [illegible] लिए और धर्म का प्रचार करने के लिए वे निडर [illegible] उत्साह से लड़ते थे ।

इन्हीं कारणों से मुसलमानों ने शीघ्र ही हिन्दू राजाओं को अपने वश में कर लिया । गुलामों [illegible] उनकी शक्ति को और भी बढ़ा दिया । जब [illegible] का एक शक्तिहीन अथवा अयोग्य होता था तब [illegible] का ही मुसलमान सेनापति अपना राजा स्वीकार कर [illegible] इन गुलामों में बड़े-बड़े बादशाह हुए जिन्होंने [illegible] कुशलता और योग्यता से शासन किया ।

अध्याय १९

गुलाम-वंश

(सन् १२०६ ईस्वी से १२९० ईस्वी तक)

कुतुबुद्दीन — [illegible] कुतुबुद्दीन [illegible]

[illegible]

संगठन नहीं हुआ। इसका परिणाम यह हुआ कि हि[illegible] सदा आपस में लड़ाई-झगड़ा करते रहे। जब युद्ध [illegible] था तब मुसलमान अपने एक सरदार की आज्ञा [illegible] और उसी के कहने पर चलते थे। हिन्दुओं में बहुत [illegible] थे। वे परस्पर द्वेष और ईर्ष्या के कारण कभी मिलकर [illegible] का सामना नहीं कर सकते थे।

तीसरे, मुसलमान जो भारत में आक्रमण के लिए आते थे क्योंकि उन्होंने सुना था कि हिन्दुस्तान में धन [illegible] मन्दिरों की और राजाओं की [illegible] सम्पत्ति [illegible] लिए और धर्म का प्रचार करने के लिए [illegible] उत्साह से लड़ते थे।

इन्हीं कारणों से मुसलमानों ने [illegible] हिन्दू राजाओं को अपने वश में कर लिया। मुहम्मद [illegible] इनकी [illegible] भी नहीं किया। [illegible] का युद्ध [illegible] [illegible] [illegible] मुसलमान [illegible] [illegible] इस [illegible] में [illegible] हुआ। [illegible] [illegible] और [illegible] से [illegible] किया।

अध्याय १६

गुलाम वंश

[illegible]

[illegible]

[illegible]

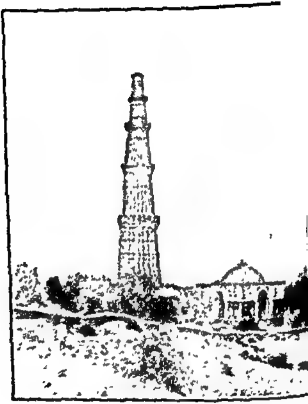

[illegible]

और उसके पीछे जो बादशाह दिल्ली की गद्दी पर बैठे वे अधिकतर .कुतुबुद्दीन की तरह .गुलाम थे। इसी लिए इस घराने को .गुलाम-ख़ान्दान कहते हैं। .कुतुबुद्दीन स्वभाव का अच्छा और मज़हब का पावन्द था। वह बड़ा उदार-चित्त था और अपने अफ़सरों को अच्छा काम करने पर इनाम और जागीर इत्यादि दिया करता था। उसकी उदारता मुसलमानी देशों में प्रसिद्ध थी। लोग उसे 'लाख-बख़्श' कहते थे। उसने मन्दिरों और मठों के मसाले से दिल्ली में एक मस्जिद बनवाई जिसे वह पूरा न कर सका। कुछ लोग कहते हैं कि .कुतुब मीनार को उसी ने बनवाया था परन्तु इतिहासज्ञों का मत है कि उसे अल्तमश ने बनवाया था। .कुतुबुद्दीन सन् १२१० ई० में घोड़े पर से गिर कर मर गया। एक वर्ष के बाद उसका .गुलाम और दामाद अल्तमश, जो बंगाल का सूबेदार था, उसके बेटे को गद्दी से उतार कर स्वयं बादशाह बन बैठा।

अल्तमश (सन् १२११-३६ ई०)—अल्तमश के समय में मुग़लों के सर्दार चंगेज़ख़ां ने मध्य-एशिया के मुसलमानी राज्यों को एक-एक करके जीता और फिर हिन्दुस्तान पर धावा किया। परन्तु हिरात में बलवा होने के कारण वह लौट गया। सिन्ध और बंगाल के सूबेदारों ने चंगेज़ के आने का समाचार सुनकर बग़ावत कर दी। अल्तमश ने शीघ्र ही उनको दबाया, राजपूताने पर हमला किया और रणथम्भौर, ग्वालियर और उज्जैन के क़िलों को जीत लिया। उसने बंगाल के सूबेदार के विद्रोह को भी दबाया और उससे बहुत से हाथी लिये। अल्तमश ने मुसलमानी राज्य की जड़ को मज़बूत किया। उसने ख़लीफ़ा से एक फ़रमान प्राप्त किया। वह विद्वानों का आदर करता था। उसके राजत्व-

काल में बहुत से विद्वान् फ़ारस और मध्य-एशिया से चं
के भय से भागकर हिन्दुस्तान में आये। उसने उन्हें द
दरबार में जगह दी और उनका सम्मान किया।

सन् १२३६ ई० में अल्तमश मर गया। उसके बेटों
कोई बादशाह होने के योग्य नहीं था इसलिए उसने प
ही से कह दिया था कि मेरे मरने के बाद मेरी बेटी र
गद्दी पर बैठे। परन्तु उसके दरबारियों ने स्त्री का गद्दी
बैठना उचित न समझ कर अल्तमश के बेटे को बाद
बनाया। वह ६ महीने के बाद मारा गया।

रज़िया बेगम (सन् १२३६-४० ई०)—तब इ
बहन रज़िया बेगम ही गद्दी पर बैठी। रज़िया बड़ी
और वीर स्त्री थी। उसने राज्य का प्रबन्ध बड़ी चतुराई
उत्तमता से किया। वह मर्दाने कपड़े पहनकर दरबा
बैठती और बादशाहों की तरह इन्साफ़ करती थी। वह
करने से भी नहीं डरती थी और अपने शासन-काल
हिन्दुओं के साथ वीरता से लड़ी। बग़ावत करनेवाले मुस
मान सर्दारों को भी उसने दबाया। परन्तु वह एक हब्
.ग़ुलाम से विशेष प्रेम रखती थी। इसके कारण उस
दरबारी उससे अप्रसन्न हो गये और थोड़े दिन के बाद उन्
उसको मार डाला। उस समय के एक मुसलमान इतिहास
कार ने रज़िया की बड़ी प्रशंसा की है। वह लिखता है कि
रज़िया बड़ी बुद्धिमती, योग्य और वीर स्त्री थी; उस
बादशाहों के सब गुण मौजूद थे। रज़िया ने साढ़े तीन व
तक राज्य किया।

नासिरुद्दीन—(सन् १२४६-६६ ई०) रज़िया के ब
तीन बादशाह और हुए परन्तु वे निकम्मे थे। सन् १२४

ई० में उसका छोटा भाई नासिरुद्दीन गद्दी पर बैठा और २० वर्ष तक राज्य करता रहा। परन्तु वह नाममात्र ही का बादशाह था क्योंकि राज्य-सम्बन्धी सब काम उसका सिपहसालार किया करता था। इसका नाम बलबन था और यह बादशाह का बहनोई था। मुग़लों ने फिर हिन्दुस्तान पर हमला किया और १२४१ ई० में लाहौर को जीत लिया। जिन राजपूत राजाओं को .कुतुबुद्दीन और अल्तमश ने अपने अधीन किया था वे भी स्वतन्त्र होकर दिल्ली के साम्राज्य से अलग हो गये। बलबन बड़ा योधा था। उसने बड़ी वीरता से मुग़लों का सामना किया और उनको मार कर हिन्दुस्तान से बाहर भगा दिया। हिन्दू राजाओं के साथ भी उसने युद्ध किया और फिर उनको दिल्ली का आधिपत्य स्वीकार करने पर विवश किया।

नासिरुद्दीन बड़ा नेक और सीधा बादशाह था। वह बादशाहों की तरह ठाटबाट से नहीं रहता था। उसके एक ही स्त्री थी। कहते हैं, वही भोजन इत्यादि बनाती थी। बादशाह किताबें लिख-लिखकर अपनी जीविका उपार्जन करता था और जो कुछ धन उसे किताब बेच कर मिलता उसी से अपना निर्वाह करता था। कहते हैं कि एक बार बादशाह से एक दरबारी ने उसकी लिखी हुई पुस्तक में कुछ अशुद्धियाँ बताईं। बादशाह ने उसके सामने तो जैसे उसने बताया वैसे ही उनको शुद्ध कर दिया परन्तु जब वह चला गया तब फिर किताब ज्यों की त्यों कर ली। किसी ने पूछा, "बादशाह सलामत! ऐसा करने से क्या प्रयोजन?" बादशाह, जो बड़ा सज्जन और दयालु था, बोला—बिना कारण किसी के हृदय को दुःख पहुँचाने से क्या लाभ है। ऐसा करने से उस मनुष्य का दिल नहीं दुखा और मेरी किताब का कुछ बिगड़ा भी नहीं।

बलबन—सन् १२६६ ई० में जब नासिरुद्दीन म
गया तब उसका मन्त्री बलबन राजसिंहासन पर बैठा । बल
बड़ा वीर, तेजस्वी और प्रभावशाली सुलतान था । हिन्
स्तान के जो राजा दिल्ली के अधीन थे वे सब इससे डरते थे
उसकी धाक मध्य-एशिया तक जमी हुई थी । बलबन ब
सख्त बादशाह था । अपने शत्रुओं को वह बड़ा कठोर दण्ड
देता था । जब वह गद्दी पर बैठा तब पहले उसने
गुलामों की मण्डली में से जितने अब तक जीवित थे उनका
नाश किया और धीरे-धीरे अपने सब शत्रुओं को वश में क
लिया । मेवातियों को वह पहले ही परास्त कर चुका था
अब उसने मुग़लों का सामना करने की तैयारी की । कि
और दूसरे प्रान्तों के क़िले बुरी दशा में थे । बलबन ने
सबकी मरम्मत कराई और मुग़लों के आक्रमणों को रोक
के लिए सीमान्त देशों में नये क़िले भी बनवाये । मुग़
का ज़ोर बहुत कम हो गया और बलबन के समय में उन
प्रजा को अधिक कष्ट नहीं हुआ ।

बङ्गाल का विद्रोह—बलबन के गद्दी पर बैठने के
या १६ वर्ष बाद बङ्गाल के हाकिम तुग़रिल बेग़ ने बग़ा
की । उसने समझा कि बादशाह बूढ़ा है और मुझे दबा न
सकेगा । इसलिए उसने कर भेजना बन्द कर दिया
हाथी इत्यादि, जो आजनगर से उसने पकड़े थे, अपने लि
रख लिये । बग़ावत की ख़बर पाकर बलबन ने अपने सि
सालार अमीरख़ाँ को एक सेना के साथ भेजा । तुग़
की सेना ने अमीरख़ाँ का सामना किया और उसको
दिया । यह सुनकर बादशाह बड़ा क्रोधित हुआ और
बङ्गाल की तरफ़ चल दिया । तुग़रिल लड़ाई में हार गया
उसके कुटुम्ब के सब लोग मार डाले गये । इसके बाद

बाज़ार में बलबन ने तुग़रिल के साथियों को बड़ी कड़ी सज़ा दी। लोग भय से काँपने लगे और बादशाह के अधीन हो गये। जब राजद्रोही लोग दण्ड पा चुके तब बादशाह ने अपने बेटे बग़राख़ाँ को बङ्गाल का हाकिम नियत किया और उससे कहा कि शराब कभी न पीना और दुष्ट मनुष्यों की बातों में आकर दिल्लीराज्य से कभी बिगाड़ न करना। सन् १२८७ ई० में बलबन मर गया। उसके बाद उसका पोता कैक़ुबाद गद्दी पर बैठा।

बलबन का दरबार—बलबन का दरबार एशिया के प्रसिद्ध दरबारों में से था। एशिया के बहुत-से प्रान्तों के विद्वान, रईस और सर्दार मुग़लों के आक्रमणों से व्याकुल होकर हिन्दुस्तान में भाग आये थे और बलबन के दरबार में रहने लगे थे। बलबन ने शहर के गली-कूचों के नाम बदल दिये। किसी मुहल्ले का नाम बग़दाद का कूचा और किसी गली का नाम ग़ज़नी की गली रख दिया। दरबार के नियम बड़े कड़े थे। बलबन न तो कभी स्वयं हँसता और न किसी दूसरे को अपने सामने हँसने देता था। कोई मनुष्य उसके सामने पूरी रीति से कपड़े पहिने बिना नहीं आ सकता था। वह विद्वानों और कवियों का आदर करता था। अमीर ख़ुसरो फ़ारसी का प्रसिद्ध कवि उसके समय में मौजूद था।

कैक़ुबाद—बलबन के मरने पर ग़ुलाम-वंश की शक्ति कम हो गई। कैक़ुबाद राज्य करने के योग्य नहीं था। वह अपना सारा समय आराम और भोग-विलास में व्यतीत करता था। बग़राख़ाँ ने उसको बहुत समझाया परन्तु उसने एक न सुनी। चारों ओर राज्य में उपद्रव होने लगे और राजा तथा सर्दार स्वतन्त्र होने की चेष्टा करने लगे। इतने में ख़िलजी-जाति के एक सरदार ने बादशाह को

बाज़ार में बलबन ने तुग़रिल के साथियों को बड़ी कड़ी सज़ा दी। लोग भय से काँपने लगे और बादशाह के अधीन हो गये। जब राजद्रोही लोग दण्ड पा चुके तब बादशाह ने अपने बेटे बग़राख़ाँ को बङ्गाल का हाकिम नियत किया और उससे कहा कि शराब कभी न पीना और दुष्ट मनुष्यों की बातों में आकर दिल्लीराज्य से कभी बिगाड़ न करना। सन् १२८७ ई० में बलबन मर गया। उसके बाद उसका पोता कैक़ुबाद गद्दी पर बैठा।

बलबन का दरबार—बलबन का दरबार एशिया के प्रसिद्ध दरबारों में से था। एशिया के बहुत-से प्रान्तों के विद्वान्, रईस और सर्दार मुग़लों के आक्रमणों से व्याकुल होकर हिन्दुस्तान में भाग आये थे और बलबन के दरबार में रहने लगे थे। बलबन ने शहर के गली-कूचों के नाम बदल दिये। किसी मुहल्ले का नाम बग़दाद का कूचा और किसी गली का नाम ग़ज़नी की गली रख दिया। दरबार के नियम बड़े कड़े थे। बलबन न तो कभी स्वयं हँसता और न किसी दूसरे को अपने सामने हँसने देता था। कोई मनुष्य उसके सामने पूर्ण रीति से कपड़े पहिने बिना नहीं आ सकता था। वह विद्वानों और कवियों का आदर करता था। अमीर ख़ुसरो फ़ारसी का प्रसिद्ध कवि उसके समय में मौजूद था।

कैक़ुबाद—बलबन के मरने पर ग़ुलाम-वंश की शक्ति कम हो गई। कैक़ुबाद राज्य करने के योग्य नहीं था। वह अपना सारा समय आराम और भोग-विलास में व्यतीत करता था। बग़राख़ाँ ने उसको बहुत समझाया परन्तु उसने एक न सुनी। चारों ओर राज्य में उपद्रव होने लगे और राजा तथा सर्दार स्वतन्त्र बनने की चेष्टा करने लगे। इतने में खिलजी-जाति के एक सर्दार ने कैक़ुबाद को

मार कर उसकी लाश जमुना नदी में फेंक दी। सन् १२९० ई० में कैकुबाद की मृत्यु हो जाने पर गुलाम-वंश का अन्त हो गया।

अध्याय २०

खिलजी-वंश

(सन् १२९० ई० से १३२० ई० तक)

जलालुद्दीन खिलजी—कैकुबाद के मरने पर खिलजी जाति का एक सर्दार जलालुद्दीन दिल्ली का बादशाह बन बैठा। कहते हैं कि खिलजी लोग असली तुर्क नहीं थे। जलालुद्दीन जिस समय गद्दी पर बैठा, उसकी अवस्था ७० वर्ष की थी और दिल्ली के राज्य का ऐसे कठिन समय में, जब मुग़ल हिन्दुस्तान पर बार-बार चढ़ कर आते थे, वह प्रबन्ध करने योग्य नहीं था। परन्तु वह बड़ा सज्जन और सरल प्रकृति का मनुष्य था और सबके साथ दया का बर्ताव करता था।

देवगिरि की चढ़ाई—सन् १२९४ ई० में अलाउद्दीन ने, जो बादशाह का दामाद और भतीजा था और जिसको वह बेटे के समान समझता था, मालवा पर चढ़ाई करने की आज्ञा माँगी। वह दक्षिण तक चला गया और उसने देवगिरि के यादव राजा रामदेव पर हमला किया। रामदेव लड़ाई में हार गया। उसने एलिचपुर का नगर और बहुत सा धन अलाउद्दीन को दिया। उस समय दक्षिण में बहुत धन था। कहते हैं कि अलाउद्दीन असंख्य द्रव्य लेकर वहाँ से लौटा। उसके बूढ़े चचा ने जब इस विजय का समाचार

सुना तब वह बड़ा प्रसन्न हुआ और इलाहाबाद के ज़िले में कड़ा नामक स्थान पर उससे मिलने गया। जब उसने उसे आँखों से लगाया तब अलाउद्दीन ने अपनी तलवार से उसे मार डाला। फिर उसका सिर भाले में छेदकर सारी सेना में फिराया गया ताकि सबको मालूम हो जाय कि बादशाह मारा गया।

इस हत्याकाण्ड के बाद अलाउद्दीन दिल्ली आया। वहाँ बड़ी धूमधाम से उसका स्वागत हुआ। रुपये-पैसे की ख़ूब बखेर की गई। अलाउद्दीन ने हुक्म दिया कि नगर में सब जगह जलसे हों और धनी और निर्धन सबका राज्य की ओर से सत्कार किया जाय। बड़े-बड़े जलाली सर्दार अलाउद्दीन की बढ़ती देख कर उससे आ मिले और ऊँचे-ऊँचे पदों पर नियुक्त हो गये। लोग धन पाकर अपने पहले बादशाह को भूल गये और अलाउद्दीन की चापलूसी करने लगे।

अलाउद्दीन—अलाउद्दीन ने सन् १२९५ ई० से १३१६ ई० तक राज्य किया। वह बड़ा ज़िद्दी और सख़्त बादशाह था और सदा मनमानी करता था परन्तु राज्य का प्रबन्ध करने में बड़ा कुशल था। गद्दी पर बैठते ही उसने एक बड़ा साम्राज्य बनाने की इच्छा की और इसलिए अपनी सेना चारों ओर भेजी। उसके सेनापति अलपख़ाँ और नसरतख़ाँ गुजरात में गये और समुद्र के किनारे के देश को उन्होंने अपने अधीन कर लिया। नसरतख़ाँ खम्भात से काफ़ूर को लाया जो पीछे काफ़ूर हज़ार दीनारी के नाम से प्रसिद्ध हुआ। दक्षिण को इसी ने जीता था।

अलाउद्दीन महान् सिकन्दर की बराबरी करने का दावा रखता था। वह एक नया मत चलाना और संसार के सारे देशों को जीत कर अपना साम्राज्य स्थापित करना चाहता

था। बादशाह ने इस विषय में क़ाज़ी से सलाह की
उ [illegible]
फ [illegible]
क [illegible]
सिकन्दर की तरह जीतना असम्भव है। इस हिन्दुस्तान में
बहुत-से देश ऐसे हैं जो दिल्ली का आधिपत्य नहीं मानते
उनको जीतने से बड़ा लाभ होगा। रणथम्भौर, चित्तौड़, चन्देरी
मालवा, धार, उज्जैन और पञ्जाब आदि देश अभी तक दिल्ली
राज्य के बाहर हैं। इसलिए पहले इनको जीतने का प्रय
करना चाहिए। बादशाह ने उसकी बात मान ली। अब
एक बहुत बड़ी सेना बनाने की तैयारी करने लगा।

मुग़लों के आक्रमण—परन्तु इस समय मुग़ल हिन्दु
स्तान पर बड़े ज़ोर के साथ आक्रमण कर रहे थे।
१२९९ ई० में मुग़लों का सर्दार क़ुतलग़ ख़्वाजा एक
सेना लेकर दिल्ली पर चढ़ आया। बादशाह ने अलपखाँ और
ज़फ़रखाँ की सहायता से उसको हराया और मार कर भ
दिया। मुग़लों ने ऐसे ही हमले कई बार किये और सह
मनुष्यों को मारा और लूटा परन्तु ग़ाज़ी तुग़लक़ ने
दिपालपुर का हाकिम था, उनको बार-बार मार भगा
और काबुल और लमग़ान तक उनका पीछा किया।
उद्दीन से मुग़ल ऐसे डर गये कि फिर बहुत दिन तक उन्हों
हिन्दुस्तान में आने का साहस नहीं किया।

रणथम्भौर और मेवाड़ की विजय—रणथम्भौ
पर सबसे पहले बादशाह ने चढ़ाई की। राजा लड़ाई में हार गया
उसका सारा राज्य अलाउद्दीन ने ले लिया। फिर उस
चित्तौड़ पर, जो राजपूतों की बड़ी प्रसिद्ध और प्राचीन रिया
सत थी, चढ़ाई की। अलाउद्दीन ने सुना था कि चित्तौड़

भीमसिंह और पद्मिनी को घोड़ों पर चढ़ाकर चित्तौड़गढ़ तक ले आये। मुसलमानी सेना असावधान थी। कुछ सिपाहियों ने उनका सामना भी किया परन्तु उनको राजपूतों ने मारकर पीछे हटा दिया।

इस अपमान से क्रुद्ध होकर अलाउद्दीन ने फिर चित्तौड़ पर चढ़ाई की। राजपूत योधा मुसलमानों से दिल तोड़कर लड़े परन्तु हार गये। मुसलमान जब क़िले के भीतर घुसे और रानी ने देखा कि अब बचने का कोई उपाय नहीं है तब बहुत-सी राजपूत महिलाओं के साथ वह आग में जल कर भस्म हो गई। अलाउद्दीन की सेना ने चित्तौड़ में प्रवेश कर इच्छापूर्वक ख़ून बहाया और सहस्रों मनुष्यों को मार डाला। इस प्रकार १३०३ ई० में चित्तौड़ मुसलमानों के हाथ आ गया। चित्तौड़ का नाम खिज़राबाद रक्खा गया। जालौर के राजा मालदेव को अलाउद्दीन ने हाकिम के पद पर नियुक्त किया।

जैसलमेर की चढ़ाई—दूसरी प्रसिद्ध रियासत इस समय राजपूताना में जैसलमेर की थी। बीकानेर से आगे चलकर यह रियासत रेगिस्तान में है इसलिए वहाँ अभी तक कोई मुसलमान बादशाह नहीं पहुँचा था। अलाउद्दीन की सुसज्जित सेना जैसलमेर पहुँची। राजपूत मुसलमान योधाओं के सामने ठहर न सके। वहाँ भी राजपूत महिलाओं ने अपनी प्राण-रक्षा का कोई उपाय न देखकर अपने को आग में झोंक दिया और राजपूतों के नाम को उज्ज्वल रक्खा। राजपूताना के परास्त हो जाने पर सारा उत्तरी हिन्दुस्तान, बंगाल से सिंध तक और पञ्जाब से नर्मदा तक दिल्ली के अधिकार में आ गया।

दक्षिण का हमला—उत्तरी हिन्दुस्तान को पूर्ण रीति से जीतकर अलाउद्दीन ने दक्षिण पर चढ़ाई करने की तैयारी

की। देवगिरि का राजा, जिसको अलाउद्दीन ने गद्दी पर बैठने से पहले युद्ध में हराया था, स्वतन्त्र हो गया था। सन् १३०८ ई० में मलिक काफ़ूर एक बहुत बड़ी सेना लेकर गुजरात पहुँचा। राजा कर्ण युद्ध में हार गया। काफ़ूर देवगिरि के राजा रामदेव को क़ैद कर दिल्ली ले आया परन्तु अलाउद्दीन ने उसको क्षमा कर दिया और उसके साथ दया का बर्ताव किया। रामदेव के मरने के बाद उसके बेटे ने फिर स्वतन्त्र होने की कोशिश की परन्तु काफ़ूर ने एक बड़ी सेना लेकर उस पर चढ़ाई की और उसको दबा दिया। वह युद्ध में मारा गया और सारा महाराष्ट्र मुसलमानों के हाथ आ गया।

सन् १३१० ईसवी में काफ़ूर ने बल्लाल-वंश की राजधानी द्वार-समुद्र पर चढ़ाई की और उसे जीत लिया। समस्त कर्नाटक पर उसने दिल्ली का आधिपत्य स्थापित किया। बहुत-सी धन-दौलत लेकर वह दिल्ली लौट आया। उसने फिर दक्षिण पर चढ़ाई की और तेलङ्गाना के ककातीय राजाओं की राजधानी वारंगल को भी जीत लिया। सन् १३११ ई० तक दक्षिण के सब देशों को काफ़ूर ने जीत लिया और अलाउद्दीन का राज्य कुमारी अन्तरीप तक स्थापित कर दिया। बादशाह बड़ा प्रसन्न हुआ। उसने आज्ञा दी कि दिल्ली में धूमधाम से उत्सव मनाया जाय। उसने काफ़ूर का बड़ा सम्मान किया और उसको प्रधान मन्त्री के पद पर नियुक्त किया।

अलाउद्दीन का शासन—जब उत्तर-दक्षिण के सब देश अलाउद्दीन के अधीन हो गए तब [illegible] के लिए बहुत-से नियम जारी किए। [illegible] के यहाँ दावत खाने की मनाही कर दी [illegible] दूकानें बन्द कर दीं और हुक्म दिया कि [illegible]

उसको कड़ा दण्ड दिया जायगा। उसने स्वयं शराब पी छोड़ दिया और शराब पीने के बर्तन आदि तुड़वा दिये जगह-जगह पर जासूस नियत कर दिये जो हर एक बात की ख़बर बादशाह को देते थे। दोआब के हिन्दुओं के साथ, जो हमेशा बग़ावत किया करते थे, उसने कड़ा बर्ताव किया उन पर ५० फ़ी सदी लगान लगाया, इसके अतिरि मवेशी और मकानों पर भी टैक्स लगाया। परन्तु ग़रीबों के साथ किसी प्रकार का अनुचित व्यवहार नहीं किया गया बादशाह का हुक्म था कि किसी से एक पैसा ज़ियादा लिया जाय। राज्य का कोई हाकिम किसी हिन्दू अथवा मुसलमान से घूस नहीं ले सकता था। जो ऐसा करते उन्हें कठिन दण्ड दिया जाता था। वज़ीर ने सारे उत्त भारत में मालगुज़ारी वसूल करने का ऐसा अच्छा प्रबन्ध किया कि बेईमान तथा निकम्मे अफ़सरों को बर्ख़ास्त क दिया और नियम बना दिये जिनके अनुसार सबको का करना पड़ता था।

सेना-सङ्गठन—अलाउद्दीन जानता था कि उसके साम्राज्य की रक्षा के लिए और नये देश जीतने के लिए ए सङ्गठित और सुसज्जित सेना की आवश्यकता है। इसी लि उसने एक बहुत बड़ी सेना तैयार करने का प्रयत्न किया परन्तु वह बहुत-सा रुपया ख़र्च करना नहीं चाहता था इसलिए उसने नाज, कपड़ा और अन्य पदार्थों का भा नियत कर दिया। उसने बाज़ार में हाकिम नियत कर दि जो कम भाव पर बेचनेवाले और कम तौलनेवाले व्यापा रियों और दूकानदारों को कठिन दण्ड देते थे। बाज़ार की हर एक बात बादशाह के कानों तक पहुँच जाती थी। नाज [illegible] हैं।

गेहूँ—१ मन — ७½ जीतल
चना— ,,— ५ ,,
जौ— ,,— ४ ,,
चावल— ,,— ५ ,,
[illegible]— ,,— ५ ,,
घी—२½ सेर— १ ,,
[illegible]— ,,— १ ,,

[illegible] का [illegible] बहुत सस्ता हो गया और प्रजा के दिन [illegible] से कटने लगे।

साम्राज्य की अवनति—अलाउद्दीन जब बुड्ढा हो गया तो राज्य का प्रबन्ध भी बिगड़ गया। [illegible]

[illegible]

पूरा करने के लिए उसने एक बड़ा षड्यन्त्र रचा और बादश
के सब बेटों को क़ैद करा दिया। सन् १३१६ ई०
अलाउद्दीन मर गया। कोई-कोई कहते हैं कि काफ़ूर ने उ
विष दे दिया। बादशाह के मरते ही चारों ओर उपद्रव हो
लगे। दक्षिण और महाराष्ट्र स्वतन्त्र हो गये। उत्तरी हिन्दुस्ता
में भी अशान्ति फैल गई। काफ़ूर ने बादशाह के एक छो
बेटे को गद्दी पर बिठाया, परन्तु वह बहुत दिन तक जीवि
नहीं रहा। राज्य का सब काम काफ़ूर स्वयं करता था। ३
दिन के बाद काफ़ूर भी मारा गया। उसके मारे जाने
बाद .क़ुतुबुद्दीन मुबारकशाह सन् १३१६ ई० में गद्दी पर बैठा

.क़ुतुबुद्दीन मुबारकशाह—.क़ुतुबुद्दीन बड़ा दुराचा
बादशाह था। वह अपना सारा समय भोगविलास में व्यती
करता था और बाज़ारों में और नगर की सड़कों पर स्त्रियों
कपड़े पहनकर घूमता और गाता-बजाता फिरता था। इस
उसके अमीर और सर्दार बहुत अप्रसन्न हो गये थे। अलाउद्दी
के समय के अमीरों के साथ वह बड़ी नीचता का बर्ताव कर
था। उनका अपमान करने के लिए उसने एक नीच जाति
मनुष्य को, जिसका नाम .ख़ुसरू* था, अपना मंत्री बना
था। .ख़ुसरूख़ाँ ने धीरे धीरे अपना प्रभाव बढ़ाया और अप
जाति के बहुत-से लोगों को महल में आने-जाने की आज्ञ
दिलवा दी। दो वर्ष बाद उसने .क़ुतुबुद्दीन को महल में मा
डाला और सन् १३२० ई० में वह स्वयं बादशाह बन बैठा

नासिरुद्दीन—.ख़ुसरू ने अपना नाम नासिरुद्दीन रक्ख
और मुसलमानों पर अत्याचार करना आरम्भ किया। उस

* ख़ुसरू गुजरात का रहनेवाला था और परवारी जाति में
था। परवारी गुजरात में एक नीच जाति होती है।

.क़ुरान और मसजिदों का बड़ा निरादर किया और मुसलमानों को बहुत दुख दिया। यह दशा देखकर पुराने अमीर और अफ़सर बड़े दुखी हुए।

फ़खरुद्दीन जूना ने, जो पीछे से मुहम्मद तुग़लक़ के नाम से दिल्ली की गद्दी पर बैठा, अपने बाप ग़ाज़ी तुग़लक़ से,—जो दिपालपुर का हाकिम था,—सब वृत्तान्त जाकर कहा। ग़ाज़ी तुग़लक़ ने एक बड़ी सेना लेकर दिल्ली पर चढ़ाई की। .ख़ुसरू ने ख़ज़ाने का रुपया सिपाहियों और अपने साथियों में ख़ूब लुटाया परन्तु लड़ाई में उसकी हार हुई और वह मारा गया। लड़ाई समाप्त होने पर ग़ाज़ी तुग़लक़ ने सब लोगों से पूछा कि अलाउद्दीन की सन्तान में से कोई मौजूद है या नहीं। उत्तर मिला, नहीं। तब सब अमीरों की सलाह से ग़ाज़ी तुग़लक़ सन् १३२० ई० में राजसिंहासन पर बैठा।

मुसलमानों के राज्य को हिन्दुस्तान में स्थापित हुए सौ या सवा सौ वर्ष हुए थे। भिन्न-भिन्न मुसलमानी वंशों के राजा गद्दी पर बैठे। समय लड़ाई-झगड़े का था, इसलिए बादशाह बहुधा वही लोग हुए जो स्वयं वीर और पराक्रमी थे। मुग़लों के हमलों और हिन्दुओं की शत्रुता के कारण इस बात की आवश्यकता थी कि दिल्ली का बादशाह एक बड़ी सुसज्जित सेना रक्खे और स्वयं वीर योधा हो। .ख़ुसरू के समय में दिल्ली के राज्य की प्रतिष्ठा बहुत कम हो गई परन्तु किसी हिन्दू राजा ने दिल्ली पर चढ़ाई करने की इच्छा नहीं की। इसका कारण यह था कि हिन्दू राजा अपने-अपने राज्य स्थापित करने में लगे हुए थे। बाहर के देशों की उन्हें तनिक भी परवा नहीं थी।

पूरा करने के लिए उसने एक बड़ा षड्यन्त्र रचा और बादशा[illegible] के सब बेटों को क़ैद करा दिया। सन् १३१६ ई० [illegible] अलाउद्दीन मर गया। कोई-कोई कहते हैं कि काफ़ूर ने इ[illegible] विष दे दिया। बादशाह के मरते ही चारों और उपद्रव [illegible] लगा। दक्षिण और महाराष्ट्र [illegible]। उसकी हिन्दुस्ता[illegible] में भी अशान्ति फैल [illegible] बेटे को गद्दी पर बिठा [illegible] नहीं रहा। राज्य का [illegible] दिन के बाद काफ़ूर [illegible] बाद क़ुतुबुद्दीन मुबारक [illegible]

क़ुतुबुद्दीन मुबारकशाह—क़ुतुबुद्दीन बड़ा दुराच[illegible] बादशाह था। वह अपना सारा समय भोगविलास में व्यती[illegible] करता था और बाजारों में और नगर की सड़कों पर स्त्रियों [illegible] कपड़े पहनकर घूमता और गाना-बजाता फिरता था। इस[illegible] उसके अमीर और सर्दार बहुत अप्रसन्न हो गये थे। अलाउद्दी[illegible] के समय के अमीरों के साथ वह बड़ी नीचता का बर्ताव क[illegible] था। उनका अपमान करने के लिए उसने एक नीच जाति [illegible] मनुष्य को जिसका नाम खुसरू था, अपना मंत्री बना[illegible] [illegible] और अपना प्रभाव बढ़ाया और [illegible] [illegible] क़ुतुबुद्दीन का [illegible] [illegible] बादशाह बन बैठा।

नासिरुद्दीन [illegible]

कुरान और मसजिदों का बड़ा निरादर किया और मुसलमानों को बहुत दुख दिया। यह दशा देखकर पुराने अमीर और अफ़सर बड़े दुखी हुए।

फ़ख़रुद्दीन जूना ने, जो पीछे से मुहम्मद तुग़लक़ के नाम से दिल्ली की गद्दी पर बैठा, अपने बाप ग़ाज़ी तुग़लक़ से,—जो दिपालपुर का हाकिम था,—सब वृत्तान्त जाकर कहा। ग़ाज़ी तुग़लक़ ने एक बड़ी सेना लेकर दिल्ली पर चढ़ाई की। ख़ुसरू ने ख़ज़ाने का रुपया सिपाहियों और अपने साथियों में ख़ूब लुटाया परन्तु लड़ाई में उसकी हार हुई और वह मारा गया। लड़ाई समाप्त होने पर ग़ाज़ी तुग़लक़ ने सब अमीरों से पूछा कि अलाउद्दीन की सन्तान में से कोई जीवित है या नहीं। उत्तर मिला, नहीं। तब सब अमीरों की सलाह से ग़ाज़ी तुग़लक़ सन् १३२० ई० में राजसिंहासन पर बैठा।

मुसलमानों के राज्य को हिन्दुस्तान में स्थापित हुए [illegible] वर्ष हो गये थे। [illegible] मुसलमान [illegible] गद्दी पर बैठे। [illegible] हुए [illegible] और [illegible] के [illegible] और हिन्दुओं की [illegible] कि दिल्ली [illegible] और [illegible] दिल्ली के [illegible] की [illegible] हिन्दू [illegible] से दिल्ली पर चढ़ाई [illegible] कि हिन्दू [illegible] करने से [illegible] दिल्ली के [illegible] नहीं है।

अध्याय २१

तुग़लक़-वंश

(सन् १३२० ईसवी से सन् १४१४ ईसवी तक)

ग़यासुद्दीन तुग़लक़—सन् १३२० ई० में ग़ाज़ी तुग़लक़, ग़यासुद्दीन तुग़लक़ के नाम से, बादशाह हुआ। कहते हैं कि उसका बाप मुसलमान था परन्तु उसकी माँ पञ्जाब की एक जाटनी थी। ग़यासुद्दीन नेक और दयालु बादशाह था। उसके समय में उसके बेटे जूनाख़ाँ ने, जो पीछे से मुहम्मद तुग़लक़ के नाम से गद्दी पर बैठा, वारंगल को जीता और उसे दिल्ली-राज्य में मिला लिया। जब बंगाल में बग़ावत हुई तब बादशाह स्वयं वहाँ गया और उसने शान्ति स्थापित की। उसके समय में प्रजा सुखी थी। कर मामूली लिया जाता था, और प्रजा के साथ अच्छा बर्ताव होता था। बादशाह अपने धर्म का पाबंद था। वह अपने मन्त्रियों की सलाह के बिना कोई काम नहीं करता था। बादशाह जब बंगाल से लौट कर आया तब उसके बेटे जूना ने दिल्ली से थोड़ी दूर पर उसके स्वागत के लिए एक महल बनवाया। बादशाह अभी भोजन कर रहा था कि महल गिर पड़ा और वह और उसका एक छोटा बेटा उसके नीचे दबकर मर गये।

मुहम्मद तुग़लक़—सन् १३२५ ई० में ग़यासुद्दीन का बेटा मुहम्मद तुग़लक़ गद्दी पर बैठा। मुहम्मद बड़ा योग्य और महत्त्वाकांक्षी बादशाह था। दिल्ली की गद्दी पर जितने बादशाह हुए उन सबमें वह चतुर और विद्वान था। इतिहास-लेखकों ने उसको [illegible] है परन्तु यह उनकी भूल है। वह

पागल तो नहीं था वरन् बुद्धिमान् था और बहुत अच्छा इन्साफ़ करता था।

वह अपने मज़हब का पाबन्द था। लोगों को नमाज़ की ताक़ीद करता था और जो उसकी आज्ञा नहीं मानते थे उन्हें कठिन दण्ड देता था। उसके दरबार में बड़े-बड़े विद्वान् और मौलवी लोग रहते थे जिनके साथ वह बड़ी विद्वत्ता के साथ वाद-विवाद करता था। बादशाह स्वयं निहायत ख़ुशख़त लिखता और वक्तृता देने में प्रवीण था। उसकी उदारता की मुसलमान इतिहासकारों ने मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की है। जो लोग उसके दरबार में आते थे उन्हें वह लाखों रुपया देता और उनका सत्कार करता था। परन्तु इस बादशाह में एक दोष यह था कि अपराधियों को बड़ा कठिन दण्ड देता था और जिस बात की धुन उसे सवार हो जाती उसे पूरा करके छोड़ता था, चाहे प्रजा को कितना ही कष्ट क्यों न हो।

मुहम्मद की विजय—गद्दी पर बैठने के थोड़े ही दिन बाद उसने सारे देश को अपने अधीन कर लिया। दक्षिण को भी जीतकर उसने साम्राज्य में सम्मिलित कर लिया। सब मिलाकर उसके राज्य में २३ सूबे थे और प्रत्येक सूबे का शासन-प्रबन्ध योग्य और अनुभवी हाकिमों-द्वारा होता था। सन् १३२६ ई० में मुग़लों ने फिर चढ़ाई की परन्तु बादशाह से बहुत-सा धन पाकर वे अपने देश को लौट गये।

राज्य-प्रबन्ध—राजसिंहासन पर बैठने के थोड़े ही दिन बाद उसने दोआब के ज़िमींदारों पर कर बढ़ा दिया। इस कारण प्रजा को बड़ा कष्ट हुआ किसान अपने खेत छोड़ कर भाग गये और बादशाह के हाकिमों ने उनके साथ बड़ी निर्दयता का बर्ताव किया।

मुहम्मद तुग़लक़ का राज्य दक्षिण में बहुत दूर तक फै
हुआ था। इधर दिल्ली दक्षिण से बहुत दूर थी। वहाँ
साम्राज्य के सारे सूबों का प्रबन्ध भली भाँति नहीं हो सक
था। इसलिए बादशाह ने देवगिरि को अपनी राजधानी बना
और दौलताबाद उसका नाम रक्खा। यह स्थान उसके रा
के बीच में था। यहाँ से उत्तर-दक्षिण दोनों ओर के प्रा
का प्रबन्ध भली भाँति हो सकता था। दिल्ली के लोगों
हुक्म दिया कि वे अपना माल-असबाब लेकर दौलताबाद
तरफ़ चलें। बहुत-से लोग तो मार्ग में ही मर गये और
बचे-खुचे वहाँ पहुँचे वे दिल्ली लौटने की इच्छा करते लगे
यद्यपि बादशाह ने मार्ग में अनेक सुविधाएँ कर दी थीं तब
लोगों को बड़ा कष्ट हुआ। फिर बादशाह ने लौटने का हु
दिया और बेचारे दिल्ली-निवासी अनेक कष्ट सहते हुए अ
घरों को चल पड़े। इससे दिल्ली की पुरानी रौनक़ जाती
और प्रजा बादशाह से अप्रसन्न हो गई।

इसी समय मेंह न पड़ने के कारण खेती ख़राब हो
और धन की कमी को पूरा करने के लिए बादशाह ने
का सिक्का चलाया और हुक्म दिया कि यह सिक्का चाँदी-
के सिक्के के समान समझा जावे। अब क्या था, सब
सिक्का बनाने की सनक सवार हुई। इसका परिणाम यह हुआ
कि लोगों ने अपने घरों में सहस्रों सिक्के बना लिये। फि
क्रोधित होकर बादशाह ने नये सिक्के का चलन बन्द क
दिया और आज्ञा दी कि लोग सरकारी ख़ज़ाने से नये सिक्के
के बदले चाँदी-सोने के सिक्के ले जावें। इससे राज्य को बड़ी
हानि हुई और ख़ज़ाने में से बहुत-सा रुपया बिना आवश्यकता
के बाहर निकल गया।

बादशाह विदेशियों का बड़ा आदर करता था। उसके
दरबार में तुर्किस्तान, फ़ारस, चीन, ख़ुरासान आदि देशों के

लोग रहते और पुरस्कार पाते थे। ख़ुरासानी सरदारों ने बादशाह को अपने देश पर चढ़ाई करने के लिए उत्तेजित किया था परन्तु कई कारणों से वह ऐसा करने से रुक गया। इतिहास-लेखकों ने लिखा है कि इस बादशाह ने चीन पर चढ़ाई करने का भी यत्न किया था; किन्तु यह उनकी भूल है। उसने चीन को जीतने की कभी इच्छा ही नहीं की। हिमालय की ओर एक शक्तिशाली पहाड़ी राजा था जिस पर चढ़ाई की गई थी। उसने दिल्ली का आधिपत्य स्वीकार कर लिया। यह सच है कि पहाड़ी देश होने के कारण सेना को विशेष कष्ट हुआ और पहाड़ी लोगों ने शाही सेना के बहुत-से सिपाहियों को मार डाला।

अशान्ति का फैलना—जैसा कि पहले कह चुके हैं, यह बादशाह छोटे से अपराध के लिए भी बड़ा कठिन दण्ड देता था। इसलिए लोग उससे अप्रसन्न हो गये। मेंह न पड़ने के कारण सारे देश में आपत्ति फैल गई। उत्तरी हिन्दुस्तान के लोग भूखों मरने लगे। देश में चारों ओर उपद्रव फैलने लगा और प्रान्तों के सूबेदार स्वतन्त्र होने की चेष्टा करने लगे। पहले तो बादशाह ने राज-विद्रोह को दबाया परन्तु जब दक्षिण में उपद्रव आरम्भ हुआ तब उसको सफलता न हुई। विदेशीय लोगों ने, जो देवगिरि और गुजरात में आकर रहे थे, बलवा किया और लड़ाई ठान ली। सन् १३४७ ई० में देवगिरि मुहम्मद तुग़लक़ के हाथ से जाता रहा और हसन कांगू ने बहमनी-वंश की नींव डाली। सन् १३३६ ई० में हरिहर ने विजयनगर राज्य की नींव डाली और उसने बहुत-सा दक्षिण का भाग सम्मिलित कर लिया। गुजरात के उपद्रव को शान्त करने को मुहम्मद ने स्वयं यत्न किया परन्तु सफलता न मिली। अन्त में बीमार होकर वह सन् [illegible] ई० में सिन्ध

में मर गया। साम्राज्य के सब प्रान्तों में अशान्ति फैल गई बङ्गाल पहले ही स्वतन्त्र हो चुका था। अब दक्षिण भी इ से निकल गया। कर्नाटक और तेलङ्गाने के राजा स्वतन्त्र गये।

मुहम्मद की विफलता—मुहम्मद तुग़लक़ पक्षप रहित शासक था। उसने हिन्दुओं के साथ कठोरता बर्ताव नहीं किया। उसकी बुद्धि की विलक्षणता की स मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की है। परन्तु वह क्रोधी और उता था। वह चाहता था कि लोग शीघ्रता से उसकी आज्ञा पालन करें। ये आज्ञाएँ बड़ी कठिन होती थीं। यही क था कि उसे अपनी आशाओं के विरुद्ध दुःख के बदले उठाना पड़ा। साम्राज्य का विस्तार इतना अधिक हो था कि दिल्ली से उसका यथोचित प्रबन्ध करना असम्भ ही था। वीर होकर मुग़लों को घूस देना, योग्य और बुद्धि होकर बिना सोचे-समझे राजधानी बदल देना और तां सिक्का चलाना इत्यादि काम इतिहासकारों के मत क करते हैं कि उसमें भिन्न-भिन्न प्रकार के गुण मौजूद थे वह अस्थायी प्रकृति का मनुष्य था।

इस बादशाह के समय में अफ्रीका-निवासी इब्न नामक यात्री हिन्दुस्तान में आया था। उसने बादशा राज्य-प्रबन्ध और दरबार का हाल लिखा है। बादशाह ने दिल्ली का क़ाज़ी नियत किया था और अपना दूत ब धान का अन्त था

फ़ीरोज़ तुग़लक़ (१३५१-८८ ई०)—मुहम्मद तु

* [illegible] तुग़लक [illegible]

* [illegible] १३८८ ई० तक [illegible]

फ़ीरोज़ स्वभाव का अच्छा था और दीन-दुखी मनुष्यों की सदैव सहायता करता था। परन्तु वह अपने मज़हब का पाबन्द था और क़ुरान के नियमों का पूर्ण रीति से अनुशीलन करता था। मुल्ला और मौलवियों की सलाह के बिना कोई काम नहीं करता था। उसने एक पुस्तक लिखी है जिसका नाम 'फ़तूहात फ़ीरोज़शाही' है जिसमें उसने अपने जीवन-चरित्र का वर्णन किया है। उसके पढ़ने से पता लगता है कि बादशाह इस्लाम धर्म का दृढ़ अनुयायी था और उसकी उन्नति के लिए भरसक प्रयत्न करता था।

बङ्गाल की स्वतन्त्रता—फ़ीरोज़ न तो अलाउद्दीन के समान शूरवीर था और न मुहम्मद तुग़लक़ की तरह विद्वान्। वह साधारण मनुष्य था और ऐसे कठिन समय में, जब कि दिल्ली-राज्य को उसके शत्रु चारों ओर से घेरे हुए थे, साम्राज्य को नहीं सम्भाल सकता था। राजसिंहासन पर बैठने के दो वर्ष बाद ही उसे बङ्गाल के हाकिम शमसुद्दीन से लड़ना पड़ा। फ़ीरोज़ नहीं चाहता था कि निर्दोष मुसलमान युद्ध में मारे जायँ, इसलिए उसने शीघ्र ही सन्धि कर ली। शमसुद्दीन स्वतन्त्र हो गया। उसने अपना राज्य दिल्ली से अलग कर लिया। दक्षिण को फिर से जीतने की फ़ीरोज़ ने इच्छा भी नहीं की। यह ठीक ही किया। क्योंकि दक्षिण को फिर से दिल्ली के राज्य में सम्मिलित करना उसकी शक्ति के बाहर था।

फ़ीरोज़ का शासन-प्रबन्ध—फ़ीरोज़ के शासन-प्रबन्ध की मुसलमान इतिहासकारों ने प्रशंसा की है। उसका मन्त्री ख़ानजहाँ मक़बूल योग्य पुरुष था और हर एक काम की स्वयं देख-भाल करता था। फ़ीरोज़ ने बहुत-से मदरसे और शफ़ा-ख़ाने खोले, नहरें निकालीं, सड़कें बनवाईं और इन मदरसों के लिए ख़ानक़ाहें बनवाईं जहाँ उनको भोजन मिलता था।

बहुत-सी दीन मुसलमानों की बेटियों के उसने विवाह कराये और बहुत-सा दान दिया। उसने बहुत-से नये नियम जारी किये जिनसे प्रजा को बड़ा लाभ हुआ। बादशाह बेरोज़गार लोगों की जीविका का बन्दोबस्त करता था। गुलामों को राज्य से वज़ीफ़े मिलते थे और उन्हें सब प्रकार की शिक्षा दी जाती थी। उनके प्रबन्ध के लिए एक अलग महकमा था जिसमें सरकारी अफ़सर काम करते थे। चीज़ों के भाव बहुत सस्ते थे। लोगों को किसी प्रकार की तकलीफ़ नहीं थी। बादशाह को बाग़ लगाने का बड़ा शौक़ था। उसने दिल्ली के आसपास ही १२०० बग़ीचे लगवाये थे, जिनसे अच्छी आमदनी होती थी। बहुत-सी प्राचीन इमारतों की मरम्मत कराई गई जिनका ज़िक्र बादशाह ने अपने जीवनचरित्र में किया है। जिन लोगों ने मुहम्मद तुग़लक़ के समय में कष्ट सहे थे उनके साथ उसने दया का बर्ताव किया और जिनका धन ले लिया गया था उनको धन देकर सन्तुष्ट किया। कड़ी सज़ा देना, लोगों के हाथ-पैर आदि काटना उसने बिलकुल बन्द कर दिया।

दिल्ली-राज्य की अवनति— गुलामों की संख्या फ़ीरोज़ के समय में बहुत बढ़ गई और यह राष्ट्र के दुर्बल हो जाने का एक कारण हुआ। मुसलमान भी वैसे उत्साही योधा नहीं रहे जैसे अलाउद्दीन के समय में थे। फ़ीरोज़ स्वयं वीर नहीं था और लड़ाई से उसे अरुचि था। इसका परिणाम यह हुआ कि मुसलमानी राज्य का भय लोगों के [illegible] से जाता रहा। अब [illegible] की अवनति आरम्भ हो गई।

फ़ीरोज़ के [illegible] और [illegible] हिन्दुस्तान थोड़े दिन तक [illegible] पहले हो

[illegible]

तैमूर का हमला— [illegible]

[illegible]

[illegible]

इस हमले ने दिल्ली-राज्य को तहस नहस कर दिया। देश का केन्द्र पर ही काबू नहीं चला गया, वरन अराजकता फैल गई जिससे प्रजा को बड़ा कष्ट हुआ। तातारी सिपाही हिन्दुस्तान में अधिक नहीं ठहरे परन्तु उनके कारण लोगों को बहुतेरे दुख उठाने पड़े। सारे देश में उपद्रव होने लगे। ऐसी दशा में बहुत से हाकिम और सूबेदार स्वतन्त्र हो गए और मनमानी करने लगे।

अध्याय २२

सैयद-वंश

(सन् १४१४ ई० से १४५१ ई० तक)

तैमूर के बाद मुल्तान के सूबेदार सैयद खिज्रखाँ ने दिल्ली की गद्दी पर अधिकार कर लिया। यह और उसके वंश के लोग १४५१ ई० तक राज्य करते रहे। [illegible]

[illegible]

तैमूरलंग के
अरब सागर
विजयनगर
बंगाल की खाड़ी

इस हमले ने दिल्ली-राज्य को नष्ट कर दिया। देश का केवल धन ही बाहर नहीं चला गया, वरन् अराजकता फैल गई जिससे प्रजा को बड़ा कष्ट हुआ। तातारी सिपाही हिन्दुस्तान में अधिक नहीं ठहरे परन्तु उनके कारण लोगों को बड़े-बड़े दुख उठाने पड़े। सारे देश में उपद्रव होने लगे। ऐसी दशा में बहुत से हाकिम और सूबेदार स्वतन्त्र हो गये और मनमानी करने लगे।

अध्याय २२

सैयद-वंश

(सन् १४१४ ई० से १४५१ ई० तक)

तैमूर के बाद मुलतान के सूबेदार सैयद खिज़रखाँ ने दिल्ली की गद्दी पर अधिकार कर लिया। वह और उसके बेटे-पोते १४५१ ई० तक राज्य करते रहे; परन्तु आगरा और दिल्ली ही उनके अधिकार में रहे, क्योंकि तैमूर के चले जाने के बाद हिन्दुस्तान में बहुत-सी छोटी-छोटी स्वतन्त्र रियासतें बन गई थीं। ये रियासतें पञ्जाब, गुजरात, बङ्गाल, जौनपुर और मालवा थीं। दक्षिण में बहमनी-राज्य*, जिसकी नींव सन् १३४७ ई० में एक अफ़गान हसन गाँगू ने डाली थी, अब बहुत बढ़ गया था। दक्षिण का अधिकांश भाग उसमें आ गया। मैसूर और कर्नाटक भी उसमें सम्मिलित हो गये। उसके पूर्व में वरङ्गल और तेलिङ्गाना की हिन्दू

---

* बहमनी का ब्राह्मण शब्द से कोई सम्बन्ध नहीं है, जैसा बहुत सी इतिहास की पुस्तकों में लिखा है। मुसल्मान इतिहासकारों ने बहमनी वंश के मूल-पुरुष का नाम हसन गंगू लिखा है।

रियासतें थीं। दक्षिण में कृष्णा नदी से कन्याकुमारी तक प्रसिद्ध हिन्दू रियासत विजयनगर थी और पश्चिम में रियासत खानदेश थी। बहमनी-राज्य की राजधानी गुलबर्गा थी। बहमनी-वंश के बादशाहों की दक्षिण के हिन्दू राजाओं से बहुत काल तक लड़ाई होती रही। जिस समय सैयद-वंश के राजा दिल्ली में राज्य करते थे, बहमनी-राज्य उन्नति पर था। इस वंश के राजाओं ने तेलङ्गाना का बहुत-सा भाग जीत कर अपने राज्य में मिला लिया और विजयनगर पर हमला करके वहाँ के राजा को सन्धि करने पर विवश किया।

अध्याय २३

बहमनी-वंश

दिल्ली के सुलतान और दक्षिण—मुसलमानों के आक्रमण के पहले दक्षिण में कई शक्तिमान और विस्तीर्ण राज्य थे। पूर्व में आंध्र-वंश का राज्य था जिसे तेलङ्गाना कहते थे। इसकी राजधानी वारंगल थी। पश्चिमी भाग महाराष्ट्र कहलाता था जहाँ यादव राजपूत राज्य करते थे। देवगिरि इसकी राजधानी थी। दक्षिणी भाग कर्नाटक के नाम से प्रसिद्ध था जिसकी राजधानी द्वारसमुद्र थी। यहाँ बल्लालवंशीय राजपूत राज्य करते थे। दक्षिण में और भी राजपूतों के राज्य थे परन्तु मुख्य यही थे और इन्हीं को मुसलमानों का सामना करना पड़ा था। दिल्ली का पहला सुलतान अलाउद्दीन था जिसने दक्षिण पर हमला किया। सन् १२९४ ई० में, अपने चचा जलालुद्दीन के समय में, उसने देवगिरि

राजा रामदेव पर चढ़ाई की थी। परन्तु राजा ने बहुत-सा र देकर अपना पीछा छुड़ा लिया था। जब अलाउद्दीन ने बादशाह हुआ तब उसने दक्षिण को जीतने की फिर न्छा की। उलुगख़ाँ ने, जो उसका प्रधान सेनापति ा, देवगिरि को जीत लिया और राजा कर्ण की बेटी वनदेवी को भी पकड़ लिया। इसके बाद काफ़ूर ने सन् १३१० ई० से १३१६ ई० तक दक्षिण पर कई बार चढ़ाई की। उसने हिन्दू राजाओं को तहस-नहस कर डाला और वारंगल, द्वारसमुद्र, मदुरा आदि सब स्थानों को जीत लिया। वह अतुल धन-सम्पत्ति लेकर हिन्दुस्तान को लौटा।

अलाउद्दीन की मृत्यु के समय दक्षिण दिल्ली-राज्य के अधीन था। सन् १३१८ ई० में देवगिरि के राजा ने विद्रोह का झण्डा खड़ा किया परन्तु क़ुतुबुद्दीन मुबारकशाह ने, जो उस समय दिल्ली का सुलतान था, उसे दबा दिया और विद्रोहियों को कड़ा दण्ड दिया। परन्तु उसकी मृत्यु के पीछे दिल्ली-साम्राज्य की दशा बिगड़ गई। जो बहुत-से राज्य अलाउद्दीन ने जीते थे, स्वतन्त्र बन बैठे। दक्षिण में भी ऐसा ही हुआ। वारंगल आदि के राजाओं ने कर देना बन्द कर दिया। इस पर ग़यासुद्दीन तुग़लक़ ने, जो सन् १३२० ई० में दिल्ली का बादशाह हो गया था, वारंगल पर चढ़ाई की और उसे जीत लिया। सन् १३२५ ई० में जब मुहम्मद तुग़लक़ गद्दी पर बैठा, दिल्ली-साम्राज्य का विस्तार अधिक था। उसने दक्षिण के सारे देशों पर अपना अधिकार स्थापित कर लिया और राजाओं से कर वसूल किया। परन्तु मुहम्मद तुग़लक़ योग्य और बुद्धिमान् होने पर भी अपने राज्य का भली भाँति प्रबन्ध न कर सका।

सन् १३३५ ई० के बाद [illegible]
[illegible] इसके [illegible]

रियासतें थीं। दक्षिण में कृष्णा नदी से कन्याकुमारी तक प्रसिद्ध हिन्दू रियासत विजयनगर थी और पश्चिम में रियासत ख़ानदेश थी। बहमनी-राज्य की राजधानी गुलबर्गा थी। बहमनी-वंश के बादशाहों की दक्षिण के हिन्दू राजाओं से बहुत काल तक लड़ाई होती रही। जिस समय सैयद-वंश के राजा दिल्ली में राज्य करते थे, बहमनी-राज्य उन्नति पर था। इस वंश के राजाओं ने तेलङ्गाना का बहुत-सा भाग जीत कर अपने राज्य में मिला लिया और विजयनगर पर हमला करके वहाँ के राजा को सन्धि करने पर विवश किया।

अध्याय २३

बहमनी-वंश

दिल्ली के सुलतान और दक्षिण—मुसलमानों के आक्रमण के पहले दक्षिण में कई शक्तिमान और निर्भीक राज्य थे। पूर्व में आंध्र-वंश का राज्य था जिसे तेलङ्गाना कहते थे। इसकी राजधानी वारंगल थी। पश्चिमी भाग महाराष्ट्र कहलाता था जहाँ यादव राजपूत राज्य करते थे। देवगिरि इसकी राजधानी थी। दक्षिणी भाग कर्नाटक के नाम से प्रसिद्ध था जिसकी राजधानी द्वारसमुद्र थी। यहाँ बल्लालवंशीय राजपूत राज्य करते थे। दक्षिण में और भी राजपूतों के राज्य थे परन्तु मुख्य यही थे और इन्हीं को मुसलमानों का सामना करना पड़ा था। दिल्ली का पहला सुलतान अलाउद्दीन था जिसने दक्षिण पर हमला किया। सन् १२९४ ई० में [illegible] अलाउद्दीन के समय में, उसने देवगिरि

के राजा रामदेव पर चढ़ाई की थी। परन्तु राजा ने बहुत-सा धन देकर अपना पीछा छुड़ा लिया था। जब अलाउद्दीन स्वयं बादशाह हुआ तब उसने दक्षिण को जीतने की फिर इच्छा की। उलुगख़ाँ ने, जो उसका प्रधान सेनापति था, देवगिरि को जीत लिया और राजा कर्ण की बेटी देवलदेवी को भी पकड़ लिया। इसके बाद काफ़ूर ने सन् १३१० ई० से १३१६ ई० तक दक्षिण पर कई बार चढ़ाई की। उसने हिन्दू राजाओं को तहस-नहस कर डाला और वारंगल, द्वारसमुद्र, मदुरा आदि सब स्थानों को जीत लिया। वह अतुल धन-सम्पत्ति लेकर हिन्दुस्तान को लौटा।

अलाउद्दीन की मृत्यु के समय दक्षिण दिल्ली-दरबार के अधीन था। सन् १३१८ ई० में देवगिरि के राजा ने विद्रोह का झण्डा खड़ा किया परन्तु क़ुतुबुद्दीन मुबारकशाह ने, जो उस समय दिल्ली का सुलतान था, उसे दबा दिया और विद्रोहियों को कड़ा दण्ड दिया। परन्तु उसकी मृत्यु के पीछे दिल्ली-साम्राज्य की दशा बिगड़ गई। जो बहुत-से राज्य अलाउद्दीन ने जीते थे, स्वतन्त्र बन बैठे। दक्षिण में भी ऐसा ही हुआ, वारंगल आदि के राजाओं ने कर देना बन्द कर दिया। इस पर ग़यासुद्दीन तुग़लक़ ने, जो सन् १३२० ई० में दिल्ली का बादशाह हो गया था, वारंगल पर चढ़ाई की और उसे जीत लिया। सन् १३२५ ई० में जब मुहम्मद तुग़लक़ गद्दी पर बैठा, दिल्ली-साम्राज्य का विस्तार अधिक था। उसने दक्षिण के सारे देशों पर अपना अधिकार स्थापित कर लिया और राजाओं से कर वसूल किया। परन्तु मुहम्मद तुग़लक़ योग्य और बुद्धिमान होने पर भी अपने राज्य का भली भाँति प्रबन्ध न कर सका।

सन् १३३६ [illegible] के बाद उसके राज्य से [illegible] स्वतन्त्र हो [illegible] १३४७ ई० [illegible] —एक तो बहमनी का [illegible]

दूसरे विदेशीय अमीरों के षड्यन्त्र। ये अमीर हिन्दुस्तान में आकर बस [illegible] करता था। [illegible] परन्तु उन्हें [illegible] उत्तरी हिन्दुस्तान में विद्रोह फैलते देख दक्षिण के मुसलमानों ने भी बगावत की। विदेशीय अमीरों ने एका कर लिया और दक्षिण में बहुत गड़बड़ मचा दिया। सन् १३४७ ई० में हसन गंगू अथवा कांगू नामक अफ़ग़ान ने, जो बादशाह के यहाँ नौकर था, बगावत की। उसने बहुत-से अमीरों को अपनी ओर मिला लिया और बादशाही सेना को युद्ध में पराजित किया। वह स्वयं बादशाह बन बैठा। गुलबर्गा को उसने अपनी राजधानी बनाया। हसन कांगू फ़ारस के बादशाह बहमनशाह के वंश में से था। उसने बहमनी की उपाधि धारण की। उसके पीछे उसके वंशज बहमनी कहलाने लगे।

हसन कांगू—फ़रिश्ता नामक मुसलमान इतिहासकार ने लिखा है कि हसन दिल्ली में गंगू नामक ब्राह्मण के यहाँ नौकर था। एक दिन उसे हल जोतते समय खेत में गड़ा हुआ धन मिला। उसने जाकर सब अपने स्वामी को दे दिया। ब्राह्मण ज्योतिषी था और बादशाह के दरबार में आया-जाया करता था। उसने बादशाह से हसन की ईमानदारी की प्रशंसा की और उसे सवारों में भर्ती करा दिया। किन्तु यह कथा कपोलकल्पित है। इसका कोई ऐतिहासिक प्रमाण नहीं है। हसन किसी ब्राह्मण के यहाँ नौकर नहीं था। बहमनी शब्द का ब्राह्मण शब्द से कुछ भी सम्बन्ध नहीं मालूम होता। असल में हसन एक अफ़ग़ान था और युवावस्था में मुहम्मद तुग़लक़ की सेना में भर्ती हुआ था, धीरे-धीरे वह घुड़सवारों का सरदार हो गया और उच्च पद पर पहुँच गया।

विजयनगर की नींव—इस गड़बड़ी के समय में हिन्दुओं ने भी स्वतंत्र होने की चेष्टा की। सन् १३३६ ई० में विजयनगर की नींव पड़ी। विजयनगर-राज्य धीरे-धीरे कृष्णा नदी से कुमारी अन्तरीप तक फैल गया और हौयसल, चोल और पाण्ड्य वंशों के राज्य का बहुत-सा भाग उसमें सम्मिलित हो गया।

विजयनगर की उन्नति—१५ वीं शताब्दी में विजयनगर दक्षिण के सब राज्यों में अधिक शक्तिमान था। इस राज्य में हिन्दुओं की विद्या और कला की बहुत उन्नति हुई। वैष्णवधर्म का प्रचार भी खूब हुआ। शासन-प्रबन्ध भी अच्छा था। प्रजा सुख से रहती थी। कर अधिक नहीं लिये जाते थे। राज्य के कर्मचारी प्रजा को कष्ट नहीं देने पाते थे। सन् १४४३ ई० में फारस देश का एक दूत, जिसका नाम अब्दुर्रज्ज़ाक़ था, दक्षिण में आया था। वह लिखता है कि विजयनगर में बड़े सुन्दर और विशाल भवन थे। नगर कई मीलों के बीच में फैला हुआ था। नगर के चारों ओर दीवारें थीं। बाज़ारों में बड़ी भीड़ रहती थी।

बहमनी और विजयनगर-राज्यों में परस्पर बैर रहता था। दोनों बहुधा परस्पर लड़ते थे। सन् १४८० ई० में पुराने वंश का अन्त हो गया और नरसिंह, जो मंत्री था, राजसिंहासन पर बैठा।

बहमनी-वंश का अन्त—बहमनी-वंश के बुरे दिन आ गये थे। सन् १४२१ ई० में अहमदशाह बहमनी ने गुलबर्गा को छोड़ कर बीदर को अपनी राजधानी बनाया। विजयनगर के राजाओं से लड़ाई होते रहे। [illegible]
[illegible] सन् १५३५ [illegible]

कूच किया और वहाँ भी लूट-मार की। उन्होंने मन्दिर और महल तोड़ डाले और प्रजा को बड़ा कष्ट दिया।

पुर्तगाली इतिहासकार फ़ैरियासूज़ा लिखता है कि मुसलमानों ने ५ महीने तक विजयनगर को लूटा। इस लूट में आदिलशाह को एक हीरा मिला जो साधारण अण्डे के बराबर था। मन्दिरों का बहुत-सा धन मुसलमानों के हाथ आया। वे मालामाल होकर अपने घरों को लौटे।

युद्ध का परिणाम—तालीकोट के युद्ध ने हिन्दुओं की शक्ति का नाश कर डाला। रामराजा की मृत्यु के पीछे बे छोटे-छोटे राजा स्वतन्त्र हो गये जो विजयनगर के अधीन थे। परन्तु विजयनगर के नाश से मुसलमानों को अधिक लाभ नहीं हुआ। जब तक यह राज्य रहा, मुसलमान बादशाह सदा युद्ध के लिए तैयार रहे। परन्तु इसका नाश ... वे आलसी हो गये और उनकी सेनाओं की शक्ति घट ... । परस्पर ईर्ष्या और द्वेष उत्पन्न होने के कारण वे एक ... के साथ युद्ध करने लगे। अन्त में इसका परिणाम यह ... दिल्ली के बादशाह ने उनको जीत लिया और अपने ... कर लिया।

अध्याय २५

लोदी-वंश

(सन १४५१ ई० से १५२६ ई० तक)

बहलोल लोदी—सैयद-वंश का राज्य थोड़े दिन तक रहा। सन १४५१ ई० में बहलोल लोदी दिल्ली का बादशा

पर बैठा। उसने जौनपुर के राजा को लड़ाई में जीत लिया। उसके बाद सन् १४८८ ई० में उसका बेटा निज़ामख़ाँ, सिकन्दर शाह़ी के नाम से, गद्दी पर बैठा। उसने अपने भाई को भगा दिया और जौनपुर को दिल्ली राज्य में मिला लिया। बिहार और तिरहुत को भी उसने जीत लिया और कर वसूल किया।

सिकन्दर लोदी का शासन-प्रबन्ध—सिकन्दर अपने मज़हब का पाबन्द था और क़ुरान के नियमों के अनुसार चलता था। परन्तु शासन करने में कुशल था। उसने अफ़ग़ान सर्दारों को दबा कर रक्खा और बग़ावत करने से रोका। सूबेदारों के हिसाब-किताब को वह स्वयं देखता और जाँच-पड़ताल करता था। उसके समय में नाज सस्ता था, दीन मनुष्यों को भोजन का सुभीता था। राज्य की तरफ़ से खेती की उन्नति के लिए यत्न किया जाता था। बादशाह किसी के साथ अनुचित सख़्ती नहीं करता था। वह हर साल दीन और असहाय लोगों की एक फ़िहरिस्त बनवाता था और उनको ६ महीने के लिए भोजन का सामान देता था। देश में अमन-चैन था और चोर-डाकुओं का डर बहुत कम था।

इब्राहीम लोदी—सिकन्दर की मृत्यु के बाद सन् १५१७ ई० में उसका बेटा इब्राहीम लोदी गद्दी पर बैठा। वह अफ़ग़ान सर्दारों के साथ अनुचित बर्ताव करता था [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

कूच किया और वहाँ भी लूट-मार की। उन्होंने मन्दिर और महल तोड़ डाले और प्रजा को बड़ा कष्ट दिया।

पुर्तगाली इतिहासकार फेरियासूजा लिखता है कि मुसलमानों ने ५ महीने तक विजयनगर को लूटा। इस लूट में आदिलशाह को एक हीरा मिला जो साधारण अंडे के बराबर था। मन्दिरों का बहुत-सा धन मुसलमानों के हाथ आया। वे मालामाल होकर अपने घरों को लौटे।

युद्ध का परिणाम—तालीकोट के युद्ध ने हिन्दुओं की शक्ति का नाश कर डाला। रामराजा की मृत्यु के पीछे वे छोटे-छोटे राजा स्वतन्त्र हो गये जो विजयनगर के अधीन थे। परन्तु विजयनगर के नाश से मुसलमानों को अधिक लाभ नहीं हुआ। जब तक यह राज्य रहा, मुसलमान बादशाह सदा युद्ध के लिए तैयार रहे। परन्तु इसका नाश होने पर वे आरामी हो गये और उनकी सेनाओं की शक्ति भी घट गई। परस्पर ईर्ष्या और द्वेष उत्पन्न होने के कारण वे एक दूसरे के साथ युद्ध करने लगे। अन्त में इसका परिणाम यह हुआ कि दिल्ली के बादशाह ने उनको जीत लिया और अपने अधीन कर लिया।

अध्याय २५

लोदी-वंश

(सन् १४५१ ई० से १५२६ ई० तक)

बहलोल लोदी—[illegible]

...न बैठा। उसने जौनपुर के राजा को लड़ाई में जीत लिया। उसके बाद सन् १४८८ ई० में उसका बेटा निज़ामख़ाँ, सिकन्दर ग़ाज़ी के नाम से, गद्दी पर बैठा। उसने अपने भाई ...र भगा दिया और जौनपुर को दिल्ली राज्य में मिला लिया। ...हार और तिरहुत को भी उसने जीत लिया और कर ...मंज़ूर किया।

सिकन्दर लोदी का शासन-प्रबन्ध—सिकन्दर अपने मज़हब का पाबन्द था और क़ुरान के नियमों के अनुसार चलता था। परन्तु शासन करने में कुशल था। उसने अफ़ग़ान सरदारों को दबा कर [illegible] करने से रोका। सूबेदारों के हिसाब-किताब को वह स्वयं देखता और जाँच-पड़ताल करता था। उसके समय में [illegible] [illegible]

इब्राहीम लोदी—[illegible]

उपाय सोचने लगे। पञ्जाब के हाकिम दौलतख़ाँ लोदी ने काबुल के बादशाह बाबर को निमन्त्रण भेजा कि आप हिन्दुस्तान पर चढ़ाई कीजिए और दिल्ली की गद्दी पर बैठिए। बाबर भला ऐसे अवसर को कब छोड़नेवाला था। हिन्दुस्तान में छोटी-छोटी बहुत-सी रियासतें बन गई थीं। दिल्ली का राज्य अत्यन्त बलहीन हो गया था। कोई राजा ऐसा न था जो बाबर का सामना करता। बाबर ने दौलतख़ाँ का निमन्त्रण स्वीकार कर लिया और हिन्दुस्तान पर चढ़ाई करने की तैयारी कर दी।

मुसलमानी शासन का प्रभाव—इस काल में मुसलमान बादशाह स्वेच्छाचारी थे। वे सर्वथा अपनी इच्छानुसार राज्य करते थे। ऐसी दशा में कभी कभी प्रजा के साथ सख़्ती का बर्ताव भी होता था। जो बादशाह अपने मज़हब की तरफ़ अधिक ध्यान देते थे वे क़ुरान के नियमों का अनुशीलन करते थे। बाज़ ऐसे भी होते थे जो क़ुरान के नियमों की अधिक पर्वाह नहीं करते थे जैसे अलाउद्दीन ख़िलजी और मुहम्मद तुग़लक़।

मुसलमान अन्य विदेशियों की तरह भारतवर्ष के निवासियों में मिल नहीं गये। परन्तु तब भी उनकी सभ्यता का हिन्दू-समाज पर बड़ा प्रभाव पड़ा।

इस्लाम का हिन्दू-धर्म पर प्रभाव—मुसलमानों के मज़हब और उनकी सभ्यता का हिन्दू-धर्म पर गहरा प्रभाव पड़ा। यों तो हिन्दू बहुतकाल से यह मानते चले आये हैं कि ईश्वर एक है और उसी की मनुष्य को पूजा करनी चाहिए। परन्तु अब धर्मोपदेशक ईश्वर-भक्ति पर अधिक ज़ोर देने लगे और कहने लगे कि जाति-पाँति का भेद व्यर्थ है। ईश्वर की दृष्टि में छोटे बड़े सब एक से हैं। समाज में सबको

मुसलमानों के आने से भारत में एक नये साहित्य का विकास हुआ। फ़ारसी में अमीर ख़ुसरो ने अद्भुत कविता की। इतिहास-लेखक भी बहुत से हुए। हिन्दी-साहित्य की भी उन्नति हुई। चन्द बरदाई ने पृथ्वीराजरासो इसी काल में लिखा। संस्कृत में भी अनेक ग्रन्थ लिखे गये। जयदेव का गीतगोविन्द इसी समय में लिखा गया था।

अध्याय २६

मुग़ल-वंश

बाबर

(सन् १५२६ ई० से १५३० ई० तक)

मुग़ल—मुग़ल शब्द का प्रयोग वास्तव में मुसलमान इतिहासकारों ने उन असभ्य लोगों के लिए किया है जो मंगोलिया में रहते थे। इन्हें मंगोल भी कहते हैं। ये लोग मुसलमान होने से पहले बिलकुल जंगली तथा निर्दयी थे। इन्होंने [illegible] के [illegible] का नाश डाला और हिन्दुस्तान पर भी कई आक्रमण किये। हम पहले कह चुके हैं कि अल्तमश, [illegible] अलाउद्दीन [illegible] के समय में इनके बार-बार [illegible] तुर्कों से मिलने लगे और [illegible] करने लगे। इस प्रकार बहुत [illegible] हिन्दुस्तान के बादशाह, जो मुग़ल [illegible] तुर्क थे। बाबर चग़ताई-वंश के

तैमूर ।

बाबर ।

इब्राहीम ने जब बाबर के आने का हाल सुना वह भी सेना लेकर पानीपत के मैदान की तरफ चला। २१ अप्रैल सन् १५२६ ई० को दोनों सेनाओं की मुठभेड़ हुई। बाबर की सेना यद्यपि संख्या में थोड़ी थी परन्तु उस सामना करना अफ़ग़ानों के लिए कठिन था। बाबर पास तोपख़ाना था और कई प्रकार के नये हथियार थे। लड़ाई में इब्राहीम लोदी हार गया। उसकी सेना तितर-बितर भाग गई।

पानीपत की लड़ाई के बाद दिल्ली और आगरा बाबर अधीन हो गये। परन्तु गर्मी के कारण सिपाही देश वापस जाने की इच्छा करने लगे। बाबर ने उनको स समझाया कि ऐसा करना बड़ी भूल होगी, क्योंकि हिन्दुस्तान राज्य क़रीब-क़रीब उनके हाथ में आ चुका था। अपने हुमायूँ को बाबर ने पूर्व के देशों को जीतने के लिए भेजा जितने सूबे लोदी-वंश के राजाओं के हाथ में थे, सब महीने के अन्दर जीत लिये गये और हुमायूँ ने जौनपुर ले लिया। इसके बाद बियाना, धौलपुर और ग्वालियर भी बा के अधीन हो गये।

बाबर और राजपूत—पानीपत की लड़ाई ने बाबर को दिल्ली और आगरे का मालिक बना दिया पर सारे हिन्दुस्तान पर अधिकार स्थापित करना कठिन था। राजपूताने के राजा लोग अपनी स्वतन्त्रता को कब छोड़ने वाले थे। अलाउद्दीन के मरने के बाद मेवाड़ का प्रभुत्व अधिक बढ़ गया था। इस समय मेवाड़ का राजा संग्रामसिंह था जो कि राना साँगा के नाम से प्रसिद्ध है। यह दिल्ली के बादशाह इब्राहीम से बड़ी शत्रुता रखता था। उसी का नाश करने के लिए उसने बाबर से बात-चीत

सन् १५२५ का
भारत
काबुल
गजनी
देहली
राजपूताना
कन्नौज
पटना
बनारस
गुजरात
मालवा
बंगाल
बरार
गौंडवाना
गोलकुंडा
बीजापुर
विजयनगर

की थी। परन्तु वह यह नहीं जानता था कि लोदियों को परास्त कर बाबर स्वयं हिन्दुस्तान का बादशाह बन बैठेगा। उसकी इच्छा वास्तव में यह थी कि मुग़लों के चले जाने पर वह दिल्ली के सिंहासन पर बैठे। परन्तु उसका यह मनोरथ पूरा न हुआ। राना साँगा को विवश होकर बाबर के साथ लड़ना पड़ा।

साँगा बड़ा वीर योधा था। वह सहस्रों लड़ाइयों में लड़ चुका था। लड़ाई में उसकी एक आँख, एक भुजा और एक टाँग जाती रही थी। शरीर पर अस्सी घावों के चिह्न थे। ऐसे वीर सामन्त का सामना करना कोई खेल न था। साँगा ने राजपूताना के सारे राजाओं को निमन्त्रण भेजा और उनसे प्रार्थना की कि तुर्कों को हिन्दुस्तान से निकालने में मेरी सहायता करो। एक हिन्दू-संघ रचा गया जिसमें बहुत से राजपूत राजा सम्मिलित हुए। महमूद लोदी दस हज़ार सेना लेकर साँगा से आ मिला। अन्यान्य लोदी सर्दार भी, जिन्हें हुमायूँ ने भगा दिया था अथवा परास्त किया था, हिन्दू-दल में आकर मिल गये।

साँगा ने एक बहुत बड़ी सेना इकट्ठी कर ली। इसमें ५०० हाथी, ८०,००० घोड़े और बहुत-से पैदल थे। अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित होकर यह सेना युद्ध के लिए चली। रास्ते में बियाने के क़िले को, जो आगरे से ५० मील के फ़ासले पर है, उसने जीत लिया और वहाँ जो फ़ौज थी उसे मारकर भगा दिया। राजपूतों की विशाल सेना को देखकर बाबर के होश उड़ गये। पहले ही वार में, जो राजपूतों ने बाबर की सेना पर सीकरी के पास किया, उनकी जीत हुई परन्तु इससे उन्होंने विशेष लाभ नहीं उठाया। वे अपने डेरे को लौट गये। इतने में बाबर ने खूब तैयारी कर ली। ठीक इसी समय काबुल से एक ज्योतिषी आया। उसने य

भविष्यवाणी की कि युद्ध में बादशाह की जीत होना बहुत कठिन है। परन्तु इससे बाबर निराश नहीं हुआ।

ज्योतिषी की भविष्यवाणी का सेना पर बुरा प्रभाव पड़ा। युद्ध से अफ़सर लोग हतोत्साह हो गये और कुछ हिन्दू राजे भी, जो बाबर के साथ लड़ने आये थे, शत्रु की ओर चले गये। इस अवसर पर बाबर ने शराब छोड़ दी और सोने-चाँदी के जितने शराब पीने के प्याले थे सब तोड़ डाले। इसी समय से उसने दाढ़ी मुड़वाना बन्द कर दिया और ईश्वर से विजय के लिए प्रार्थना की। फ़ौज के हाकिमों और सिपाहियों को इकट्ठा करके बाबर ने यह वक्तृता दी—'सेना-पतियो और सिपाहियो! जो संसार में पैदा हुआ है वह किसी न किसी दिन अवश्य मरेगा। शरीर अनित्य है। प्रतिष्ठा के साथ मरना और युद्ध में वैरियों को पीठ दिखाना निन्दनीय काम है। धर्म और आत्म-सम्मान की रक्षा के लिए प्राण देना अपकीर्ति के साथ जीने से कहीं अच्छा है; इसलिए आप लोगों का कर्तव्य है कि इस [illegible] की पूर्ति के लिए दिल तोड़ कर वीरता के साथ लड़ें, जिससे संसार के इतिहास में आप लोगों का नाम अमर हो जाय'।

इन ओजस्विनी वक्तृता का फ़ौज के अफ़सरों पर बड़ा प्रभाव पड़ा। उन्होंने [illegible] कुरान पर हाथ रखकर शपथ खाई कि इस लड़ाई में मुँह नहीं मोड़ेंगे और देश के लिए अपने प्राण तक दे देंगे। मानो सेना में एक नवीन शक्ति आ गई। अब मुसलमान सेना निडर होकर युद्ध के [illegible]

[illegible]

धमकाया और कुछ इनाम देकर उसे हिन्दुस्तान से चले जाने की आज्ञा दी।

युद्ध समाप्त हो गया। अब जो लोग काबुल को लौट जाना चाहते थे उन्हें बाबर ने हुमायूँ के साथ वापस भेज दिया और वह स्वयं ६ महीने तक राज्य का प्रबन्ध करने में लगा रहा। इसके पीछे उसने चंदेरी की रियासत पर, जो बुन्देलखण्ड और मालवा की सरहद पर थी, चढ़ाई की। वहाँ का राजा मेदिनीराय बड़ी वीरता से लड़ा परन्तु उसकी हार हुई। क़िले को मुसलमानों ने जीत लिया। जब राजपूतों ने देखा कि इज़्ज़त बचाने का कोई उपाय नहीं है तब उन्होंने स्त्रियों को मार डाला और तलवार हाथ में लेकर प्राणों का होम करने के लिए रणभूमि की ओर बढ़े। एक बार तो उन्होंने ऐसी मार मारी कि मुसलमानों को पीछे हट जाना पड़ा परन्तु अन्त में जीत मुसलमानों की हुई। जो २०० या ३०० योधा बच रहे वे आपस में लड़भिड़कर मर गये।

बङ्गाल और बिहार की पराजय—चन्देरी का क़िला जीतने के बाद बाबर अफ़ग़ानों को परास्त करने के लिए बङ्गाल और बिहार की ओर गया। सन् १५२६ ई० में उसने पटना के उत्तर की ओर, घाघरा नदी के किनारे पर, अफ़ग़ानों को लड़ाई में हराया। सारा बिहार बाबर के हाथ आ गया और उसका राज्य उत्तरी हिन्दुस्तान में स्थापित हो गया।

अपने जीते हुए देशों में सुख और शान्ति स्थापित करने के लिए बाबर ने देश को कई भागों में विभाजित किया और एक-एक भाग, जागीर के तौर पर, अपने अफ़सरों को दे दिया। ये लोग किसानों से भूमि-कर वसूल करके शाही ख़ज़ाने में देते थे।

बाबर की मृत्यु—बहुत परिश्रम करने के कारण बाबर का स्वास्थ्य बिगड़ गया था। इसी समय उसका बेटा हुमायूँ हाल ही में बदख्शाँ से लौटकर आया था, बीमार पड़ गया। बहुत-सी दवा की गई परन्तु वैद्यों ने निराशा प्रकट की। तब बाबर ने अपने बेटे के बदले स्वयं अपने प्राण देने का निश्चय किया। उसके मित्रों ने बहुत समझाया परन्तु बाबर ने एक न सुनी। उसने ईश्वर से प्रार्थना करते हुए अपने बेटे हुमायूँ के पलंग की तीन बार परिक्रमा की और कहा कि हे परमात्मा! हुमायूँ का सारा रोग मेरे ऊपर आ जाय। कहते हैं कि परमेश्वर ने बाबर की प्रार्थना सुन ली। उसी दिन से बाबर बीमार पड़ा और हुमायूँ अच्छा होने लगा। २६ दिसम्बर सन् १५३० ई० को आगरे में बाबर का देहान्त हो गया। उसकी लाश, उसके आज्ञानुसार, काबुल पहुँचाई गई और वहाँ दफन की गई। बाबर के मरने के समय काबुल नदी से लेकर बंगाल की सरहद तक और हिमालय से ग्वालियर [illegible]देरी और [illegible] तक सारे देश उसके अधीन थे।

बाबर का चरित्र—बाबर की जिन्दगी संसार के बड़े [illegible] में से है। उसका हृदय कोमल था। [illegible] और [illegible] में [illegible] जाता। वह बड़ा वीर था। युद्ध में [illegible] था। इसी लिए हिन्दुस्तान के [illegible] थे। [illegible] यह सच है कि बाबर सिंधु के [illegible] सेना से उसने, केवल १२,००० सैनिकों की [illegible] से, सारे हिन्दुस्तान को [illegible] [illegible]

बढ़िया तैराक था और हिन्दुस्तान में जितनी नदियाँ उस पार करनी पड़ीं, उन सबको उसने तैर कर ही पार कि था। बलवान ऐसा था कि दो आदमियों को बगल में द कर किले की दीवार पर दौड़ सकता था। 'घोड़े की सव का उसे ऐसा शौक़ था कि दिन भर में सौ-सौ मील घोड़े पीठ पर ही चला जाता और ज़रा भी नहीं थकता था।

बाबर ने हिन्दुस्तान में केवल ४ वर्ष तक राज्य किय उसका बहुत-सा समय लड़ाई-झगड़ों में व्यतीत हुआ इसी कारण राज्य के प्रबन्ध की ओर वह अधिक ध्यान न सका। परन्तु प्रजा के सुख का वह सदा ध्यान रखता था हिन्दुओं के साथ उसने अच्छा बर्ताव किया। बाबर बा बात का पक्का था और जिसको वचन दे देता था उस पूर्ण रीति से सहायता करता था।

बाबर केवल योधा ही न था, सुशिक्षित लेखक औ कवि भी था। तुर्की भाषा में उसने बहुत-सी ग़ज़लें लि हैं जिनसे पता लगता है कि वह कैसा विचारशील औ मेधावी पुरुष था। उसने अपना जीवनचरित्र स्वयं लिखा जिसे आज तक लोग बड़े आदर और प्रेम से पढ़ते हैं। इस पता लगता है कि बाबर प्राकृतिक दृश्यों का प्रेमी था। इ पुस्तक में, जिसका नाम "तुज़क बाबरी" है, उसने बहुत देशों का हाल लिखा है। इसकी भाषा सरल और मनोह है। हिन्दुस्तान के विषय में वह लिखता है कि आब-हव अच्छी नहीं है और लोग भी बहुत बुद्धिमान नहीं हैं। इस सन्देह नहीं कि हिन्दुस्तान में थोड़े ही दिन रहने के कार वह यहाँ के निवासियों को पूर्ण रीति से नहीं जान सका औ इसी से उसने विषय में ऐसी सम्मति प्रकट की है।

— — —

अध्याय २७

हुमायूँ

(सन् १५३० ई० से १५५६ ई० तक)

हुमायूँ और उसके भाई—बाबर के बाद उसका बेटा हुमायूँ गद्दी पर बैठा। हुमायूँ के अतिरिक्त बाबर के तीन बेटे और थे—कामरान, हिन्दाल और मिर्ज़ा असकरी। बाबर ने मरते समय हुमायूँ से कहा था कि जब तुम दिल्ली की गद्दी पर बैठो तब अपने भाइयों के साथ दया और प्रेम का बर्ताव करना। इस आज्ञा का हुमायूँ ने आजन्म पालन किया और अपने भाइयों के साथ उसने, विद्रोह और विश्वासघात करने पर भी, अन्य मुसलमान बादशाहों की तरह कड़ा बर्ताव नहीं किया। कामरान काबुल का हाकिम था और हिन्दाल तथा असकरी हिन्दुस्तान में थे। हुमायूँ ने अफ़ग़ानिस्तान और पञ्जाब को कामरान के हाथ में ही रहने दिया, क्योंकि वह झगड़ा करना नहीं चाहता था और दूसरे भाइयों को, सन्तुष्ट करने के लिए, उसने जागीर दे दी। हिन्दाल को उसने सम्भल का सूबेदार नियुक्त किया और असकरी को मेवात का। कामरान के हाथ में अफ़ग़ानिस्तान और पञ्जाब छोड़ देने से हुमायूँ झगड़े से तो बच गया परन्तु उसने अपने लिए एक नई आपत्ति खड़ी कर ली। इन्हीं देशों से बाबर अपनी सेना में सिपाही भर्ती किया करता था जो हिन्दुस्तान के लोगों का डटकर सामना करते थे। अब हुमायूँ ने यह नाला बन्द कर दिया। यद्यपि इसका बुरा प्रभाव शीघ्र ही प्रकट नहीं हुआ, परन्तु इसमें सन्देह नहीं कि इसी कारण हुमायूँ को बड़ा [illegible]

हिन्दुस्तान की दशा—बाबर भारतवर्ष में केवल ४ ही वर्ष रहने पाया था। उसे अपने राज्य का संगठन करने के लिए समय नहीं मिला। इसलिए हुमायूँ को चारों ओर शत्रुओं का सामना करना पड़ा। बिहार और बंगाल में अफ़ग़ान लोग अपने हाथ से निकली हुई रियासतों को फिर लेने की चिन्ता में थे। गुजरात का बादशाह बहादुरशाह दिल्ली पर चढ़ाई करने को तैयार था। उसने बहुत-सा लड़ाई का सामान इकट्ठा भी कर लिया था। उधर उत्तर की तरफ़ काबुल और पंजाब कामरान के हाथ में थे। वह हुमायूँ से शत्रुता रखता था। राजपूताना के राजा लोग भी अपनी हार को नहीं भूले थे और अपनी धाक जमाने का अवसर ढूँढ रहे थे। ऐसी दशा में अपनी स्थिति को ठीक करना हुमायूँ के लिए एक कठिन कार्य था। ये कठिनाइयाँ दिन पर दिन बढ़ती गईं और जीवन पर्यन्त हुमायूँ एक जगह से दूसरी जगह मारा-मारा फिरता रहा।

कालिञ्जर की चढ़ाई—थोड़े दिन के बाद हुमायूँ ने कालिञ्जर पर चढ़ाई की। जब वह इस किले को घेरे हुए पड़ा था तब उसे अफ़ग़ानों के विद्रोह की ख़बर मिली। उसने शीघ्र ही उनको मार हटाया और चुनार के किले पर, जो बनारस के पास है, धावा किया। अफ़ग़ानों के सरदार शेरखाँ ने उसका आधिपत्य स्वीकार कर लिया और हुमायूँ आगरे लौट आया।

बहादुरशाह के साथ लड़ाई—कुछ समय पहले [illegible] का एक रिश्तेदार बागी होकर गुजरात के बादशाह बहादुरशाह के पास चला गया था। हुमायूँ ने बहादुरशाह से उसको वापिस भेज देने को कहा परन्तु उसने मना कर

दिया। इस पर दोनों में अनबन हो गई और लड़ाई की नौबत आ गई। बहादुरशाह ने धीरे-धीरे अपना राज्य बहुत बढ़ा लिया था। खानदेश, बरार, अहमदनगर और मालवा के राजा लोग उसके अधीन हो गये थे। उसने इब्राहीम लोदी के चचा अलाउद्दीन को हुमायूँ के विरुद्ध लड़ने के लिए उत्तेजित किया और उसे सहायता भी दी। सन् १५३४ ई० में फिर लड़ाई छिड़ी। जब हुमायूँ ने सेना लेकर गुजरात पर चढ़ाई की तो बहादुर ड्यू की ओर भाग गया और गुजरात का सूबा हुमायूँ के हाथ आ गया।

चम्पानेर की चढ़ाई—इसके बाद उसने चम्पानेर के किले पर धावा किया। एक रात को ३०० चुने हुए सिपाही किले की दीवार में लोहे की कीलें गाड़कर चढ़ गये। उन्होंने किले को जीत लिया। कहते हैं कि जब वे किले में भीतर घुसे तब मालूम हुआ कि बहादुर का सारा धन और माल एक जगह गड़ा हुआ था। उसका पता केवल एक आदमी को मालूम था। उस आदमी से बहुत पूछा गया परन्तु उसने कुछ भी न बताया। किसी ने कहा कि इसे ठोक-पीटकर सीधा करना चाहिए ताकि बता दे। परन्तु हुमायूँ ने, जो स्वभाव से ही दयावान था, एक और सरल उपाय बताया। उसने कहा कि इसको खूब शराब पिलाओ और भोग-विलास की सामग्री इसके सामने रक्खो। ऐसा करने से कदाचित् यह भेद बता दे। अन्त में ऐसा ही किया गया। नशे में आकर उसने बतलाया कि सब माल एक तालाब के अन्दर तहखाने में गड़ा हुआ है। तालाब खाली किया गया और कहते हैं कि सब माल, जैसा उसने बताया था, मिल गया। हुमायूँ ने बहुत-सा माल अपने साथियों में बाँट दिया। इसके बाद मिर्ज़ा अस्करी को गुजरात में छोड़कर वह स्वयं आगरे की ओर चल दिया। परन्तु हुमायूँ के [illegible]

हो गया। बहादुर ने इन झगड़ों से पूरा लाभ उठाया। गुजरात का सूबा फिर हुमायूँ के हाथ से जाता रहा।

अफ़ग़ानों का विद्रोह—आगरे में आने पर हुमायूँ को समाचार मिला कि बंगाल और जौनपुर में अफ़ग़ानों ने फिर बग़ावत की है। इस समय हुमायूँ की स्थिति अच्छी न थी। गुजरात और मालवा उसके हाथ से निकल चुके थे। पूर्व में अफ़ग़ान स्वतंत्र होने की कोशिश कर रहे थे। दिल्ली के आसपास के प्रान्तों में भी अशान्ति फैल रही थी। कामरान उत्तर में था परन्तु वह हुमायूँ की आपत्तियों से लाभ उठाना चाहता था। इसी लिए जब उससे सहायता माँगी गई तब उसने साफ़ इनकार कर दिया।

शेरशाह—अफ़ग़ानों में सबसे बलवान सर्दार शेरख़ाँ था। उसने एक-एक करके बिहार के सब किले जीत लिये थे और बंगाल में स्वतंत्र राज्य स्थापित करने की पूरी-पूरी तैयारी कर ली थी।

शेरख़ाँ* का बचपन का नाम फ़रीदख़ाँ था। उसके बाप का नाम हसन था। वह बिहार में सहसराम का जागीरदार था। बाप से कुछ अनबन हो जाने के कारण शेरख़ाँ जौनपुर चला गया और वहाँ के सूबेदार की सेना में सिपाहियों में भर्ती हो गया। वहीं पर उसने पढ़ने-लिखने का अभ्यास किया और फ़ारसी में अच्छी योग्यता प्राप्त कर ली। पढ़ लिख कर वह आगरे गया और उसने दौलतख़ाँ लोदी के यहाँ नौकरी कर ली। बाप के मरने के बाद शेरख़ाँ घर लौट आया और अपनी जागीर का मालिक हो गया।

*शेरख़ाँ का दादा इब्राहीमख़ाँ अफ़ग़ानिस्तान का निवासी और सूर-वंश में से था।

परन्तु वहाँ उसका मन न लगा। तब उसने बिहार के सूबे-
दार के यहाँ नौकरी कर ली। जौनपुर का हाकिम बाबर का
मातहत था। सन् १५२८ ई० में यह शेरशाह को बाबर के
पास ले गया। बाबर ने उसको खिलअत और इनाम
देकर ससम्मान बिहार में एक ऊँचे पद पर नियुक्त कर
दिया। हुमायूँ जब गुजरात का विद्रोह दबाने में लगा हुआ
था तब शेरशाह ने [illegible] बिहार को अपने अधिकार में कर
लिया और बंगाल पर चढ़ाई करने का विचार किया। हुमायूँ
[illegible] वहाँ सेना लेकर चुनार की ओर [illegible]। [illegible]

[illegible]

[illegible]

कर चल दिये। उधर बरसात बन्द होने से पहले ही हिन्दाल को हुमायूँ ने फ़ौज लाने के लिए भेजा परन्तु वह वहाँ जाकर बादशाह बन बैठा।

शेरशाह और हुमायूँ की लड़ाई—*शेरख़ाँ इस* मवक़ा ताक रहा था और वास्तव में वह ऐसे ही मवसर की बाट देख रहा था। शाही फ़ौज की ऐसी दशा सुनकर शेरख़ाँ रोहतास के क़िले से बाहर निकला। चुनार के क़िले को जीत कर उसने जौनपुर को घेर लिया। हुमायूँ अब बड़ी कठिनाई में पड़ा। इधर शेरख़ाँ ने सब रास्ते बन्द कर दिये, उधर हिन्दाल आगरे में जाकर राजसिंहासन पर बैठ गया। शेरख़ाँ हुमायूँ को वापस न जाने देना चाहता था और इसी की तैयारी कर रहा था। गंगा के दूसरे किनारे पर पहुँचने के लिए हुमायूँ ने नावों के पुल बनाने का हुक्म दिया। जब नावों का पुल बनकर तैयार हो गया तब एक रात को हुमायूँ पर पीछे से शेरख़ाँ ने धोखे से हमला किया। अपने प्राण बचाने के लिए हुमायूँ झटपट घोड़े पर चढ़कर गङ्गा में कूद पड़ा। बीच में जाकर घोड़ा थककर डूब गया। हुमायूँ भी डूबने ही को था परन्तु एक भिश्ती ने, जिसका नाम निज़ामउद्दीन मुहम्मद था, उसके प्राण बचाये। पीछे बादशाह ने प्रसन्न होकर भिश्ती को तीन घण्टे राजसिंहासन पर बैठने की आज्ञा दी। इस भिश्ती ने चमड़े का सिक्का चलाया और अपने नातेदारों तथा इष्ट-मित्रों को बहुत-सा धन दिया। यह *हुमायूँ की उदारता और कृतज्ञता का एक उदाहरण है।*

अपने घोड़ों और साथियों को लेकर हुमायूँ आगरे आया। हिन्दाल के विश्वासघात पर उसे बड़ा क्रोध आया, परन्तु कामरान के कहने से उसका अपराध क्षमा कर दिया गया। अब तीनों भाई मिलकर शेरख़ाँ को परास्त करने का

न सोचने लगे। इतने में शेरख़ाँ ने सारे बङ्गाल पर अपना अधिकार कर लिया और जो कुछ मुग़ल-सेना बङ्गाल में रह गयी थी उनको बाहर निकाल दिया।

आठवीं महीने की तैयारी के बाद हुमायूँ एक बड़ी फ़ौज लेकर फिर आगरे से बङ्गाल की ओर चला। शेरख़ाँ भी कन्नौज के सामने गंगा के किनारे पर आ गया था। वह अपना डेरा डाले पड़ा था। इतने में शाही लश्कर का एक अफ़सर, मुहम्मद सुलतान मिर्ज़ा, अपनी पल्टन लेकर शत्रु से जा मिला। इससे हुमायूँ को बड़ी चिन्ता हुई। कामरान पहले ही लाहौर को चला गया था और अपनी फ़ौज के अच्छे-अच्छे सर्दारों को भी साथ लेता गया था। हुमायूँ के लिए अब लड़ाई करने के सिवा और कोई चारा न रहा। सन् १५४० ई० में कन्नौज के पास दोनों सेनायें एक दूसरी से भिड़ गई। हुमायूँ की सेना बिलकुल हार गई। उसके बहुत से सिपाही गंगा में डूबकर मर गये। हुमायूँ ने बड़ी कठिनाई से अपने प्राण बचाये और शीघ्रता के साथ आगरे से अपना माल-असबाब लेकर लाहौर की ओर कूच किया। कामरान शेरशाह से डरता था इसलिए उसने हुमायूँ की कुछ भी सहायता न की।

बादशाह निराश होकर सिन्ध के रेगिस्तान की तरफ़ चला। रास्ते में गर्मी और प्यास के कारण उसके बहुत से सिपाही मर गये। मारवाड़ के राजा मालदेव ने भी कुछ सहायता न की। अनेक आपत्तियों को सहता हुआ बादशाह अन्त में अमरकोट पहुँचा।

अकबर का जन्म—सन् १५४१ ई० में जब हुमायूँ ने ...हर पर लड़ाई की थी तब उसने एक ईरानी बेगम से, ... उसका नाम हमीदा था और जो ... के ... [illegible]

की बेटी थी, विवाह कर लिया था। २३ नवम्बर सन् १५[४२] ई० को अमरकोट के वीरान जंगल में हमीदा के गर्भ से अक[-]बर का जन्म हुआ। तुर्कों का रिवाज था कि जब किसी बादशाह के पुत्र उत्पन्न होता था तब वह अपने मित्रों [को] भेंट देता था। हुमायूँ के पास इस समय कुछ भी न था। उसकी दशा अत्यन्त शोचनीय थी। वह रेगिस्तान में ए[क] जगह से दूसरी जगह मारा-मारा फिरता था। भला [वह] किसी को क्या दे सकता था। परन्तु ऐसे कठिन समय [में] उसको एक बड़ी अच्छी बात सूझी। उसके पास एक कस्[तूरी] का नाफ़ा था जिसको उसने तोड़ा और थोड़ी-थोड़ी कस्[तूरी] अपने सब मित्रों को बाँट दी और यह अभिलाषा प्रकट [की] कि ईश्वर करे इस कस्तूरी की सुगन्ध की तरह मेरे बेटे [का] यश सारे संसार में फैल जाए।

हुमायूँ का फ़ारस जाना—अमरकोट से हुमा[यूँ] फिर कन्दहार की तरफ़ बढ़ा। वहाँ का हाकिम इस स[मय] मिर्ज़ा अस्करी था। हुमायूँ को आशा थी कि उसका [illegible] उसकी सहायता करेगा परन्तु अस्करी ने उसको कैद क[रना] चाहा। हुमायूँ को जब यह खबर मिली तब शीघ्र ही [illegible] [illegible], ४२ सवारों के साथ, [illegible] [illegible] किया। फ़ारस के शाह तहमास्प ने हुमायूँ का अच्छा सत्कार किया परन्तु उसे शिया-मत [illegible] पर विवश किया। अन्त में उसने हुमायूँ को १२ ह[जार] [illegible]

भाइयों के साथ बर्ताव—हुमायूँ काबुल, कन्द[हार] [illegible]

हुमायूँ ने उसके साथ दया का बर्ताव किया। कन्दहार को लेने के बाद हुमायूँ काबुल की ओर बढ़ा। कामरान ने इस समय अकबर को, तीरों की बौछार के नीचे, काबुल के क़िले की दीवार पर बिठा दिया। परन्तु राजकुमार का बाल भी बाँका न हुआ। हुमायूँ ने फिर काबुल पर चढ़ाई की और क़िले पर अधिकार कर लिया। कामरान खोखर-जाति के सुलतान की शरण में चला गया परन्तु उसने उसे हुमायूँ के पास भिजवा दिया। थोड़े दिन बाद वह मक्के को चला गया और वहाँ जाकर मर गया। हिन्दाल पहले ही लड़ाई में मर चुका था। असकरी भी मक्के को रवाना हुआ और रास्ते में मर गया।

हुमायूँ का लौटना—शेरशाह बड़ा बहादुर बादशाह था। वह जब तक जीवित रहा, उसके राज्य में कोई उपद्रव नहीं हुआ। उसके मरने के पीछे सूरवंश के बादशाह निर्बल हो गये। हुमायूँ ने १५,००० सवार लेकर पञ्जाब पर हमला किया। सन् १५५५ ई० में सरहिंद के स्थान पर सिकन्दर सूर से लड़ाई हुई जिसमें हुमायूँ ने पूरी विजय प्राप्त की। सिकन्दर हिमालय की तरफ़ भाग गया। दिल्ली और आगरा हुमायूँ के हाथ आ गये।

मृत्यु—हुमायूँ फिर दिल्ली के सिंहासन पर बैठा था। उसका अन्तिम समय निकट आ चुका था। एक दिन अपने पुस्तकालय की सीढ़ियों से उतर रहा था कि [illegible] मुल्ला की आवाज़ सुनी [illegible] समय नमाज़ का [illegible] [illegible] वहीं तक गया और [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] परन्तु [illegible]

गया किन्तु कोई लाभ न हुआ। अन्त में चौथे दिन उसका प्राणान्त हो गया।

हुमायूँ का स्वभाव—हुमायूँ का स्वभाव अच्छा था। वह दयालु और उदारचित्त बादशाह था। लोगों के साथ उसका बर्ताव अच्छा था। वह शिक्षित और योग्य था परन्तु बाबर के समान फुर्तीला और दृढ़ विचारवाला नहीं था। एक काम तो पूरा होता नहीं था और इसी बीच दूसरा हाथ में ले लिया जाता था। इसी कारण वह कभी अपनी शक्ति का पूरा प्रयोग न कर सका। अवस्था बढ़ने पर वह अफ़ीम खाने लग गया था जिससे उसकी बुद्धि कुछ मन्द हो गई और विचार-शक्ति जाती रही थी। अपनी विलास-प्रियता और मानसिक अस्थिरता के कारण हुमायूँ ने बड़े-बड़े दुख उठाये। परन्तु इन सब आपत्तियों का उसने बड़े धैर्य के साथ सामना किया और कभी किसी के साथ निर्दयता का व्यवहार नहीं किया। उसके नौकर जौहर ने उसके जीवन का कुछ हाल लिखा है।

अध्याय २८

शेरशाह सूर

[illegible]

[illegible]

(ग)या दिल्ली की गद्दी पर बैठा। अब उसने अपना नाम शेर-शाह रख लिया। थोड़े समय के लिए मुग़लों का राज्य जाता रहा और सूर-वंश की धाक बैठ गई। गद्दी पर बैठने के बाद (उ)सने पञ्जाब में खोखरों के विद्रोह को दबाया और रोहतास (क)े क़िले की नींव डाली। जब वह लौटकर आया तब उसे (मा)लूम हुआ कि बङ्गाल के सूबेदार ने भी बग़ावत का झण्डा (ख)ड़ा किया है। किन्तु सूबेदार की आशा पूर्ण न हुई। अन्त (ब)न्द करने के अभिप्राय से शेरशाह ने बङ्गाल को कई ज़िलों (में) विभक्त कर दिया और प्रत्येक ज़िले का अलग-अलग हाकिम (नि)युक्त कर दिया। दूसरे साल उसने मालवा को जीता और (रायसी)न* के क़िले को सर कर लिया।

दूसरे साल शेरशाह ने ८०,००० फ़ौज लेकर मारवाड़ के राजा मालदेव पर चढ़ाई की। राजा के पास केवल (५)०,००० सैनिक थे परन्तु एक बार तो उसकी सेना को (दे)खकर शेरशाह भी रोब में आगया। ऐसे वीरान देश में, (ज)हाँ कोसों तक पानी नहीं मिलता, लड़ाई करना कठिन (था)। इसलिए शेरशाह कुछ समय तक ठहरा रहा। अन्त (मे)ं उसने चालाकी से काम लिया। कुछ ऐसी चिट्ठियाँ (लि)खाई गईं जिनसे मालदेव को अपने सर्दारों की ओर से (कु)छ सन्देह हुआ और उसने पीछे लौटने का हुक्म दिया। एक राजपूत सामन्त इस दोषारोपण को न सह सका। उसने १२,००० सैनिकों की एक पल्टन लेकर दिल्ली की सेना पर धावा किया परन्तु हार गया।

शेरशाह की मृत्यु—इसके पीछे मेवाड़ पर चढ़ाई हुई और राना ने दिल्ली का आधिपत्य स्वीकार किया। थोड़े

* रायसीन का क़िला [illegible] के [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] ने भी राजा [illegible] के [illegible] में [illegible] [illegible] [illegible]

अप्रसन्न हुए और उपद्रव करने की तैयारी करने लगे। उनमें से एक सर्दार भाग गया। थोड़े से साथियों को लेकर उसने चुनार में विद्रोह का झण्डा खड़ा किया।

आदिलशाह अपनी सेना लेकर इस विद्रोह को दबाने के लिए चला परन्तु इतने में इब्राहीम सूर ने दिल्ली और आगरे पर अपना अधिकार कर लिया। आदिल ने उसको निकालने का प्रयत्न किया परन्तु कुछ भी न हुआ। निराश होकर वह अपने राज्य के पूर्वी भाग की ओर चला गया और वहीं रहने लगा। चारों ओर अफ़ग़ानों ने विद्रोह आरम्भ कर दिया। सल्तनत के प्रबन्ध में गड़बड़ होने लगी और सूरवंश की अवनति के लक्षण दिखाई देने लगे।

हुमायूँ की विजय—इस स्थिति को देखकर हुमायूँ ने सोचा कि फ़ौज लेकर दिल्ली पर धावा करना चाहिए। उसके लिए यह बहुत अच्छा अवसर था। अपनी सेना लेकर वह काबुल से आया और अफ़ग़ानों को परास्त कर फिर दिल्ली और आगरे का बादशाह बन गया। अनेक कष्ट सहने के बाद राजसिंहासन हुमायूँ के हाथ आया परन्तु उसका अन्तिम समय निकट आ गया था। सन् १५५६ ई० में वह इस संसार से चल बसा।

अध्याय २६

अकबर

(पूर्वार्द्ध)

(सन् १५५६ ई० से १५०२ ई० तक)

हिन्दुस्तान की दशा—जिस समय अकबर गद्दी पर बैठा, हिन्दुस्तान की बहुत सी रियासतें—जो पहले दिल्ली के

...नीन थीं—स्वतन्त्र हो गई थीं। ख़ानदेश, बंगाल, जौनपुर, ...न्ध और मुलतान सब स्वतंत्र हो चुके थे। हुमायूँ ने गुजरात ... जीत लिया था परन्तु हुमायूँ की आपत्तियों और ...नों के परस्पर झगड़ों के कारण उसने फिर स्वतंत्रता ...न कर ली थी। राजपूत राजा भी स्वतंत्र हो चुके थे। मुख्य ...नमें इस समय पाँच थीं—मेवाड़, जोधपुर, जैसलमेर, ...मेर (जयपुर), और कोटा। मेवाड़ के राना सीसौदिया-वंश के थे। सन् १३०३ ई० में अलाउद्दीन ख़िलजी ने उनको ...जय किया था परन्तु अलाउद्दीन के मरने के बाद राना ...र ने फिर मेवाड़ को जीतकर स्वतन्त्र राज्य स्थापित कर ...या था। उस समय से अकबर के समय तक मेवाड़ के ...ना दिल्ली से अलग रहे और राजपूतों में सबसे बड़े गिने ...ते रहे। दूसरी रियासत जोधपुर की थी जहाँ राठौर-वंश के ...जपूत राज्य करते थे। मालदेव अभी तक जोधपुर का राजा था और शेरशाह के मरने के बाद वह स्वतन्त्र हो गया था। जैसलमेर पर भी अलाउद्दीन ने हमला किया था परन्तु ...ल्तान ने उसको छोड़ दिया था। अलाउद्दीन के मरने के बाद ... जैसलमेर का सिंहासन [illegible] और [illegible] शाह ने इसे फिर जीतने की चेष्टा की। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] और [illegible] समय में [illegible] के अधीन थे। [illegible] अकबर [illegible] में हुई। [illegible] राजपूताना के [illegible] [illegible] गिने जाते थे।

[illegible]

[illegible]

के अधीन थे। भोपाल, ग्वालियर, नरवर, पन्ना, ओरछा, चन्देरी आदि रियासतें बुन्देलखण्ड में थीं और दिल्ली के बादशाह को अपना सम्राट् मानती थीं।

मुसलमानों के आने से हिन्दुस्तान के लोगों की दशा में बहुत कुछ परिवर्तन हो गया था। मुसलमानी कानून जारी हो जाने के कारण लोगों के रीति-रिवाज भी बहुत बदल गये थे। एक नई भाषा, जिसमें संस्कृत और फ़ारसी के शब्द मिले हुए थे, बन गई और बोली जाने लगी थी।

अकबर का गद्दी पर बैठना—हुमायूँ की मृत्यु के समय अकबर की अवस्था केवल १३ वर्ष की थी। उसकी स्थिति अच्छी नहीं थी। दिल्ली के शत्रु चारों ओर घात लगाये बैठे थे और राज्य पर अपना अधिकार स्थापित करना चाहते थे। मुहम्मदशाह आदिल सूर और सिकन्दर सूर अपने को शेरशाह का उत्तराधिकारी समझते थे और राज्य लेने की इच्छा रखते थे। आदिल का मददगार हेमू था। इसका वर्णन हम पहले कर चुके हैं। हेमू बड़ा वीर था। उसने लड़ाई की तैयारी कर ली। परन्तु अकबर का संरक्षक बैरमखाँ उसका बड़ा हितैषी था। जब हेमू बड़ी सेना लेकर दिल्ली की ओर आया तब बैरमखाँ उसका सामना करने के लिए आगे बढ़ा। सन् १५५६ ई० में पानीपत के मैदान में घोर युद्ध हुआ। [illegible]

[illegible] नीति के विरुद्ध है। इस पर बैरमख़ाँ ने नाराज़ होकर हेमू का सिर अपनी तलवार से उड़ा दिया।

अकबर और बैरमख़ाँ—इस युद्ध के बाद दिल्ली और आगरा अकबर के अधीन हो गये परन्तु बैरमख़ाँ का दबदबा अधिक बढ़ गया। वह बहादुर आदमी था। उसी की मदद से अकबर को दिल्ली की गद्दी मिली थी और उसी के डर से पठान और दूसरे हिन्दू राजा चुपचाप बैठ गये थे। राज्य का सारा काम बैरमख़ाँ ही करता था और बड़े-बड़े सरदार उसकी खुशामद करते थे। परन्तु ऐसा करने से उसका स्वभाव बिगड़ गया। वह लोगों के साथ निर्दयता का बर्ताव करने लगा। अकबर को यह बात बहुत बुरी मालूम हुई। सबने उसे यही मसलहत दी कि राज्य का काम अपने हाथ में ले लें।

अकबर एक दिन चुपके से दिल्ली चला आया और यहाँ उसने ऐलान कर दी कि राज्य का सारा प्रबन्ध मैंने अपने हाथ में ले लिया है। इसको सुनकर बैरमख़ाँ की आँखें खुल गईं। उसने बादशाह का मुक़ाबला करने की फिर चेष्टा की परन्तु अकबर से एक न चली। अब उसने बादशाह के आज्ञानुसार [illegible] होकर [illegible] का इरादा किया। परन्तु [illegible] है। [illegible] फिर [illegible]। अब उसने [illegible] मक्के [illegible] करने का विचार किया।

अकबर [illegible]

और अपनी दाहिनी ओर बिठलाया। फिर रिवाज के
उसने पूछा कि आप किसी प्रान्त की सूबेदारी पसन्द करें
या मक्के जाना। बैरमख़ाँ आत्माभिमानी था। उसने म
जाना ही पसन्द किया। बादशाह ने उसकी पेंशन नि
कर दी परन्तु गुजरात में पहुँचने पर उसे एक अफ़ग़ान ने
जिसका बाप उसके हाथ से लड़ाई में मर चुका था
मार डाला।

अकबर का शत्रुओं को जीतना—अकबर ने रा
का भार तो अपने ऊपर ले लिया परन्तु उसकी स्थिति अ
नहीं थी। अशान्ति के समय उसे उत्तर-पश्चिम के देशों
अपना मिलाना कठिन था क्योंकि उसका सम्बन्ध इन देशों से
क़रीब-क़रीब टूट ही गया था। इस समय उसके सन्मुख
तीन प्रश्न उपस्थित थे। पहले तो अमीरों और सर्दारों पर
अपना अधिकार जमाना, दूसरे हाथ से गये हुए राज्य के
देशों को फिर से जीतना, तीसरे राज्य-प्रबन्ध को ठीक करना
जिसमें किसी प्रकार की अशान्ति न फैलने पावे।

थोड़े समय के बाद सूर-वंश के अन्तिम राजा आदिल के
बेटे शेरशाह द्वितीय ने जौनपुर पर धावा किया परन्तु ख़ान
ज़मान ने उसको परास्त किया। ख़ानज़मान, यह समझ कर
कि अभी अकबर नासमझ है, स्वतन्त्र होने की चेष्टा करने
लगा। इस पर अकबर स्वयं जौनपुर की तरफ़ गया। वहाँ
उसके पहुँचते ही ख़ानज़मान के विचार बदल गये। मालवा
के हाकिम ने भी स्वतन्त्र राज्य स्थापित करने की चेष्टा की।
अकबर ने शीघ्र ही एक बड़ी सेना लेकर मालवा की ओर
कूच किया और विद्रोह को दबा दिया। कड़ा के हाकिम
आसफ़ख़ाँ को भी अकबर ने इसी तरह दबाया। इस प्रकार
थोड़े ही काल में अपने शत्रुओं को पराजित कर अकबर हिन्दु
का सम्राट बन गया।

अकबर का राजपूतों के साथ बर्ताव - यद्यपि अक-[illegible] अधिक नहीं था परन्तु वह बड़ा विचारशील [illegible]। गद्दी पर बैठते ही उसने सोचा कि सारे हिन्दुस्तान का [illegible] करने के लिए हिन्दुओं को प्रसन्न करना आवश्यक [illegible] हिन्दुओं की सहायता के बिना मुगल-राज्य का [illegible] से स्थापित होना कठिन था। हिन्दुओं में राजपूत [illegible] योद्धा थे और वही मुसलमानों से टक्कर लेते रहते थे। [illegible] अकबर ने उनसे मेल करना चाहा और आमेर (जयपुर) [illegible] के राजा भारमल की बेटी से विवाह कर लिया। [illegible] इससे [illegible] हुआ [illegible] परन्तु इसका बड़ा प्रभाव [illegible]। [illegible] अकबर ने बड़े-बड़े पदों पर नियुक्त किया और [illegible] [illegible] किया।

[illegible]

[illegible]

से हिन्दू बहुत प्रसन्न हुए और उसे बड़ा वीर, न्यायी और शक्तिमान बादशाह समझने लगे। राजपूत उसकी इस असाधारण उदारता को देखकर चकित हो गये और उसका अधिक सम्मान करने लगे।

मेवाड़ पर चढ़ाई—उत्तरी हिन्दुस्तान में तो अकबर ने अपना प्रभुत्व जमा ही लिया था, अब उसका ध्यान राजपूताने की उन रियासतों की ओर गया जिन्होंने उसका आधिपत्य नहीं स्वीकार किया था। सबसे पहले सन् १५६७ ई० में उसने चित्तौड़ पर चढ़ाई की। चित्तौड़ का राजा इस समय राना साँगा का बेटा उदयसिंह था। उदयसिंह अपने पिता के समान वीर और शक्तिमान नहीं था। राजपूताना में उसका विशेष दबदबा भी न था, परन्तु वह बादशाह को डोला देने पर राज़ी न हुआ। अकबर ने स्वयं एक बड़ी फ़ौज लेकर चित्तौड़ पर चढ़ाई की। बादशाही लश्कर को आता देख उदयसिंह अर्वली पहाड़ की ओर चला गया। परन्तु उसके जाने से विशेष हानि नहीं हुई क्योंकि वह जाते समय चित्तौड़ की रक्षा का भार एक वीर क्षत्रिय को, जिसका नाम जयमल था, दे गया था।

चित्तौड़ का क़िला हिन्दुस्तान के प्रसिद्ध क़िलों में से था। उसका जीतना दुस्साध्य समझा जाता था। यह क़िला पहाड़ में से काटकर बनाया गया है और चारों ओर से खूब सुरक्षित है। भीतर जाने का एक ही मार्ग है जिसमें कई फाटक हैं। अकबर ने अपनी सेना क़िले के चारों ओर डाल दी। राजपूत बड़ी वीरता से युद्ध करते रहे। जयमल अपने योद्धाओं के साथ बादशाही सेना का सामना करता रहा। बादशाह ने सुरङ्ग लगाने की आज्ञा दी परन्तु इसमें सफलता न हुई। अकबर ने देखा कि जब तक जयमल जीवित रहेगा

चित्तौड़गढ़ का जीतना कठिन है। एक दिन, रात को जयमल मशाल की रोशनी में कोट की एक सेंध बन्द करा रहा था। इसी समय अकस्मात् अकबर की दृष्टि उस पर पड़ी। उसकी पोशाक और साहस को देखकर बादशाह ने अनुमान किया कि वह जयमल ही है। इसलिए उसने शीघ्र बन्दूक लेकर निशाना मारा। गोली जयमल के सिर में लगी और वह मर गया।

इसके मरने पर राजपूत-सेना में हलचल मच गई। सैनिक और योद्धा निराश होगये। कोट की सेंधों को छोड़कर वे क़िले के भीतर घुस गये और वहां मरने की तैयारी करने लगे। स्त्रियाँ अपनी इज़्ज़त बचाने के लिए अग्नि में जाकर भस्म होगईं*। इसके बाद राजपूत योद्धा वस्त्र पहन कर तलवार हाथ में लेकर लड़ने को चले और मर गये। कहते हैं कि सब मिलाकर ८,००० राजपूत काल के ग्रास हुए। बादशाह ऐसा क्रोधित हुआ कि उसने क़त्ल का हुक्म दे दिया और ३०,००० मनुष्य, जिन्होंने युद्ध में भाग लिया था, मारे गये।

इतने कष्ट सहने पर भी उदयसिंह ने दिल्ली का आधिपत्य स्वीकार नहीं किया। कई वर्ष बाद उसके बेटे राना प्रताप ने, जिनका नाम हिन्दू लोग बड़े आदर से आज तक स्मरण करते हैं, लड़ाई आरम्भ की। उन्होंने प्रण किया कि दिल्ली के

---

* राजपूत लोग इसको "जौहर" कहते हैं। जब राजपूत देखते थे कि शत्रु से बचने का कोई उपाय नहीं है तब वे [illegible]

सम्राट् की अधीनता कभी स्वीकार नहीं करूँगा, प्राण भले ही चले जायँ। राना प्रताप असाधारण योद्धा थे। उनकी रग-रग में क्षत्रिय का खून बहता था। अपनी जाति के घोर अपमान पर वे नित्य आँसू बहाते थे। उन्होंने प्रतिज्ञा की कि जब तक चित्तौड़ न ले लूँगा तब तक पृथ्वी पर ही शयन करूँगा, पत्तल पर रखकर भोजन करूँगा और मूँछें ऊपर को न चढ़ाऊँगा।

सन् १५७६ ई० में बादशाह ने बंगाल को जीतने के बाद राना प्रताप को पराजित करने के लिए फ़ौज भेजी। राजा मानसिंह इस बार सेनाध्यक्ष होकर गये। उन्होंने राना को हल्दीघाट की लड़ाई में परास्त किया और गोगुन्दा तथा कमलमेर के किलों को जीत लिया। राना को इस आपत्तिकाल में बड़े-बड़े कष्ट सहन पड़े जिन सबका वर्णन यहाँ पर नहीं हो सकता। कभी-कभी उनको स्त्री और बच्चों को भूखा तक रहना पड़ता था। कहते हैं, एक बार उनकी स्त्री ने घास की रोटी बनाई और एक टुकड़ा अपनी बेटी के लिए रख छोड़ा परन्तु उसे बिल्ली ले गई। भूख के कारण बेटी को चिल्लाते देख राना का हृदय पिघल गया परन्तु उन्होंने अपनी प्रतिज्ञा नहीं छोड़ी। लड़ाई में हारकर वे [illegible] मारे मारे फिरे परन्तु अकबर के सामने उन्होंने सिर नहीं झुकाया। वे जब तक जीवित रहे, सदा युद्ध करने के लिए तैयार रहे। अकबर के मरने से पहले उन्होंने अपने कई किले फिर से ले लिये और मानसिंह से बदला लेकर उदयपुर में बड़े [illegible] शासन [illegible] समर्थ [illegible] सुन्दर है। इनके [illegible] सम्मान [illegible] [illegible] हो सकता

रणथम्भौर की चढ़ाई—दूसरे वर्ष अकबर ने रणथम्भौर और कालिञ्जर पर चढ़ाई की। रणथम्भौर के राजा सुर्जन ने अकबर का आधिपत्य स्वीकार कर लिया। इसके बदले में उसके साथ दया का बर्ताव किया गया। सन् १५६९ ई० में कालिञ्जर का क़िला भी जीत लिया गया था। अब राजपूत राजाओं में कोई अकबर का सामना करने योग्य नहीं रहा।

राजपूतों के साथ मेल करने से बादशाह को बड़ा लाभ हुआ। आमेर, बीकानेर और जोधपुर राज्यों के घराने सदा दिल्ली के साथ रहे। उन्होंने साम्राज्य की शक्ति के बढ़ाने में पूरी-पूरी सहायता की। राजपूतों से निश्चिन्त होकर अकबर ने दूसरे देशों की ओर ध्यान दिया।

गुजरात की लड़ाई—सबसे पहले गुजरात में लड़ाई आरम्भ हुई परन्तु इसी समय मिर्ज़ाओं ने, जो बादशाह के रिश्तेदार थे, उपद्रव किया। एक बड़ी सुसज्जित सेना लेकर बादशाह गुजरात की ओर गया और ११ दिन में अहमदाबाद पहुँच गया। २ सितम्बर सन् १५७३ ई० को शाही लश्कर ने शत्रु का सामना किया। यद्यपि शत्रुओं की सेना की संख्या लगभग तीस हज़ार के थी तो भी उनकी हार हुई और गुजरात का सूबा फिर बादशाह के अधीन हो गया। साम्राज्य में गुजरात के सम्मिलित होने से समुद्र के किनारे के व्यापार पर बादशाह का अधिकार हो गया और राज्य की आमदनी भी बढ़ गई।

बंगाल की लड़ाई— [illegible]

दाऊद ने कर देने का वचन दिया था, परन्तु वह अपनी बात का पक्का न निकला। बादशाह को लड़ाई की तैयारी करनी पड़ी। सन १५७४ ई० में अकबर स्वयं नदियों को पार करता हुआ बंगाल पहुँचा और उसने अपने हाकिमों को युद्ध करने के लिए उत्तेजित किया। सन १५७५ ई० में दाऊद हार गया परन्तु उसने फिर युद्ध किया। सन् १५७६ ई० में वह राजमहल के पास युद्ध में फिर से परास्त हुआ और बंगाल का सूबा फिर साम्राज्य में मिला लिया गया। इसके पीछे बादशाह ने बहुत-से देश जीते। काबुल, काश्मीर, सिन्ध और कन्दहार आदि उत्तरी देश भी दिल्ली-राज्य में सम्मिलित हो गये।

दक्षिण पर चढ़ाई—उत्तर के देशों पर अपना अधिकार स्थापित करने के बाद बादशाह ने दक्षिण पर चढ़ाई करने का विचार किया। सन १५८६ ई० में जब निज़ामशाही राज्य के उत्तराधिकारियों में परस्पर झगड़ा हुआ तब अकबर ने बुरहान को, जो मुर्तज़ा निज़ामशाह का भाई था, सहायता की। अहमदनगर का झगड़ा शान्त नहीं हुआ और बादशाह को अपना आधिपत्य स्थापित करने का अवसर मिला। राजकुमार मुराद गुजरात से और मिर्ज़ाख़ाँ मालवा से सेना लेकर अहमदनगर पहुँचे। इस समय नगर चाँदबीबी के हाथ में था। यह बड़ी वीर स्त्री थी। मुग़लों के आने की ख़बर सुनते ही वह युद्ध के लिए तैयार हुई। चाँदबीबी बड़ी वीरता से लड़ी और मुग़ल पीछे हट गये। परन्तु फिर लड़ाई आरम्भ हुई। सुलताना के हाकिमों ने उसके साथ विश्वासघात किया परिणाम यह हुआ कि जब वह मुग़लों के साथ सन्धि की बातचीत कर रही थी तब सिपाहियों ने उसको मार डाला। इस [illegible] दण्ड मिला। मुग़लों ने बड़े

[illegible] का धावा किया और हजारों को जान से मार [illegible]। थोड़े दिनों तक लड़ाई होती रही परन्तु अन्त में [illegible] बादशाह ने जीत लिया और [illegible] लिया।

[illegible] की सेना ने [illegible] की [illegible] । परन्तु थोड़े समय के बाद [illegible] फिर [illegible] । [illegible] उसके गुर्ग [illegible] फिर [illegible], जिसका कि [illegible] हो था, सन् १५[illegible] [illegible] गया था। बादशाह स्वयं एक [illegible] और [illegible] [illegible] और [illegible] के [illegible] लिए [illegible] गया। [illegible] बादशाह [illegible] [illegible] [illegible] सन् १६०१ ई० में, [illegible]

[illegible]

काबुल
काश्मीर
लाहौर
बनारस
इलाहाबाद
अहमदाबाद
गोआ
बङ्गाल की खाड़ी
नक़शा
भारतवर्ष का
सन् १६०५ ई०
मीलों का स्केल

[अ]कबर को बड़ा खेद हुआ। उसने सलीम को समझाने को [...]न, एक चिट्ठी लिखी और कहा कि तुम्हारा आचरण अनु[चि]त है। चिट्ठी पाकर सलीम बादशाह से भेंट करने चल [प]ड़ा और इटावा तक पहुँच गया। बादशाह ने उसका [...] भाव देखकर उसका अपराध क्षमा कर दिया। परन्तु [...]न् १६०२ ई० में सलीम ने अपने पिता की ओर बढ़ पहुँ[...] [...]ता। अबुलफज़्ल को सलीम अपना घोर शत्रु समझता [था]। उसका विश्वास था कि उसी ने बादशाह का मन इसकी [...] ओर से हटा दिया था। जब अबुलफज़्ल दक्षिण से लौट [र]हा था तब सलीम ने उसको मरवा डाला। इस घटना [की] खबर पाकर अकबर शोक से व्याकुल हो गया। दो दिन-रात तक उसने न कुछ खाया और न उसे नींद आई। अकबर ने सलीम को इलाहाबाद जाने की आज्ञा दे दी। [...] इस समय सलीम का स्वभाव चिड़चिड़ा हो गया था। वह अपने नौकर-चाकरों के साथ अनुचित व्यवहार करने लगा था। [illegible]

[illegible]

के अपराध क्षमा किये और उसको अपना उत्तराधिकारी बनाया।

अकबर की मृत्यु—सितम्बर सन् १६०५ ई० में बादशाह का स्वास्थ्य बिगड़ने लगा। उसको संग्रहणी का रोग हो गया। चिकित्सा बहुत की गई परन्तु कोई लाभ न हुआ। उस समय बादशाह ने सब अमीरों को अपने सम्मुख बुलाया। उसने कहा—"सलीम नासमझ है; यदि आप लोगों के साथ इसने कोई अनुचित व्यवहार किया हो तो आप लोग क्षमा करें। मैं नहीं चाहता कि इसके और आप लोगों के बीच में किसी प्रकार का वैमनस्य रहे।" सलीम बादशाह के पैरों पर गिर पड़ा और फूट-फूटकर रोने लगा। अकबर ने अपनी तलवार उसे दी और कहा कि आज से तुम हिन्दुस्तान के बादशाह हुए।

इसके बाद बादशाह ने एक मुल्ला को बुलाया और उससे कलमा पढ़ने को कहा। १७ अक्टूबर सन् १६०५ ई० को अकबर का देहान्त हो गया। आगरे के पास सिकन्दरे के बीच में उसकी लाश दफ़न की गई। मृत्यु के समय बादशाह की अवस्था ६३ वर्ष की थी।

अध्याय ३०

अकबर

(क्रमशः)

अकबर का स्वभाव और चरित्र—अकबर हष्ट-पुष्ट [illegible] था।

उसमें शारीरिक बल बहुत था। उसका रङ्ग गोरा और आवाज़ बुलन्द थी। बाल-काल से वह बादशाह प्रतीत होता था। उसके नेत्रों में एक तेज था जिसका सब पर प्रभाव पड़ता था। युवावस्था में वह मदिरा पीता और मांस भी खाता था परन्तु राजसिंहासन पर बैठने के कुछ दिन बाद उसने यह व्यसन छोड़ दिया था। वह मांस भी कम खाने लगा था। वह सोता बहुत कम था। वह स्वल्प सादा भोजन करता और शुद्ध गंगाजल पीता था। स्वयं लिख-पढ़ नहीं सकता था, परन्तु ज्ञान प्राप्त करने की इच्छा इतनी तीव्र थी कि कभी-कभी तो वह सारी रात शास्त्रार्थ सुनने में बिता देता था। उसके शरीर में बड़ी फुर्ती थी। राज्य का काम वह बड़ी योग्यता और तत्परता से करता था और कठिन से कठिन परिश्रम से भी नहीं घबराता था। घोड़े की सवारी उसे बहुत प्रिय थी। कभी-कभी वह घोड़े पर ही बहुत दूर चला जाता था। एक बार वह अजमेर से आगरे तक, २२८ मील, घोड़े पर दो ही दिन में आया था। [illegible]

[illegible]

कोई काम ऐसा नहीं था जिसे वह न कर सकता हो। वह तोप और अस्त्र-शस्त्र बनाना भी जानता था।

उसका स्वभाव कोमल था। बिना कारण वह किसी को सज़ा नहीं देता था। उसने बहुत-से देशों को पराजित किया था परन्तु उसने न तो उनको नष्ट किया और न प्रजा को सताया। लेकिन जब उसे क्रोध आता था तब उसका शान्त करना कठिन था। आदमख़ाँ को उसने क़िले की दीवार में नीचे ढकेलवा दिया था परन्तु क्रोध शान्त होने पर वह वैसा ही नरम हो जाता था जैसा कि वह स्वभाव से था। छोटे-बड़े सबके साथ वह दया का बर्ताव करता था। पक्षपात उसे छू तक नहीं गया था। वह सब धर्मों का आदर करता था।

अकबर को लड़कपन में कुछ भी शिक्षा नहीं मिली थी क्योंकि उसका पिता हुमायूँ एक स्थान पर नहीं ठहरने पाया था। कोई-कोई कहते हैं कि बचपन में उसे पढ़ने से अरुचि थी। उसके पढ़ाने को कई अध्यापक रक्खे गये परन्तु उसने कुछ भी शिक्षा नहीं प्राप्त की। मेधावी पुरुषों का बहुधा यही हाल होता है। यद्यपि वह स्वयं पुस्तकें नहीं पढ़ सकता था परन्तु उसे ज्ञान बहुत हो गया था। वह धर्मशास्त्र, इतिहास और साहित्य के ग्रन्थों को सुनता और शीघ्रता से उनका तात्पर्य समझ जाता था। विद्वानों से वह प्रेम करता था। धर्म-सम्बन्धी शास्त्रार्थ उसे अत्यन्त प्रिय लगते थे। फ़ैज़ी अपनी कविता लिख-लिखकर उसको सुनाता था। राजभवन में एक बड़ा पुस्तकालय था जिसमें बहुत-सी पुस्तकें थीं। गानविद्या और चित्रकारी का भी उसे बड़ा शौक था। उस समय के प्रसिद्ध गायक तानसेन का गाना बादशाह अकबर सुनता था। [illegible] अपनी [illegible]

दीनइलाही—२४ वर्ष की अवस्था तक अकबर ने मुसलमानी धर्म का पूर्ण रीति से पालन किया। परन्तु [illegible] और उसके पीछे अबुलफज़ल आया [illegible] दर्बार में आये तब उसके विचारों में परिवर्तन आरम्भ [illegible] गया। वे [illegible] बड़े विद्वान और सूफ़ी मत के अनुयायी थे [illegible] उन्होंने [illegible] के विचार [illegible] किये। अकबर स्वयं कभी [illegible] मुसलमान नहीं था। ज्यों-ज्यों अवस्था बढ़ती गई और बुद्धि का विकास होता गया, त्यों-त्यों उसे [illegible] मालूम होने लगा। हिन्दू रानियों से विवाह करने के कारण [illegible] हिन्दू धर्म की ओर भी [illegible] थी। फिर [illegible] पड़ा। हिन्दू [illegible] और [illegible] करने से और [illegible] है।

[illegible]

मुसलमान मौलवी बहुत पक्षपात करते थे और हिन्दुओं को भला-बुरा कहते थे। इसलिए बादशाह और भी नाराज़ हुआ। उसने एक नया मत चलाया जिसका नाम उसने दीनइलाही (ईश्वरीय धर्म) रक्खा। इस मत में बहुत से धर्मों की अच्छी-अच्छी बातें थीं। इस धर्म का मुख्य सिद्धान्त यह था कि ईश्वर एक है और बादशाह उसका प्रतिनिधि अथवा दूत है। मनुष्य को बुद्धि से काम लेना चाहिए: क्योंकि अन्धविश्वास धर्म नहीं है। बस, दीनइलाही का यही मुख्य सिद्धान्त था। इसी को मानने का बादशाह सबको आदेश करता था। बादशाह प्रात:काल उठते ही सूर्य को नमस्कार करता और सूर्य, नक्षत्र तथा अग्नि को वह ईश्वर की अद्भुत शक्ति के प्रत्यक्ष प्रमाण समझता था। इस मत में कोई मुल्ला और मौलवी नहीं थे। कुछ लोग इस मत के अनुयायी हो गये थे परन्तु उनकी संख्या अधिक नहीं थी। इस मत के अनुयायियों में राजा बीरबल ने भी अपना नाम लिखा दिया था परन्तु राजा मानसिंह ने साफ़ इनकार कर दिया था।

कभी-कभी बादशाह अपने माथे पर तिलक लगा लेता और माला भी पहन लेता था। महल में हिन्दू रानियों के लिए मन्दिर बने हुए थे जहाँ हिन्दू देवताओं की पूजा होती थी। बादशाह की ओर से सबको अपना धर्म पालन करने की आज्ञा थी।

हिन्दुओं के साथ बर्ताव—हिन्दुओं के साथ अकबर का बर्ताव सराहनीय था। जजिया उसने बन्द कर दिया था और धर्म के मामले में पूरी स्वतन्त्रता दे दी थी। हिन्दूयात्रियों पर से कर [illegible] दिया गया था। हिन्दुओं में [illegible] बाल-विवाह [illegible] को [illegible] कहने का भी बादशाह ने [illegible] पुनर्विवाह करने

[illegible] दाता है दी और पशुओं का बलिदान बन्द करा दिया। उसने हिन्दुओं को उनके बड़े-बड़े पदों पर नियुक्त किया। राजा भगवानदास और राजा मानसिंह [illegible] और बादशाह के विश्वासपात्र थे।

अकबर का शासन-प्रबन्ध — अकबर की शासन-पद्धति अन्य मुसलमान बादशाहों से भिन्न थी। सारा साम्राज्य १५ सूबों में बाँटा गया था। प्रत्येक सूबे में [illegible] नियुक्त था, जो सूबेदार अथवा सिपहसालार कहलाता था। उसको राज्य की ओर से पूरा अधिकार दिया जाता था। [illegible] सूबा कई जिलों में विभाजित था। [illegible]

प्रबन्ध करता था और हर एक बात को जानने की कोशिश करता था। बाजार में चीजों के निर्ख की भी वह देख भाल रखता था। देहात में भी पुलिस के अफसर नियुक्त थे। अपराधियों को कड़ा दण्ड दिया जाता था और कभी-कभी छोटे-छोटे अपराधों के लिए बहुत कड़ी सजा दे दी जाती थी।

ज़मीन की नाप और मालगुजारी का प्रबन्ध— अकबर के समय में ज़मीन के बन्दोबस्त और लगान के नियमों में भी परिवर्तन हुआ। इस काम को राजा टोडरमल ने किया था। वह पंजाब का एक खत्री था। टोडरमल अकबर का अर्थसचिव था। वह हिसाब-किताब में कुशल तो था ही, बहादुर भी था। बादशाही सेना के साथ वह कई लड़ाइयों में लड़ चुका था और अपनी कुशलता और नेकनीयती के कारण बादशाह का विश्वासपात्र बन गया था। पहले तो ज़मीन की पैमाइश की गई फिर प्रति बीघे के हिसाब से पैदावार की औसत लगाई गई। पैदावार के अनुसार ज़मीन तीन दर्जों में बाँटी गई। जो बढ़िया ज़मीन थी उस पर अधिक कर लगाया गया। कुल पैदावार का तिहाई हिस्सा सरकार लेती थी। 'कर' के समय सरकार की ओर से तकावी दी जाती थी [illegible] किसानों [illegible] मालूम हो

...र कि कितना कर देना है। इससे इन्हें बड़ी सुविधा ...है। बन्दोबस्त दस वर्ष के बाद होता था। बहुत से कर, ...। अब तक प्रजा से वसूल किये जाते थे, बन्द कर दिये गये।

हिन्दुओं की दशा—अकबर के राज्य में प्रजा सुखी ...ी। खाने पीने की चीज़ें बहुत सस्ती बिकती थीं। हिन्दू ...ग बादशाह के न्याय और शासन से सन्तुष्ट थे। ...बसे बड़ी बात यह थी कि उनको अपना धर्म पालन ...रने की पूरी स्वतन्त्रता थी। अकबर के पहले हिन्दुओं को ...हुत से कर देने पड़ते थे और सरकारी नौकरी बहुत कम ...िलती थी। परन्तु अब ऐसा न था। हिन्दू लोग प्रसन्न थे। ...ोई किसी को सता नहीं सकता था। दूसरे राजाओं की ...रह अकबर आलसी नहीं था। राज्य का काम वह स्वयं ...रता था और जो उसकी आज्ञा नहीं मानते थे ...नको कड़ा दण्ड देता था। यद्यपि वह अपने इच्छानुसार राज्य ...रता था तब भी उसने अपने अधिकार का दुरुपयोग कभी ...हीं किया। यदि मुसलमान अमीर किसी प्रकार का अनुचित ...यवहार करते तो वह उन्हें सज़ा देता था। बादशाह ...हिन्दू, मुसलमान, पारसी और ईसाई सबके साथ दया का ...र्ताव करता और सबको अपने दर्बार में स्थान देता था।

अकबर की सभा के रत्न—बादशाह के दर्बार में ...ूरवीर और विद्वान लोग बहुत थे। उनमें कुछ ...ने थे ...िनसे वह विशेष प्रेम करता था। ... ... और राजा ...ोवानदास सेना में ऊँचे पदों पर ... ...ौर फैज़ी दोनों भाई दर्बार के ... ...ाई तन, मन, धन से अपने स्वामी ... ...हते थे। इसी कारण सम्राट् को उन पर ... ...ैज़ी कवि था और संस्कृत ... ...

संस्कृत की पुस्तकों का फ़ारसी में अनुवाद किया था। अबुलफ़ज़्ल बड़ा राजभक्त था। उसने बादशाह के विचारों में बड़ा परिवर्तन कर दिया था। उसने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'आईन-अकबरी' और 'अकबरनामा' में अकबर के राज्य का विस्तार-पूर्वक हाल लिखा है। बादशाह का विश्वासपात्र होने के कारण उससे मुसलमान लोग द्वेष रखते थे। सलीम उससे बड़ी ईर्ष्या रखता था और अन्त में वही उसकी मृत्यु का कारण हुआ। अबुलफ़ज़्ल ने अपनी पुस्तक में सम्राट की मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की है। राजभक्त होने के कारण उसे बादशाह के दोष नहीं दिखाई देते थे परन्तु उसकी ये दोनों पुस्तकें सदैव अमर रहेंगी। उनके पढ़ने से पता लगता है कि अबुलफ़ज़्ल कैसा योग्य और विलक्षण पुरुष था। इन पुस्तकों में साम्राज्य का सविस्तर वर्णन है और अकबर के समय के जितने इतिहास लिखे गये हैं, सब इन्हीं के आधार पर रचे गये हैं।

राजा टोडरमल पञ्जाब का हिन्दू था। वह अपना धर्म पालन करने में बड़ा कट्टर था। वह जहाँ कहीं जाता, अपनी पूजा की सामग्री साथ ले जाता था। उसने दीनइलाही के अनुयायियों में अपना नाम नहीं लिखाया।

राजा बीरबल अकबर का बड़ा घनिष्ट मित्र था। वह जाति का ब्राह्मण था और मसख़रा तथा ख़ुशदिल होने के कारण सदा बादशाह के साथ रहता था। बादशाह उससे प्रेम करता था। बीरबल के लतीफ़े आज तक हिन्दुस्तान में बड़े प्रेम से पढ़े जाते हैं।

साहित्य, कला की उन्नति—अकबर के शासन-काल में साहित्य और कला की उन्नति हुई। अबुलफ़ज़्ल का [illegible] किया जा चुका है। फ़ैज़ी

[illegible] गहरे जानता था। बादशाह को संस्कृत विद्या से प्रेम [illegible] लिए उसने रामायण, महाभारत, भगवद्गीता आदि [illegible] का फ़ारसी में अनुवाद कराया। निज़ामुद्दीन अहमद [illegible] अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'तबक़ात अकबरी', जिसमें भारतीय [illegible] का वर्णन है, इसी समय लिखी। उर्दू, हिन्दी [illegible] की भी अच्छी उन्नति हुई। मुसलमानों में भी ऐसे [illegible] थे जो हिन्दी से प्रेम करते थे। अब्दुलरहीम ख़ानख़ाना [illegible] भाषा में कविता करता था। उसके दोहे आज तक [illegible] जाते हैं। तुलसीदासजी का रामचरित मानस भी इसी [illegible] लिखा गया था। संगीत विद्या से भी बादशाह को प्रेम [illegible]। तानसेन उसके दर्बार का प्रसिद्ध गवैया था।

बादशाह को सुन्दर, विशाल इमारत बनाने का शौक़ [illegible]। उसने फ़तहपुर सीकरी में नये महल बनवाये जिनको [illegible] के लिए इस समय भी यात्री दूर देशों से आते हैं। [illegible] में उसने लाल पत्थर का क़िला बनवाया था और उसमें बहुत [illegible] महल बनवाये जो अभी तक मौजूद हैं। बादशाह को [illegible] का भी बड़ा शौक़ था। उसके दर्बार में बहुत से [illegible] थे जो अपनी कृतियों से उसे प्रसन्न किया करते थे।

अध्याय ३१

जहाँगीर

(१६०५ ई० से १६२७ ई० तक)

जहाँगीर का इन्साफ़—अकबर [illegible] गद्दी पर बैठा। [illegible] गद्दी पर बैठते ही जहाँगीर [illegible] आगरा के बड़े-बड़े [illegible]

उसने बहुत-से कर माफ़ कर दिये और हुक्म सौदागरों की तलाशी, बिना उनकी रज़ामन्दी के, न ली लोगों के सुभीते के लिए आगरे के किले की दीवार से जंजीर लटका दी गई जिसका एक सिरा बादशाह के कमरे लटका हुआ था और जिसमें एक घण्टी लगी हुई थी। किसी को कुछ फरियाद करनी होती तो वह इस जंजीर खींच देता था। इससे बादशाह के कमरे में घण्टी बज थी। घण्टी बजने से बादशाह को शीघ्र मालूम हो जाता कि किसी को कुछ कहना है। इसमें सन्देह नहीं कि बा शाह इन्साफ-पसन्द था परन्तु भय के मारे लोग जंजीर बहुत कम खींचते रहे होंगे।

ख़ुसरू की बग़ावत—अपने बेटे ख़ुसरू से जहाँ सदा अप्रसन्न रहता था और दोनों में अकसर लड़ाई करती थी। अकबर के मरने के समय ख़ुसरू को बादशाह उत्तराधिकारी बनाने की चेष्टा की गई, परन्तु सलीम का शाह से समझौता होने के कारण ख़ुसरू को सफलता हुई। सलीम जब गद्दी पर बैठा तब उसने बग़ावत की वह अपने साथियों को लेकर पञ्जाब की ओर चल दिया जहाँगीर भी आगरे से एक बड़ी सेना लेकर लाहौर पहुँचा लड़ाई में ख़ुसरू हार गया और काबुल की तरफ़ भाग परन्तु पकड़ा गया। उसके मुख्य साथियों को बादशाह बहुत कठिन दण्ड दिया। एक को बैल की खाल में कराया और दूसरे को गदहे की खाल में और फिर दोनों गदहों पर बिठला कर नगर में फिराया। शाहज़ादे के ७ साथियों को बड़ी निठुरता के साथ फाँसी दी गई। वह ख़ु [illegible] [illegible]। पूरे तीन दिन तक वह [illegible]
[illegible]।

सन् १६१[illegible] के लगभग शाहजादे ने खुसरू को [illegible] सुपुर्द कर दिया जो उसने यहीं [illegible] था। [illegible] न बढ़े के बाद उसे शाहजादा खुर्रम (शाहजहाँ) सुपुर्द कर दिया। उसने एक [illegible] के रूप में उसे [illegible]। जहाँगीर को जब यह खबर मिली तब उसे [illegible] हुआ परन्तु अब क्या हो सकता था, वह नूरजहाँ [illegible] था और खुर्रम ने नूरजहाँ को [illegible] में [illegible] किया था।

नूरजहाँ—अपने पिता की तरह जहाँगीर ने भी [illegible] [illegible] से विवाह किया था। [illegible] [illegible] था। परन्तु सन् १६११ के [illegible] [illegible] [illegible] नूरजहाँ के नाम से [illegible] किया। नूरजहाँ का [illegible] का नाम [illegible] [illegible] मिर्जा [illegible] का [illegible] [illegible] के बाद [illegible] [illegible] [illegible] के [illegible] [illegible] [illegible] नूरजहाँ का जन्म हुआ। [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

के साथ करा दिया। जहाँगीर जब बादशाह हुआ तब [illegible] अपनी इच्छा पूरी करने का मौक़ा मिला। उसने शेर अफ़[illegible] को वर्दवान का हाकिम नियत किया। परन्तु कुछ समय [illegible] बाद बादशाह उससे अप्रसन्न हो गया। उसने कुतुबुद्दीन [illegible] भेजा कि शेर अफ़ग़न को पकड़ कर दर्बार में ले आवे। जब कुतुबुद्दीन ने ईरानी को गिरफ़्तार करने की कोशिश की [illegible] दोनों में लड़ाई हो गई। इस लड़ाई में दोनों मारे गये। नूरजहाँ आगरे लाई गई। बादशाह ने उससे कहा कि [illegible] साथ विवाह कर लो*। वह बड़ी बहादुर और बुद्धिम[ान] स्त्री थी। पहले तो उसने साफ़ इनकार कर दिया पर [illegible] ४ वर्ष के बाद जब उसका शोक और क्रोध जाता रहा [illegible] उसने जहाँगीर के साथ विवाह कर लिया।

विवाह होते ही उसका प्रभुत्व बढ़ गया। उसका नाम नूरमहल के बदले नूरजहाँ (संसार की रोशनी) रक्खा गया। उसके बाप को ऐतमादुद्दौला की और उसके भाई को आसफ़ख़ाँ की उपाधि मिली। दोनों ऊँचे-ऊँचे ओहदों पर नियुक्त किये गये।

जहाँगीर के बराबर आरामतलब और शराबी बादशाह मुग़ल-वंश में कोई नहीं हुआ। उसने सब काम नूरजहाँ के भरोसे छोड़ दिया था। वह स्वयं मदिरा पीकर मस्त रहता और कहा करता था कि मुझे स्वादिष्ट भोजन और उत्तम मदिरा के सिवा और किसी वस्तु की आवश्यकता नहीं। परन्तु दिन में वह बिलकुल शराब नहीं पीता था। एक बार एक [illegible]

---

* [illegible] के प्रोफ़ेसर बेणीप्रसाद ने अपनी पुस्तक [illegible] में यह सिद्ध करने की कोशिश की है कि [illegible] [illegible] मरवाया था। न बादशाह को [illegible] [illegible] समकालीन मुसलमान इतिहासकार [illegible] [illegible] जान में बादशाह का हाथ था।

गद्दी पर बैठने के बाद पाँच-सात सालों में अधिक नहीं। जब उसे क्रोध आता था तब वह कुछ भी आगा-पीछा देखता था और भयानक दण्ड देता था। वह गर्मी के दिनों में इसमाइल कारगीर हुआ स्नाने आया करता और दर्शकों को देखकर प्रसन्न होता था। चित्रकारी का मानता था और नगीना-रिश्ता का प्रेमी था।

अध्याय ३२

शाहजहाँ

(१६२० ई० से १६५८ ई० तक)

राजगद्दी पर बैठना—शाहजहाँ में राजपूत अधिक था क्योंकि उसकी माँ राजपूतनी थी और उसका जहाँगीर आधा-राजपूत था। राजसिंहासन के हकदार समय केवल खुर्रम और शहरयार ही थे। जब तक खुर्रम आ पहुँचा, आसफ़खाँ ने खुसरू के बेटे को बादशाह बना दिया। खुर्रम शीघ्र दक्षिण से आया और उसने एक करके अपने कुटुम्बियों का सफ़ाया डाला और स्वयं बादशाह बन गया। शाहजहाँ का नाम हिन्दुस्तान में प्रसिद्ध है क्योंकि मुग़ल बादशाहों में इसके बराबर शानशौक़त से कोई न रहता था। उसने बनवाये महल, मक़बरे और मस्जिदें इत्यादि जो अब तक मौजूद हैं।

राज-विद्रोह—सिंहासन पर बैठने के थोड़े ही दिन बाद बुन्देलखण्ड में [illegible] शाही फ़ौज [illegible] ख़ानजहाँ [illegible]

[illegible] बादशाह [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] सुन्दर थी और बादशाह [illegible] प्यार करता था । [illegible] [illegible] बच्चे हुए परन्तु [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] कहा कि यदि मृत्यु के बाद [illegible] विवाह न [illegible] [illegible] [illegible] बनवाना कि जिससे [illegible] [illegible] बादशाह ने यह बात [illegible] [illegible] फिरते थे, यह [illegible] [illegible] है । [illegible] [illegible] और ३० करोड़ रुपया [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है ।

[illegible]

पुर्तगाल के लोग—पुर्तगाल-निवासी कुछ व्यापारी [illegible] के किनारे ठहर गये थे। वे गुलामों का व्यापार करते थे और हिन्दू और मुसलमान अनाथ बालकों को ईसाई बना लेते थे। एक बार उनसे मुमताज़महल अप्रसन्न हो गई। बादशाह ने बङ्गाल के सूबेदार क़ासिमख़ाँ को आज्ञा दी कि [illegible] का नाश कर दो। हुक्म की देर थी, बहुत से मारे गये और बहुत से क़ैद कर लिये गये।

दक्षिण की चढ़ाई—ऊपर कह चुके हैं कि शाहजहाँ ने अहमदनगर पर चढ़ाई की थी। दो राज्य दक्षिण में और थे जिनके साथ लड़ाई करनी पड़ी—बीजापुर और गोल-कुण्डा। सन् १६३२ ई० में अहमदनगर के स्वतन्त्र राज्य का अन्त हो गया। सन् १६३५ ई० में फिर दक्षिण में युद्ध आरम्भ हुआ और बीजापुर का बादशाह बड़ी वीरता से लड़ा। उसने सन्धि कर ली और कर देना स्वीकार किया। अहमदनगर के राज्य को शाहजहाँ और आदिलशाह ने पर-स्पर बाँट लिया। इसी समय बादशाह ने अपने तीसरे बेटे औरङ्गज़ेब को, जो केवल १८ वर्ष का था, दक्षिण का सूबे-दार नियत किया। इतने में ख़बर आई कि बलख़ और कन्द-हार फिर तुर्कों के हाथ से निकल गये। वहाँ पर बादशाह ने औरङ्गज़ेब को भेजा परन्तु सफलता प्राप्त न हुई। औरङ्ग-ज़ेब और सादुल्लाख़ाँ ने बहुत-से उपाय किये किन्तु कुछ न हुआ। तीसरी बार फिर सन् १६५३ ई० में दाराशिकोह सेना लेकर कन्दहार पहुँचा परन्तु ५ महीने के बाद वह भी लौट आया और कन्दहार तुर्कों के हाथ में बना रहा।

औरङ्गज़ेब फिर दक्षिण को गया और उसने गोलकुण्डा पर एकाएक हमला किया। वह [illegible]
परन्तु [illegible]

सुलतान ने इस बीच में अपना राज्य बढ़ा लिया था। औरङ्गज़ेब ने आदिलशाह के मरने के बाद फिर १६५६ ई० में, मीरजुमला की सहायता से, बीजापुर पर हमला किया, उसने बीदर का किला ले लिया। वह बीजापुर को घेरने वाला था कि इतने में बादशाह ने सन्धि की आज्ञा दे दी।

शाहजहाँ का कुटुम्ब—शाहजहाँ के चार बेटे और दो बेटियाँ। बेटों के नाम थे—दारा, शुजा, औरङ्गज़ेब और मुराद। बेटियों के नाम थे—जहाँनारा और रौशनारा। सबसे बड़ा लड़का दारा उदारचित्त था। उस पर बादशाह का विशेष प्रेम था। उसी को वह अपना उत्तराधिकारी बनाना चाहता था और उसके लिए दरबार में एक चौकी रक्खी जाती थी जिस पर बैठकर वह राजकार्य में बादशाह की सहायता करता था। शुजा वीर था परन्तु वह अपना अधिकांश समय भोग-विलास में नष्ट करता था। औरङ्गज़ेब बड़ा बहादुर, चालाक और मज़हब का पाबन्द था।

मुराद शूर था और खूब शराब पीता था। बादशाह ने चारों बेटों को दूर-दूर चार सूबे दे रक्खे थे जिससे उनमें ईर्ष्या न उत्पन्न हो। दारा तो सदा बादशाह के पास ही रहता था और दूसरे भाई अपने-अपने सूबों में रहते थे। सबके पास सेनायें थीं परन्तु उनमें ईर्ष्या उत्पन्न हो गई और वे एक दूसरे के विरुद्ध षड्यंत्र रचने लगे।

राजसिंहासन के लिए युद्ध—सन १६५७ ई० में शाहजहाँ बीमार पड़ा। दारा दिन-रात उसके पास रहता था। चारों तरफ खबर फैल गई कि बादशाह मर गया। [illegible] गुजरात में [illegible] शुजा ने बंगाल में बगावत [illegible] मुराद से मेल कर

और कहा कि मैं लड़ाई में जीत होने पर तुम्हें पंजाब, , कश्मीर और काबुल का राज्य दे दूँगा। मुराद इस र राज़ी हो गया। दोनों अपनी फ़ौजें लेकर उत्तर को चले। दारा ने मारवाड़ के राजा जसवन्तसिंह और सेनापति क़ासिमख़ाँ को उनका मुक़ाबला करने के भेजा। उज्जैन के पास लड़ाई हुई जिसमें शाही फ़ौज हार हुई। उज्जैन से दोनों भाई उत्तर की तरफ़ चले। रे से ८ मील दूर समोगर* (सामूगढ़) के मैदान में दारा लड़ाई हुई जिसमें उसकी फिर हार हुई। दारा दिल्ली र की तरफ़ भाग गया। औरङ्गज़ेब आगरे आया। वहाँ च कर उसने क़िले पर क़ब्ज़ा कर लिया और अपने र को वहीं क़ैद कर लिया।

जब औरङ्गज़ेब दारा का पीछा करता हुआ दिल्ली की तरफ़ जा रहा था तब उसे मुराद की तरफ़ से उसे शक था कि वह स्वयं बादशाह बनना चाहता है। मथुरा के न करने देने में उसने मुराद को दावत की और उसे वहीं क़ैद कर लिया और दिल्ली में पहुँच कर बादशाह बन बैठा। समोगर की लड़ाई के बाद दारा सिन्ध, गुजरात होता हुआ

*समोगर आगरा से ८ मील दूर पर एक गांव है। प्रोफ़ेसर यदुनाथ सरकार अपने औरङ्गज़ेब के इतिहास में लिखते हैं कि यह लड़ाई समोगर के पास हुई थी। वे प्रसिद्ध इतिहासज्ञ हैं। उनका कहना अधिक विश्वसनीय है।

अहमदाबाद पहुँचा। इस समय उसके पास कुछ फ़ौज भी थी। अजमेर में फिर औरङ्गज़ेब से लड़ाई हुई परन्तु दारा की हार हुई। उसने भागकर एक अफ़ग़ान के यहाँ शरण ली। अफ़ग़ान बड़ा धोखेबाज निकला। उसने उसे औरङ्गज़ेब के हवाले कर दिया। फटे कपड़े पहना कर औरङ्गज़ेब ने दारा को दिल्ली के बाज़ार में एक मैले-कुचैले हाथी पर बिठाकर फिराया और फिर मरवा डाला। मुराद ग्वालियर के क़िले में मार डाला गया। शुजा अराकान की तरफ़ भगा दिया गया। नहीं मालूम, फिर उसका क्या हुआ।

अब औरङ्गज़ेब बादशाह हो गया। शाहजहाँ आगरे के क़िले में ७ वर्ष तक जीवित रहा। उसकी बड़ी बेटी जहाँनारा उसके साथ रही। परन्तु औरङ्गज़ेब ने उसके साथ कभी अनुचित बर्ताव नहीं किया।

शाहजहाँ का चरित्र—सन् १६६६ ई० में शाहजहाँ मर गया। इतिहासकारों ने उसकी बड़ी प्रशंसा की है। उसका स्वभाव कोमल था और बिना कारण वह किसी को नहीं सताता था। वह हमेशा इन्साफ़ करता था और प्रजा के साथ अच्छा बर्ताव करता था। शासन-प्रबन्ध में उसे अपने वज़ीर सादुल्ला ख़ाँ से बड़ी मदद मिली। उसके राज्य में अमन-चैन था और प्रजा सुख से रहती थी। यूरोप के यात्री * जो १७ वीं शताब्दी में हिन्दुस्तान आये, उसकी दौलत और ठाट-बाट की बड़ी प्रशंसा करते हैं। शान-शौकत में कोई बादशाह उसकी बराबरी नहीं कर सकता था। मृत्यु

* [illegible] के समय में [illegible]
[illegible] लिखा है।

के बाद उनकी लाश ताजबीबी के रौज़े में मलिका की क़ब्र के पास गाड़ दी गई।

अध्याय ३३

औरङ्गज़ेब

(सन् १६५८ ई० से १७०७ ई० तक)

२६ मई सन् १६५८ ई० को औरङ्गज़ेब गद्दी पर बैठा। शाहजहाँ आगरे के क़िले में क़ैद था और सन् १६६६ ई० तक जीवित रहा।

चरित्र—औरङ्गज़ेब अपने मज़हब का बड़ा पाबंद था। उसका सदाचार सराहनीय था। वह भोग-विलास से घृणा करता और राज्य के धन को अपने आराम के लिए ख़र्च नहीं करता था। वह अपने हाथ से टोपियाँ बना कर जीवन-निर्वाह करता था। वह कहा करता था कि राजा का कर्तव्य प्रजा के सुख के लिए सदा परिश्रम करना है। वह मोटे कपड़े पहनता था और अन्य बादशाहों की तरह सोने-चाँदी के गहने अथवा जवाहिरात धारण नहीं करता था। वह अपना अधिकांश समय ख़ुदा का नाम लेने में व्यतीत करता था। शुक्र के दिन वह रोज़ा रखता और जामे मस्जिद में नमाज़ पढ़ता था। कभी-कभी तमाम रात इबादत करके [illegible] करता था। उसके दरबार में कोई मनुष्य न शराब पी सकता और न जुआ खेल सकता था। वह [illegible] क़ुरान और धर्म के [illegible] के अनुसार [illegible] करता था। वह युद्ध करने से [illegible] था

युवावस्था में उसने कई लड़ाइयाँ लड़ी थीं। आपत्ति के समय वह बड़े साहस से काम लेता और घबड़ाता न था।

औरङ्गजेब अकबर की तरह उदारचित्त नहीं था। वह रुपया कम खर्च करता था। परन्तु दीन-दुखियों को दान देता था। राजसिंहासन पर बैठने के थोड़े दिन बाद जब अकाल पड़ा तब उसने अपनी प्रजा की सहायता की; ग़रीबों को भोजन दिया और लगभग ८० कर माफ़ कर दिये। उसके भय के मारे लोग काँपते थे। उसके बेटे भी उससे बहुत डरते थे। कहते हैं कि उनमें से एक तो अपने पिता का पत्र पाने पर पीला पड़ जाता था। हाकिम और अमीर लोग भी उससे डरते थे और उसकी मर्जी के खिलाफ़ कभी कोई काम करने का साहस नहीं करते थे।

औरङ्गजेब किसी का विश्वास नहीं करता था। उसके चारों तरफ़ ऐसे षड्यन्त्र रचे जा रहे थे कि दोस्त दुश्मन का पहचानना बहुत कठिन था। जब बादशाह कहीं फ़ौज भेजता तब उसके साथ दो अफ़सर भेजता था। उसके जासूस बहुत से थे जो उसे ख़बरें दिया करते थे। अगर कोई हाकिम रिश्वत लेता या प्रजा को तकलीफ़ देता तो वे बादशाह को ख़बर कर दिया करते थे। बादशाह अपने बेटों के साथ भी बड़ी सख़्ती का बर्ताव करता था। वह ऐसा न्यायी और मजहब का पाबन्द था कि किसी तरह की ज़ियादती या बुराई को सह नहीं सकता था। उसका उत्साह, उसकी सादगी, कर्तव्यपरायणता और धर्म-निष्ठा सब प्रशंसनीय हैं। परन्तु वह यह नहीं सोचता था कि इतना बड़ा राज्य सिर्फ़ सख़्ती से क़ायम नहीं रह सकता।

सङ्गीत विद्या का अन्त--बादशाह यद्यपि सादगी

में सादा रहता था तो भी दरबार का ठाटबाट उसको रखना पड़ता था। जश्न-जलसे भी बहुत होते थे और बादशाह भी उनको देखता था। जहाँगीर और शाहजहाँ के समय में नाच-रंग बहुत हुआ करते थे परन्तु औरङ्गज़ेब गाने-बजाने से घृणा करता था। उसने गाना-बजाना बन्द करा दिया। उसे कविता भी पसन्द नहीं थी। वह कहा करता था कि कवि लोग हमेशा झूठ बोलते हैं। ऐसा होते हुए भी शाहजहाँ दरबार की शान-शौकत में किसी प्रकार की कमी नहीं हुई।

उस्ताद के साथ बर्ताव—औरङ्गज़ेब के बादशाह होने पर उसका पुराना उस्ताद उससे मिलने आया। बादशाह ने उससे कहा कि तुमने मुझे क्या पढ़ाया था [illegible] हैं। क्या तुम जानते थे कि [illegible] कोई आदमी [illegible] सकता है। यह सुनकर बूढ़ा [illegible] पर को वापस चला गया।

शासन-प्रबन्ध—औरङ्गज़ेब के समय में [illegible]

[illegible]

परन्तु अफ़ग़ानों ने खूब बलवा की। भूमिकर वसूल करने के लिए शासन बहुत से नियम जारी किये परन्तु उनके अनुसार काम नहीं होता था। पुलिस का प्रबन्ध अच्छा नहीं था। बादशाह के बहुत दिन तक दक्षिण में रहने के कारण धन का अभाव होगया था। इसलिए प्रान्तीय हाकिमों को अपने हुक्मों को जारी करने में बड़ी दिक्कत होती थी। सेना का भी यही हाल था। दिन पर दिन सेना की हालत खराब होती जाती थी। वेतन ठीक समय पर नहीं मिलता था। काश्तकारों की बुरी दशा थी। लड़ाइयों में हार होने के कारण शाही सेना का रोब-दाब भी कम होगया था।*

सतनामियों की बगावत १६७२ ई०—तीन वर्ष बाद मेवात में सतनामी साधुओं ने उपद्रव किया। झगड़े का कारण यह था कि एक सरकारी हाकिम ने एक साधु के साथ बड़ा अनुचित बर्ताव किया था। इसी पर सारे साधु बिगड़ गये और उन्होंने बगावत शुरू कर दी। बादशाह ने एक सेना भेजी। बड़ी कठिन लड़ाई के बाद विद्रोह शान्त हुआ।

राजपूत-विद्रोह—राजपूत अकबर के समय से मुग़लों का साथ देते आये थे। उन्हें अपनी ओर मिलाने में अकबर ने बड़ी दूरदर्शिता से काम लिया था परन्तु औरङ्गजेब से राजपूत भी अप्रसन्न हो गये। इस अप्रसन्नता का कारण यह था कि बादशाह ने राजा जसवन्तसिंह के बेटों को, काबुल से लौटते समय, दिल्ली में रख लिया और उन्हें मुसलमान करना चाहा। इस पर राजपूत लोग बहुत बिगड़े। इसके अलावा और भी

---

* यह लेख प्रोफ़ेसर यदुनाथ सरकार के इतिहास के आधार पर लिया गया है।

कारण थे जिनसे राजपूत लोग बादशाह से अप्रसन्न हो गये। हिन्दू-धर्म का निरादर भी एक कारण था। राजपूतों की वीर जाति इस अपमान को न सह सकी। उन्होंने लड़ाई की तैयारी कर दी। उदयपुर और जोधपुर के राजा बादशाह के खिलाफ़ थे। केवल जयपुर उसके साथ था। राजकुमार अकबर एक बड़ी सेना लेकर राजपूताने में पहुँचा परन्तु राज्य का लालच देकर उसको राजपूतों ने फुसला लिया।

यह बात जब बादशाह को मालूम हुई तब उसने अकबर को चिट्ठी लिखी। उसमें लिखा कि शाबाश बेटे, तुमने राजपूतों को खूब बहकाया। यह चिट्ठी राजपूतों के हाथों में पहुँची। इससे उन्होंने अकबर का साथ छोड़ दिया। तब वह फ़ारस को चला गया और फिर कभी हिन्दुस्तान में नहीं आया। राजपूतों की बग़ावत को भी बादशाह की सेना ने दबा दिया। राना उदयपुर के साथ सन्धि हो गई। जसवन्तसिंह के बेटे को बादशाह ने जोधपुर का राजा स्वीकार कर लिया।

राजपूतों के साथ औरङ्गज़ेब का बर्ताव अनुचित था। इसका नतीजा यह हुआ कि जब साम्राज्य पर आपत्ति आई तब राजपूतों ने कुछ भी सहायता न की। बादशाह को दक्षिण में अकेले ही लड़ना पड़ा।

औरङ्गज़ेब और दक्षिण—दक्षिण को जीतने की इस बादशाह को बड़ी इच्छा थी। इसने कभी इस बात का विचार नहीं किया कि दक्षिण का जीतना कठिन है क्योंकि दक्षिण की भूमि एक सी नहीं है: पहाड़ और जङ्गल इत्यादि बहुत हैं जिनमें बड़ी-बड़ी सेनायें युद्ध नहीं कर सकतीं। गोलकुण्डा और बीजापुर अभी साम्राज्य के बाहर थे। औरङ्गज़ेब की इच्छा थी कि इनको अपने साम्राज्य में मिला ले। दूसरे, इस

देशों के राजा शियामत के माननेवाले थे। बादशाह स्वयं सुन्नी होने की वजह से शियाओं से उतना ही अप्रसन्न रहता था जितना हिन्दुओं से। सन् १६८६ ई० में उसने बीजापुर जीत लिया और वहाँ के सुलतान को क़ैद कर लिया।

गोलकुण्डा के बादशाह का नाम अबुलहसन था। उसकी बदचलनी और बदइन्तिज़ामी की वजह से औरङ्गज़ेब उससे बहुत नाराज़ था। जब अबुलहसन ने देखा कि बचना कठिन है तब उसने लड़ने का इरादा किया। औरङ्गज़ेब के वीर सिपाही गोलकुण्डा पहुँचे और उन्होंने लड़ना शुरू कर दिया। बड़ी घमासान लड़ाई हुई। अन्त में रिश्वत देकर मुग़ल-सेना क़िले के अन्दर घुस गई। अबुलहसन हार गया और सन् १६८७ ई० में गोलकुण्डा का राज्य मुग़ल-साम्राज्य में मिला लिया गया। बादशाह अब बहुत बूढ़ा हो गया था। उसने २५ वर्ष दक्खिन में बिताये।

इन दक्खिनी राज्यों को मिला लेने से मुग़ल-साम्राज्य का विस्तार तो बढ़ गया, परन्तु इसका परिणाम अच्छा न हुआ। ये दोनों राज्य मरहठों को रोकते रहते थे। परन्तु अब वे बेखटके चारों ओर अपने हाथ-पैर फैलाने और लूट-मार करने लगे। मरहठे जो बीजापुर, गोलकुण्डा में नौकर थे, लूट-खसोट करने लगे। दोनों राज्यों को मिलाकर एक सूबा बनाया गया और एक सरकारी हाकिम के सुपुर्द किया गया। बाद यह हाकिम निज़ाम कहलाया और उसने हैदराबाद को अपनी राजधानी बनाया।

बीजापुर और गोलकुण्डा का नाश होने पर दक्खिन में मर- [illegible] ये लोग बड़े चालाक और [illegible] शाहजी [illegible] शाहजी का बेटा शिवाजी [illegible] किया और उन्हें एक बड़ी

स्वतन्त्र जाति बना दिया। औरङ्गज़ेब और मरहठों से कई वर्ष तक युद्ध हुआ परन्तु महाराष्ट्र में दिल्ली का आधिपत्य स्थापित न हुआ।

सिक्खों का उत्कर्ष—बुढ़ापे में औरङ्गज़ेब को सुख नहीं मिला। राज्य में चारों ओर अशान्ति फैल गई। मरहठों ने लड़ना बन्द नहीं किया। बादशाह के बेटे उसके मरने की बाट देख रहे थे और उनसे दूर रहते थे। पञ्जाब में सिक्खों की जाति शक्तिमान् होती जाती थी। सिक्ख धर्म के मूलप्रवर्तक गुरु नानक थे। उनका वर्णन हम २५ वें अध्याय में कर चुके हैं। गुरु नानक की मृत्यु के बाद ९ गुरु और हुए परन्तु उनमें गुरु गोविन्दसिंह सबसे अधिक प्रसिद्ध हैं। हुमायूँ तथा अकबर के समय में सिक्खों के साथ अच्छा बर्ताव हुआ था। जहाँगीर और शाहजहाँ ने उनके साथ सख़्ती की परन्तु औरङ्गज़ेब के अत्याचार से सिक्ख तंग आ गये। सन् १६७५ ई० में उसने उनके गुरु तेगबहादुर को पकड़वा कर मरवा डाला। इस पर सिक्ख आग-बबूला हो गये। जब गुरु गोविन्दसिंह गद्दीनशीन हुए तब उन्होंने पुराने नियमों को बदल दिया और सबको युद्ध-विद्या सीखने की शिक्षा दी। धीरे-धीरे सिक्ख लड़ने-भिड़ने में चतुर होकर मुसलमानों से लड़ने को तैयार हो गये। सिक्खों और मुग़लों में लड़ाई होती रही और उन्होंने साम्राज्य को बड़ी हानि पहुँचाई। परन्तु अन्त में उनकी हार हुई।

बादशाह के मरने के बाद सिक्खों का दल बहुत बढ़ गया और उन्होंने हिन्दुस्तान में [illegible] [illegible]। उन्होंने अपने [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

मुगलराज्य
सन् १७०० ई०

[illegible]ने का अच्छा अवसर मिला। औरङ्गज़ेब के उत्तराधिकारियों में कोई ऐसा न था जो उनको दबाता। धीरे-धीरे उन्होंने [illegible] में अपना राज्य स्थापित कर लिया।

मृत्यु—औरङ्गज़ेब दक्षिण से लौटा और औरङ्गाबाद में सन् १७०७ ई० में मर गया। मराठों ने उसे अन्तिम समय तङ्ग कर दिया और दूसरा काम करने की फुर्सत न मिलने दी।

अन्तिम समय—औरङ्गज़ेब इस समय बहुत दुखी था। [illegible] में शान्ति नहीं थी। मराठे अभी तक लड़ रहे थे और दिन पर दिन उनकी शक्ति बढ़ती जाती थी। [illegible]

अध्याय ३४

शिवाजी

(१६२७ ई० से १६८० ई० तक)

महाराष्ट्र—हिन्दुस्तान से दक्षिण बहुत दूर है। बीच में विन्ध्याचल और सतपुड़ा पर्वत होने के कारण दोनों देश एक दूसरे से पृथक हैं। दक्षिण पर पहले-पहल अलाउद्दीन खिलजी ने आक्रमण किया था, परन्तु उसने वहाँ राज्य स्थापित नहीं किया था। वह तो केवल लूट-मार करके चला आया था। मुहम्मद तुग़लक दिल्ली का पहला बादशाह था, जिसने दक्षिण के हिन्दू राज्यों को अपने अधीन किया था, परन्तु दक्षिण बहुत काल तक उसके भी अधीन न रहा। बम्बई प्रान्त और उसके आसपास के देशों को महाराष्ट्र कहते हैं। भारत के इसी भाग में मरहठे रहते थे। ये लोग डील-डौल के छोटे, हृष्ट-पुष्ट और परिश्रमी थे। यद्यपि वे राजपूतों की भाँति आत्माभिमानी नहीं थे, परन्तु उनकी अपेक्षा अधिक फुर्तीले और चालाक थे। इनके देश में पहाड़ और जंगल अधिक थे। एक भी भूमि नहीं थी। न कोई सीधे रास्ते थे और न सड़कें थीं। एक स्थान से दूसरे स्थान को जाना बहुत कठिन था। पहाड़ों में किले थे जहाँ ये लोग लड़ाई के समय [illegible] और वहाँ से अपने शत्रुओं पर हमला करते [illegible] महाराष्ट्र के अधीन थे जिनमें [illegible] और [illegible] के बादशाहों का कर देते थे [illegible] मराठे नौकर भी थे। [illegible] और युद्ध-विद्या में निपुण [illegible] था। उसका पिता [illegible] का हाकिम था।

अध्याय ३४

शिवाजी

(१६२७ ई० से १६८० ई० तक)

महाराष्ट्र—हिन्दुस्तान से दक्षिण बहुत दूर है। बीच में विन्ध्याचल और सतपुड़ा पर्वत होने के कारण दोनों देश एक दूसरे से पृथक् हैं। दक्षिण पर पहले-पहल अलाउद्दीन खिलजी ने आक्रमण किया था, परन्तु उसने वहाँ राज्य स्थापित नहीं किया था। वह तो केवल लूट-मार करके चला आया था। मुहम्मद तुग़लक़ दिल्ली का पहला बादशाह था, जिसने दक्षिण के हिन्दू राज्यों को अपने अधीन किया था, परन्तु दक्षिण बहुत काल तक उसके भी अधीन न रहा। बम्बई प्रान्त और उसके आसपास के देशों को महाराष्ट्र कहते हैं। भारत के इसी भाग में मरहठे रहते थे। ये लोग डील-डौल के छोटे, हृष्ट-पुष्ट और परिश्रमी थे। यद्यपि वे राजपूतों की भाँति आत्माभिमानी नहीं थे, परन्तु उनकी अपेक्षा अधिक फुर्तीले और चालाक थे। इनके देश में पहाड़ और जंगल अधिक थे। एक सी भूमि नहीं थी। न कोई सीधे रास्ते थे और न सड़कें थीं। एक स्थान से दूसरे स्थान को आना बहुत कठिन था। पहाड़ों में क़िले थे जहाँ ये लोग लड़ाई के समय आकर छिप जाते और वहाँ से अपने शत्रुओं पर हमला करते थे। ये क़िले सर्दारों के अधीन थे जिनमें से बहुत-से बीजापुर और गोलकुण्डा के राजाओं को कर देते थे। बीजापुर के राज्य में बहुत-से मरहठे नौकर भी थे। [illegible] और युद्ध-विद्या में निपुण [illegible] निकलना था। उसके पिता का [illegible] का हाकिम था।

शिवाजी का जन्म और शिक्षा—शिवाजी का जन्म सन् १६२७ ई० में हुआ था। शिवाजी की शिक्षा बाल्यावस्था में पूना में हुई। वहाँ पहाड़ी लोगों के साथ रहकर उसने बहुत-से वीरता के गीत सीख लिये। दादाजी कोंडदेव नामक ब्राह्मण ने उसे शिक्षा दी, परन्तु शिवाजी ने पढ़ने-लिखने पर विशेष ध्यान नहीं दिया क्योंकि यह ब्राह्मणों का काम समझा जाता था। यद्यपि शिवाजी ने पढ़ना-लिखना नहीं सीखा परन्तु शस्त्र चलाना, कुश्ती लड़ना, तीर चलाना, निशाना लगाना, घोड़े पर चढ़ना इत्यादि सीख लिया था। प्राचीन समय के वीर पुरुषों की कहानियाँ उसने बचपन ही में याद कर ली थीं। इनका उसके चरित्र पर बहुत प्रभाव पड़ा। वह भी एक बड़ा प्रसिद्ध शूरवीर योद्धा होने की इच्छा करने लगा।

शिवाजी का अभ्युत्थान—शिवाजी जब बड़ा हुआ तब उसने देखा कि मरहठों के क़िलों की बुरी हालत है। बीजापुर के सुलतान इन क़िलों की अधिक परवा नहीं करते थे। शिवाजी ने पहले तोरन का क़िला, जो पूना से २० मील के लगभग है, जीत लिया। इसके पीछे उसने और भी कई क़िले ले लिये। महाराष्ट्र में उसने लोगों को मुसलमानों के विरुद्ध ख़ूब भड़काया और कहा कि मेरा उद्देश हिन्दू-धर्म की रक्षा करना है। शिवाजी ने लूट-मार भी आरम्भ कर दी और १६४६ ई० में जुन्नेर के क़िले पर धावा किया।

बीजापुर के राजा ने शिवाजी की उन्नति देखकर उसे दबाने का उपाय सोचा और अपने एक सेनापति अफ़ज़लखाँ को उसके [illegible] उसने शिवाजी को ख़बर भेजी कि तुम्हें [illegible] उसके [illegible] ने जाकर शिवाजी से कहा कि [illegible] है कि मैं

शिवाजी के सारे अपराध बीजापुरनरेश से क्षमा करा दूँगा और उसको जागीर भी दिला दूँगा। यह समाचार सुनकर शिवाजी ने उत्तर दिया कि यदि ख़ान साहब ऐसे कृपालु हैं तो मैं अवश्य उनसे मिलूँगा। परन्तु वास्तव में यह बात नहीं थी। अफ़ज़लख़ाँ उसे पकड़ना चाहता था। इसी लिए उसने यह चाल चली थी। अब शिवाजी ने उसके पास ख़बर भेजी कि आप मुझसे मिलिए। अफ़ज़लख़ाँ आया और अपने सवारों को पीछे छोड़ आया, परन्तु उसके पास एक तलवार थी। शिवाजी को शस्त्र-रहित देख ख़ान ने कहा कि आज अच्छा अवसर मिला। इधर शिवाजी अपने कपड़ों में बाघनख छिपाये हुए था। जब भेंट हुई तो ख़ान ने उसे ज़ोर से पकड़ कर अपनी तलवार से प्रहार किया। शिवाजी ने झट अपने को सँभाल कर सोटे का पंजा ख़ान के पेट में घुसेड़ दिया। चारों ओर से मरहठे इकट्ठे हो गये और बीजापुर की सेना पर टूट पड़े। अफ़ज़लख़ाँ का सिर शिवाजी ने काटकर पहाड़ पर गाड़ दिया और उस पर एक बुर्ज बना दिया।*

बीजापुर के राजा ने एक बार फिर अपनी सेना शिवाजी से लड़ने को भेजी परन्तु उसकी हार हुई। जब बीजापुर का डर न रहा तब लूट-खसोट आरम्भ हुई। मरहठे मुसलमानों को बड़ा कष्ट देने लगे। लूट से जो माल मिलता था उसका अधिकतर भाग राज्य के कोष में जमा होता था।

शिवाजी की धाक सारे महाराष्ट्र में बैठ गई। बहुत से मराठे उसके अधीन हो गये और उसका राज्य कल्याण से [illegible] तक और पूना से [illegible] तक फैल गया।

---

* [illegible] शिवाजी के इतिहास में [illegible] गया किया था। आज इसे [illegible] की गया ही बात है।

शिवाजी और मुग़ल—अब शिवाजी ने मुग़लों से लड़ाई आरम्भ कर दी। अभी तक वह इनसे दूर रहा था परन्तु अब उसने देखा कि मुग़ल-राज्य में लूटमार करने से बहुत माल मिल सकता है। उसने इस बात की घोषणा कर दी कि मेरा कर्तव्य गाय और ब्राह्मण की रक्षा करना है। मुसलमानों से लोग पहले ही से असन्तुष्ट थे। सबने हृदय से शिवाजी की सहायता करना स्वीकार किया। औरङ्गज़ेब ने शाइस्ताखाँ को, जो दक्खिन का सूबेदार था, मरहठों से लड़ने को भेजा। शाइस्ताखाँ ने कई क़िले जीत लिये और मुसलमानों ने मरहठों को हरा दिया। महाराष्ट्र का उत्तरी भाग शाइस्ताखाँ ने अपने वश में कर लिया और वह पूना में आया। जाड़े के दिन थे। वह वहीं पर आराम करने लगा। शिवाजी चुपके से पहाड़ से निकला और अपने साथियों को लेकर, एक बारात बनाकर, नगर में घुस आया। उसने शाइस्ता के सिपाहियों पर हमला कर दिया। मरहठे शाइस्ता के घर में घुस गये और उसके आदमियों को मारने और चिल्ला-चिल्ला कर कहने लगे कि ऐसी ही रखवाली करते हैं। शाइस्ताखाँ का बेटा मारा गया और वह स्वयं पूना छोड़ कर भाग गया।

शाइस्ताखाँ को बादशाह ने बंगाल भेज दिया और [illegible] कुमार मुअज़्ज़म को दक्खिन में भेजा। इसी समय शिवाजी [illegible] ने सूरत पर छापा मारा और ईस्ट इंडिया कम्पनी की कोठी को लूटना चाहा। पर यह ४० दिन तक रोके रही। अंग्रेज़ों के मालिक सर जार्ज ऑक्सिन्डन ने अपनी रक्षा की परन्तु मराठे बहुत धन ले गये।

शिवाजी और जयसिंह— औरङ्गज़ेब ने अपने

पति जयसिंह को शिवाजी के विरुद्ध भेजा। शिवाजी ने जयसिंह से सन्धि की बातचीत की और कहा कि मैं सब क़िले छोड़ दूँगा और बादशाह के अधीन हो जाऊँगा। जयसिंह शिवाजी को लेकर आगरे पहुँचा। परन्तु जब शिवाजी दरबार में गया तब बादशाह ने उसके साथ अनुचित बर्ताव किया। शिवाजी की तरफ़ से बादशाह को नज़र दी गई। औरङ्गज़ेब ने उसे देखकर कहा—आओ शिवाजी राजा। शिवाजी ने सिंहासन के पास जाकर तीन बार सलाम किया। फिर बादशाह के संकेत करने पर उसे दरबारी उसके नियत स्थान पर ले गये। वह स्थान तीसरे दरजे के सर्दारों में था। दरबार का काम होता रहा। औरङ्गज़ेब ने शिवाजी की तरफ़ फिर देखा भी नहीं। इस अपमान को शिवाजी न सह सका। वह बहुत अप्रसन्न हुआ और क्रोध के मारे बेहोश हो गया। औरङ्गज़ेब ने उसकी निगरानी के लिए पहरेदार नियुक्त कर दिये। अब शिवाजी ने बीमार होने का बहाना किया और ख़ैरात करने लगा। ख़ैरात की चीज़ें आया-जाया करती थीं। शिवाजी एक दिन मिठाई के टोकरे में बैठकर बाहर निकल गया। पहरेवालों ने समझा कि मिठाई का टोकरा है। इसलिए उसे रोका नहीं, निकल जाने दिया। शिवाजी ने शीघ्र ही गेरुए वस्त्र पहन लिये, शरीर से भभूत मल ली। वह साधुओं के वेष में मथुरा, इलाहाबाद, बनारस आदि स्थानों में होता हुआ दक्षिण पहुँच गया। सन् १६६७ ई० में राजकुमार मुअज़्ज़म राजा जयसिंह की जगह सेनापति बनाकर दक्षिण में भेजा गया। शिवाजी को अब कुछ भी डर न रहा। परन्तु तब भी वह मुगलों से लड़ना नहीं चाहता था। इसलिए उसने मुगलों से सन्धि कर ली। दो [illegible] बाद सन् १६७० ई० में फिर लड़ाई छिड़ गई। शिवाजी ने सूरत को दूसरी बार लूटा। लड़ाई जारी रही। सन् [illegible] ई० में मुगल-

के गद्दी पर बैठने के समय मुगल-साम्राज्य की दशा
बिगड़ गई थी। बड़े-बड़े सरदार, जो पहले मुगलों के
थे, अब बादशाह का दबाव नहीं मानते थे और अपने
राज्य स्थापित करने में लगे हुए थे। उन्होंने कर देना
बन्द कर दिया था। दक्षिण का सूबेदार आसफजाह
शक्तिशाली हो गया था। उसने निजामुलमुल्क की उपाधि
धारण ले ली थी। वह सैयदों को हराकर दिल्ली का
बन बैठा था। निजाम के सिवा और भी सूबेदार थे
दिल्ली की अधीनता से बाहर निकल चुके थे। इनमें दो
बलवान थे—बंगाल में शुजाउद्दीन और अवध में सआदत
मरहठे बाजीराव पेशवा की अध्यक्षता में उत्तर की ओर
रहे थे और सिक्ख पञ्जाब में अपना दबदबा जमा रहे थे
जाट भी अपनी शक्ति बढ़ा रहे थे और आगरा, मथुरा
जिलों पर उन्होंने अपना अधिकार स्थापित कर लिया था
ऐसी गिरी दशा में नादिरशाह ने, जो फारस का बादशाह
सन् १७३९ ई० में हिन्दुस्तान पर हमला किया और दिल्ली
राज्य को नष्ट कर डाला।

२६ वर्ष के युद्ध के कारण साम्राज्य की आर्थिक दशा भी बिगड़ गई थी। सरकारी कोष में रुपये की कमी हो गई थी।

बादशाह की क्रूरता के कारण सब लोग उससे डरते थे। उनके सम्बन्धी और बेटे भी वृद्धावस्था में उसके पास तक नहीं आये। मरते समय तक वह राज्य का काम करता रहा परन्तु ऐसे बड़े साम्राज्य को सँभालना कोई सरल काम नहीं था। उसके बेटे राजसिंहासन लेने के लिए षड्यन्त्र रच रहे थे और पिता के मरने की बाट देख रहे थे। ऐसी दशा में, ८९ वर्ष की अवस्था में, बादशाह की मृत्यु हो गई। वह औरङ्गाबाद के पास एक रौज़े में दफ़न कर दिया गया।

बहादुरशाह—(१७०७-१२ ई०) औरङ्गज़ेब के मरने के बाद उसका बेटा बहादुरशाह गद्दी पर बैठा। उसने विद्रोहियों को दबाने की कोशिश की परन्तु वह १७१२ ई० में मर गया और अपने काम को पूरा न कर सका। उसके बाद उसका बेटा जहाँदारशाह (१७१२-१३) गद्दी पर बैठा किन्तु वह भी थोड़े दिन के बाद मारा गया। सर्दारों और अमीरों की शक्ति बहुत बढ़ गई। वे अपना प्रभुत्व जमाने का उपाय करने लगे। अन्त में सैयद-भाई, हुसैनअली और अब्दुल्ला, सबसे अधिक बलवान् हो गये। उन्होंने फ़र्रुख़सियर (१७१३ ई०) को, जो औरङ्गज़ेब का एक पोता था, गद्दी पर बिठाया। सैयद-भाई फ़र्रुख़सियर को कठपुतली की तरह रखते और जो चाहते उससे करा लेते थे। सैयदों के इन [illegible] से अप्रसन्न होकर फ़र्रुख़सियर ने स्वतन्त्र होने का [illegible] की परन्तु इस [illegible] [illegible]

[illegible] के बाद [illegible]

वर्ष तक [illegible]

मुहम्मदशाह— [illegible]

किया। शिवाजी का राज्य तो उसकी मृत्यु के बाद छिन्न-भिन्न हो गया परन्तु राष्ट्रीयता का जो भाव उसने फैलाया, बहुत समय तक रहा। इसी राष्ट्रीयता के भाव ने मरहठा-जाति के उत्साह को बढ़ाया और अन्त में मुग़ल-साम्राज्य का नाश कर दिया।

अध्याय ३५

मुग़ल-राज्य की अवनति

अवनति के कारण—हताश होकर औरङ्गज़ेब दक्षिण में लौटा। २५ वर्ष तक उसने मरहठों को दबाने का प्रयत्न किया परन्तु उसे सफलता न हुई। मरहठों की शक्ति पहले की अपेक्षा अधिक बढ़ गई। इसका मुख्य कारण यह था कि मरहठे कभी खुल्लमखुल्ला मैदान में युद्ध नहीं करते थे। अपने छोटे-छोटे घोड़ों पर चढ़े हुए, और रूखा-सूखा भोजन करते हुए, वे एक स्थान से दूसरे स्थान पर शीघ्र पहुँच जाते और मुग़लों की सुसज्जित सेना के हाथ नहीं आते थे। मुग़ल-सेना बहुत बड़ी थी। उसका प्रबन्ध योग्य अफ़सरों के हाथ में नहीं था। बड़े-बड़े योद्धा और सैनिक भोग-विलास के ऐसे प्रेमी थे कि अपने सुख के सामने युद्ध की कुछ भी परवा नहीं करते थे। मुसलमान अब युद्धक्षेत्र में भी वैसे उत्साह और पराक्रम से नहीं लड़ते थे जिसके द्वारा उनके पूर्वजों ने हिन्दुस्तान में अपना राज्य स्थापित किया था। मुग़ल-राज्य का [illegible] इतना बढ़ गया कि [illegible] केन्द्र प्रबन्ध करना असम्भव [illegible] स्थान से और सामान [illegible] का खर्चा कर रहे थे।

[illegible] वर्षों के युद्ध के कारण साम्राज्य की आर्थिक दशा भी [illegible] गई थी। सरकारी कोष में रुपये की कमी हो गई थी। [illegible] बादशाह की क्रूरता के कारण सब लोग उससे डरते [illegible]। उसके सम्बन्धी और बेटे भी वृद्धावस्था में उसके पास [illegible] नहीं आते। मरते समय तक वह राज्य का काम करता [illegible] परन्तु ऐसे बड़े साम्राज्य को सँभालना कोई सरल काम [illegible] था। उसके बेटे राजसिंहासन लेने के लिए षड्यन्त्र रच [illegible] और पिता के मरने की बाट देख रहे थे। ऐसी दशा में, [illegible] वर्ष की अवस्था में, बादशाह की मृत्यु हो गई। वह औरङ्गा- [illegible] के पास एक रौज़े में दफ़न कर दिया गया।

बहादुरशाह—(१७०७-१२ ई०) औरङ्गज़ेब के मरने [illegible] बाद उसका बेटा बहादुरशाह गद्दी पर बैठा। उसने विद्रो- [illegible] को दबाने की कोशिश की परन्तु वह १७१२ ई० में मर [illegible] और अपने काम को पूरा न कर सका। उसके बाद [illegible] बेटा जहाँदारशाह (१७१२-१३) गद्दी पर बैठा किन्तु [illegible] थोड़े दिन के बाद मारा गया। सरदारों और अमीरों [illegible] बहुत बढ़ गई। वे अपना प्रभुत्व जमाने का उपाय [illegible]। अन्त में सैयद-भाई, हुसैनअली और अब्दुल्ला, [illegible] अधिक बलवान हो गये। उन्होंने फर्रुख़सियर (१७१३ [illegible] ई०) को, जो औरङ्गज़ेब का एक पोता था, गद्दी पर [illegible]। सैयद-भाई फर्रुख़सियर को कठपुतली की तरह [illegible] और जो चाहते उससे करा लेते थे। [illegible] में फर्रुख़सियर ने [illegible] की परन्तु [illegible]

[illegible]

मुहम्मदशाह [illegible]

के गद्दी पर बैठने के समय मुग़ल-साम्राज्य की दशा [illegible]
बिगड़ गई थी। बड़े-बड़े सूबेदार, जो पहले मुग़लों के [illegible]
थे, अब बादशाह का दबाव नहीं मानते थे और अपने [illegible]
राज्य स्थापित करने में लगे हुए थे। उन्होंने कर देना [illegible]
बन्द कर दिया था। दक्षिण का सूबेदार आसफ़जाह [illegible]
शक्तिशाली हो गया था। उसने निज़ामुलमुल्क की उपाधि [illegible]
बादशाह से ली थी। वह सैयदों को हराकर दिल्ली का [illegible]
बन बैठा था। निज़ाम के सिवा और भी सूबेदार थे [illegible]
दिल्ली की अधीनता से बाहर निकल चुके थे। इनमें दो [illegible]
बलवान थे—बंगाल में शुजाउद्दीन और अवध में [illegible]
मरहठे बाजीराव पेशवा की अध्यक्षता में उत्तर की ओर [illegible]
रहे थे और सिक्ख पंजाब में अपना दबदबा जमा रहे [illegible]
जाट भी अपनी शक्ति बढ़ा रहे थे और आगरा, मथुरा [illegible]
ज़िलों पर उन्होंने अपना अधिकार स्थापित कर लिया [illegible]
ऐसी गिरी दशा में नादिरशाह ने, जो फ़ारस का बादशाह [illegible]
सन् १७३९ ई० में हिन्दुस्तान पर हमला किया और [illegible]
राज्य को नष्ट कर डाला।

नादिरशाह का आक्रमण—नादिरशाह [illegible]
ख़ुरासान का एक गड़ेरिया था परन्तु अपनी योग्यता [illegible]
योग्यता से उसने फ़ारस की गद्दी पर अपना [illegible]
स्थापित कर लिया था और अफ़ग़ानिस्तान आदि देशों को [illegible]
अपने अधीन कर लिया था। सन् १७३९ ई० में उसने [illegible]
की [illegible] की। अब उसने अपनी शक्ति [illegible]
[illegible]

[illegible]

समय का बना हुआ राजसिंहासन थी, जिसे तख़्त-ताऊस कहते थे, नादिरशाह के हाथ लगा। वह उसे अपने साथ फ़ारस को ले गया। लूट के माल में से उसने बहुत-सा अपने सैनिकों को बाँट दिया और बहुत-सा अपने देश में जाकर ख़र्च किया।

नादिरशाह के भीषण आक्रमण ने मुग़ल-राज्य का नाश कर डाला। जो कुछ शक्ति शेष रही थी वह भी जाती रही। रह गया धनहीन और बलहीन मुहम्मदशाह केवल नाम-मात्र का ही बादशाह। दक्षिण, मालवा, गुजरात, राजपूताना और पञ्जाब स्वतन्त्र हो गये। रुहेलखण्ड में रुहेला अफ़ग़ानों ने अपनी धाक जमाना आरम्भ कर दिया। मरहठों का बल इतना बढ़ गया कि वे बंगाल तक धावा करने और नवाबों से चौथ वसूल करने लगे। सिक्खों की भी शक्ति बढ़ गई और मुग़ल-राज्य का भय जाता रहा। आगरा और दिल्ली के पास जाट लोग हाथ-पैर फैलाने लगे। प्रान्तों के सूबेदारों ने, जो दिल्ली के अधीन थे, कर देना बन्द कर दिया। साम्राज्य में चारों ओर अशान्ति फैल गई।

अहमदशाह अब्दाली का हमला—मुहम्मदशाह के बाद उसका बेटा अहमदशाह गद्दी पर बैठा परन्तु थोड़े दिन बाद वह मारा गया। अहमदशाह के उत्तराधिकारी द्वितीय आलमगीर (१७५४-५६) को बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। नादिरशाह के मरने के बाद हिरात के एक अफ़ग़ान सर्दार अहमदशाह अब्दाली ने अफ़ग़ानिस्तान पर अपना अधिकार स्थापित कर लिया और पञ्जाब को अपने राज्य में मिला लिया। अहमदशाह अब्दाली ने हिन्दुस्तान पर कई बार चढ़ाई की और १७५७ ई० में उसने दिल्ली को लूटा। इस समय मरहठों का बल अधिक बढ़ गया और वे पञ्जाब तक धावा करने

। इस शाहआलम (१७५९-१८०६ ई०) दिल्ली का बादशाह ...ताल्लुके मरहठों ने उत्तरी हिन्दुस्तान को रौंद डाला। रुहेला-...लों ने मरहठों से बचने के लिए अहमदशाह की सहायता ...गी। अब्दाली एक बड़ी सेना लेकर हिन्दुस्तान पर चढ़ ...या और सन् १७६१ ई० में पानीपत के महायुद्ध में मरहठों ... हार हुई। इसका वर्णन आगे किया जायगा।

बक्सर की लड़ाई—सन् १७६४ ई० में बक्सर की ...ड़ाई हुई जिसमें अँगरेज़ों ने अवध के नवाब और शाहआलम ...ो परास्त किया। शाहआलम दीन दशा में बहुत काल तक ...इधर-उधर घूमता रहा। अन्त में अँगरेज़ों ने उसकी पेन्शन ...र दी। उसका बेटा द्वितीय अकबर सन् १८३७ तक ...जीवित रहा और सन् १८५७ ई० में जब अकबर के बेटे ...बहादुरशाह ने ग़दर में विद्रोहियों का साथ दिया तब वह क़ैद ...करके रंगून भेज दिया गया। इस प्रकार मुग़ल-राज्य का अन्त ...हो गया।

अध्याय ३६

मरहठों का पतन

शिवाजी के वंश की अवनति—शिवाजी ने मरहठों ...राज्य की स्थापना की थी। उसने बड़ी वीरता से मुग़लों ...ा सामना किया था और सारे दक्षिण में लूट-खसोट की ...ी। बहुत-से राजा और नवाब मरहठों को चौथ देने लगे ...। ...

शिवाजी का बेटा सम्भाजी औरङ्गज़ेब के यहाँ क़ैद रहा था। औरङ्गज़ेब ने जब उसे मरवा डाला तब मरहठों की शक्ति कुछ कम हो गई। सम्भाजी की मृत्यु के बाद उसका भाई राजाराम मुग़लों से लड़ता रहा और उसके मरने के बाद उसकी स्त्री ताराबाई ने बड़ी वीरता और साहस के साथ मुग़लों से लड़ाई की।

साहू—सम्भाजी का बेटा साहू औरङ्गज़ेब के मरने के समय दिल्ली में क़ैद था। मुग़ल-दरबार में रहने के कारण वह बड़ा आरामतलब हो गया था। औरङ्गज़ेब के मरने के बाद आज़मशाह ने उसे छोड़ दिया और अपने देश को जाने की आज्ञा दे दी। किन्तु ताराबाई ने उसे राजा स्वीकार नहीं किया। वह अन्त समय तक मुग़लों से लड़ती रही। साहू सतारा की गद्दी पर बैठा और मरहठों का राजा हुआ, परन्तु उसमें राज्य करने की योग्यता नहीं थी। मुग़लों के यहाँ क़ैद रहने के कारण वह उत्साहहीन हो गया था और अपना सारा समय भोग-विलास में नष्ट करता था। राज्य का काम उसने ब्राह्मण मंत्रियों को, जो पेशवा कहलाते थे, सौंप दिया था। धीरे-धीरे पेशवा की पदवी मौरूसी हो गई और वह राजा बन बैठा। उसका अधिकार मरहठों पर पूर्ण रीति से स्थापित हो गया और सन्धि-युद्ध उसकी सम्मति से होने लगा।

बालाजी विश्वनाथ—(सन् १७१४-२०ई०) पहला पेशवा [illegible] था। इसके समय में सैयद हुसैनअली ने [illegible] फ़र्रुख़सियर को गद्दी से उतारा [illegible] बनाया। इसके बदले में [illegible] को आज्ञा मिल गई [illegible] महाराष्ट्र-मण्डल का

मर्दार पेशवा था। चौथ से जो धन वसूल होता था उसका ३४ प्रति सैकड़ा राजा को दिया जाता था और शेष ६६ अन्य मरहठा सर्दारों को दिया जाता था।

बाजीराव—दूसरा पेशवा बाजीराव (सन १७२०-४० ई०) था। वह सब पेशवाओं में योग्य और वीर था। उसने दशा को सँभाला, सेना का संगठन किया और शासन-प्रबन्ध को सुधारने की चेष्टा की। इनके समय में मरहठे दूर तक धावा मारने लगे। मरहठा-सर्दारों ने मालवा और राज्य पर धावा किया परन्तु चौथ न मिली। सन १७३६ ई० में मरहठे दिल्ली तक पहुँच गये। जब मुहम्मदशाह ने उनके का धावा हुआ देखा तब निज़ाम को अपनी मदद के लिए बुलाया। अपनी सेना लेकर निज़ाम युद्ध करने आया परन्तु उसने हार कर सन्धि कर ली और बाजीराव को बहुत सा धन देने का वचन दिया। इसी समय मध्यभारत में राघोजी भोंसले नामक मरहठा-सर्दार ने अपना राज्य स्थापित किया।

बाजीराव के समय में मरहठों के चार राज्य बन गये। राघोजी भोंसले ने मध्यभारत में अपना राज्य स्थापित किया और नागपुर को अपनी राजधानी बनाया। गुजरात में गायकवाड़, मालवा और इन्दौर में होलकर और ग्वालियर में सिन्धिया राज्य करने लगे। ये चारों सर्दार पेशवा को अपना मुखिया मानते थे। इनमें से होलकर, सिन्धिया और गायकवाड़ अब तक मौजूद हैं।

बालाजी बाजीराव—बाजीराव के मरने के बाद बालाजी बाजीराव (सन १७४०-६१ ई०) पेशवा हुआ। वह था तो बड़ा उद्यमी परन्तु बुद्धिमान नहीं था। राज्य का

प्रबन्ध करने की योग्यता उसमें थी। सन् १७४६ ई० में साहू ने अपने मरने का समय निकट समझकर राजाराम के बेटे सम्भाजी द्वितीय को अपना उत्तराधिकारी बनाना चाहा परन्तु ताराबाई इस बात से अप्रसन्न हुई। वह अपने पोते राम को राजा बनाना चाहती थी। पेशवा ने ताराबाई का साथ दिया और जब साहू मरा तब उससे कहलवा लिया कि तुम राज्य का प्रबन्ध करना और शिवाजी के वंश की प्रतिष्ठा की रक्षा करना। इस अवसर को पाकर पेशवा ने अपनी शक्ति बहुत बढ़ा ली। साहू के उत्तराधिकारी को सितारा के पास एक छोटी सी जागीर दे दी गई और उसकी पेंशन नियत कर दी गई। पेशवा स्वयं राजा बन बैठा और सारे राज्य का मालिक हो गया। ताराबाई पेशवा की इस बात से बहुत अप्रसन्न हुई। उसे शिवाजी के वंश का यह अपमान अच्छा न लगा। उसने अपने पोते को फिर गद्दी पर बिठलाने की कोशिश की परन्तु परिणाम कुछ न हुआ। पेशवा ने उसके साथियों को कठोर दण्ड दिया। वह सतारा में राज्य करती रही और अन्त में जैसे-जैसे मरहठों का बल बढ़ता गया, वे चारों ओर धावा करने और लूट-मार करने लगे। राघोजी भोंसले ने बंगाल पर कई बार चढ़ाई की और बहुत-सा माल लूटा। मुहम्मदशाह ने पेशवा से लूट-मार बन्द करने को कहा और कुछ समय के लिए राघोजी थम गया। परन्तु फिर उसने हमला करना आरम्भ कर दिया। अन्त में १७५८ ई० में विवश होकर अलीवर्दीखाँ ने राघोजी को उड़ीसा दे दिया और १० लाख रुपया देकर पीछा छुड़ाया। दक्षिण में मरहठों ने निजाम को युद्ध में हराया और उसके राज्य का बहुत-सा भाग छीन लिया। इसके अनन्तर उन्होंने रुहेलों पर धावा किया और पेशवा के भाई रघुनाथराव ने पंजाब पर चढ़ाई की। उसने अहमदशाह अब्दाली के हाकिम को निकाल

...दा और अपना सूबेदार नियुक्त किया। मरहठे अब अपना ...म्राज्य स्थापित करने की बातचीत करने लगे।

पानीपत की तीसरी लड़ाई—अहमदशाह ने जब ...ह सुना तब वह बड़ा क्रोधित हुआ। उसने शीघ्र लड़ाई की ...तैयारी की। मरहठों ने एक बड़ी सेना तैयार की और सदा...शिवराव भाऊ को प्रधान सेनापति बनाकर पानीपत की ओर कूच किया। मरहठे सरदार सब इकट्ठे हो गये और उत्सुक ...होकर युद्ध की बाट देखने लगे। भाऊ के पास तोपख़ाना भी था और कई मुसलमान योद्धा भी उसके साथ थे। कुछ ...समय के बाद मरहठों के डेरे में रसद निपट गई और सेना ...भूख से पीड़ित होकर दुखी होने लगी। अन्त में अफ़ग़ानों ...से पानीपत के मैदान में महायुद्ध हुआ जिसमें मरहठे हार गये। उनके बहुत-से आदमी मारे गये। भाऊ का बेटा और अन्य सरदार युद्ध में काम आये। जब बचने की कोई आशा न रही तब भाऊ ने पेशवा के पास एक गुप्तचर भेजकर सहायता माँगी और पत्र में यह सन्देसा लिखा—"दो मोती टूट गये हैं, २७ मुहरें खो गई हैं और चाँदी और ताँबे का कोई अनुमान नहीं किया जा सकता।" इस गुप्त समाचार का अर्थ पेशवा शीघ्र समझ गया। सारे महाराष्ट्र में हलचल मच गई और शोक-ग्रसित पेशवा थोड़े दिन बाद पूना को चला गया और वहीं मर गया। यह पानीपत की तीसरी लड़ाई सन् १७६१ ई० में हुई। इसके बाद महाराष्ट्र-मण्डल की शक्ति बहुत कम हो गई।

अध्याय ३७

मुग़ल-काल की सभ्यता

शिल्प-कला, आलेख्य और संगीत विद्या की उन्नति—मुग़ल-काल में शिल्पकला, संगीत तथा चित्रकारी की बड़ी उन्नति हुई। फ़ारस अपनी कारीगरी के लिए एशिया के सारे देशों में प्रसिद्ध था। वहाँ की कारीगरी के नमूनों का भारतीय शिल्पजीवियों और चित्रकारों पर बहुत प्रभाव पड़ा। अनेक सुन्दर इमारतें बनाई गईं जिनका पहले वर्णन हो चुका है। मुग़लों से पहले जो इमारतें बनी थीं वे विशाल तथा मज़बूत थीं परन्तु मुग़लों ने सौन्दर्य और सजावट की ओर अधिक ध्यान दिया। संगमरमर का अधिक प्रयोग होने लगा। बहुत-सी इमारतों में जाली इसी पत्थर की बनाई गई। पच्चीकारी का काम भी हुआ जैसा कि ताजमहल में पाया जाता है। गुम्बद के बनाने में कारीगरों ने विशेष कौशल दिखलाया। ताज का गुम्बद इस अद्भुत कलाकौशल का एक नमूना है। विशाल इमारतें भी बनीं। फतहपुर सीकरी का बुलन्द दरवाज़ा भारत की प्रसिद्ध इमारतों में से है। अकबर, जहाँगीर, शाहजहाँ के राजत्वकाल में बड़ी बड़ी विशाल इमारतें बनीं परन्तु औरङ्गज़ेब के समय में स्थापत्य की अवनति हो गई। उसने कोई सुन्दर इमारत नहीं बनवाई।

आलेख्य अथवा चित्रकारी का तो मुगल-काल में पुनर्जन्म सा हुआ। मुगलों से पहले जो बादशाह हुए उनके समय की तसवीरें बहुत कम मिलती हैं। वे चित्रकारी को पसन्द नहीं करते थे।

परन्तु मुगलों को सुन्दर चित्र इकट्ठा करने का बड़ा शौक था।

अकबर और जहाँगीर दोनों चित्रकला के मर्मज्ञ थे। कहते हैं कि एक बार एक पादरी, जिसका अकबर के दरबार में बड़ा आदर था, यूरोप से एक चित्र लाया। बादशाह ने उसे बड़े ध्यान से देखा और तीन दिन तक महल में रक्खा। इसके बाद वह चित्रकारों को दिया गया। जहाँगीर अपने जीवन-चरित्र में लिखता है कि मैं बढ़िया चित्रकार की कृति को केवल उसे देखकर ही पहचान सकता हूँ।

संगीत-विद्या से भी मुग़लों को बड़ा प्रेम था। अकबर के दरबार में कई प्रसिद्ध गवैये थे। तानसेन सबमें शिरोमणि था। अकबर के समय में गाना रात को महल में होता था। प्रत्येक दिन के लिए गवैये नियत कर दिये जाते थे। जहाँगीर, शाहजहाँ को भी गाना-बजाना रुचिकर था। परन्तु औरङ्गज़ेब मज़हब का पाबन्द होने के कारण इन सब चीज़ों को नापसन्द करता था। उसे न काव्य से प्रेम था न संगीत-विद्या से। परन्तु उसके ऐसे विचार होने पर भी काव्य और संगीत की उन्नति में अधिक रुकावट नहीं हुई।

साहित्य—मुग़लकाल में साहित्य का भी ख़ूब विकास हुआ। बाबर तो स्वयं लेखक तथा कवि था। उसने तुर्की भाषा में अपना जीवन-चरित्र लिखा है जिसका पीछे वर्णन हो चुका है। फ़ारसी में भी अनेक ग्रन्थ लिखे गये। गुलबदन बेगम का 'हुमायूँनामा' अब तक प्रसिद्ध है। अकबर बड़ा साहित्य-प्रेमी था। उसी के शासन-काल में निज़ामुद्दीन ने 'तबक़ात अकबरी', बदाऊँनी ने "मुन्तख़बुत्तवारीख़", अबुल-फ़ज़्ल ने 'आईनअकबरी' तथा 'अकबरनामा' आदि ऐतिहासिक ग्रन्थ लिखे। रामायण, महाभारत, भगवद्गीता आदि संस्कृत ग्रन्थों का भी फ़ारसी में अनुवाद कराया गया। ... महाभारत का पुस्तक—जो अकबर के लिए लिखा गई—

अब तक मौजूद हैं। रामायण अमरीका में है और महाभारत जयपुर-दरबार की लाइब्रेरी में। मुग़लकाल में हिन्दी-साहित्य की भी उन्नति हुई। तुलसीदास का रामायण, केशवदास, सूरदास, देव, भूषण आदि कवियों के ग्रन्थ इसी काल में लिखे गये। मुसलमान भी हिन्दी में कविता करते थे। अब्दुररहीम खानख़ाना, जो अकबर के समय का एक प्रसिद्ध अमीर था, हिन्दी में कविता करता था। उसके दोहे आज तक पढ़े जाते हैं। उर्दू भाषा का आरम्भ भी इसी समय हुआ। उर्दू तुर्की भाषा का शब्द है। इसका अर्थ है 'फ़ौजी डेरा'। पहले यह भाषा फ़ौजी डेरे में बोली जाती थी। धीरे-धीरे लोग इसे बोलने लगे और इसका प्रचार बढ़ गया। शाहजहाँ के समय में यह बादशाही दर्बार की भाषा हो गई।

सामाजिक स्थिति—मुग़ल-सम्राट् बड़े ठाट-बाट से रहते थे। लाखों रुपया खाने-पीने, आभूषण, जवाहरात में ख़र्च होता था। अकबर के 'हरम' यानी ज़नाने में सब मिल कर ५,००० स्त्रियाँ थीं। इसमें हज़ारों दासियाँ थीं, जो अन्तःपुर में काम करती थीं। पहरेदार भी औरतें थीं जो अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित रहती थीं। इनके प्रबन्ध के लिए एक पूरा दफ़्तर था जहाँ हिसाब-किताब रक्खा जाता था। बादशाहों का समय आनन्द से बीतता था। अकबर सादगी से रहता था। परन्तु जहाँगीर, शाहजहाँ के राजत्वकाल में बादशाही शान-शौकत अधिक बढ़ गई। जहाँगीर ख़ूब शराब पीता और अफ़ीम खाता था। शाहजहाँ का ठाट-बाट सब बादशाहों से अधिक था। उसने लाखों रुपया तो केवल राजसिंहासन के बनाने में ख़र्च कर दिया था। औरङ्गजेब के

समय में यह शान-शौकत कम हो गई। परन्तु इसका बिलकुल अन्त होना तो असम्भव सा ही था।

बादशाही अमीरों तथा अफ़सरों की आमदनी बड़ी लम्बी-चौड़ी होती थी। उन्हें रुपया बहुत मिलता था। परन्तु यह नियम था कि किसी अमीर के मरने पर उसका सञ्चय किया हुआ धन उसके बेटों को नहीं मिलता था। सारी सम्पत्ति बादशाह की हो जाती थी। इसलिए अमीर लोग रुपया नहीं बचाते थे और जितना ख़र्च किया जा सकता था, करते थे। रुपया न बचाने का एक और भी कारण था। वह यह कि रुपये को किसी कार-बार में लगाने का ज़रिया नहीं था। उस ज़माने में बैंक नहीं थे। व्यापार भी कम था। अधिकांश आमदनी सोने-चाँदी के आभूषण, बहुमूल्य वस्त्र और जवाहरात ख़रीदने में ख़र्च होती थी। अमीरों के यहाँ दास-दासी भी नौकर रहते थे। बाक़ी रुपया ऐयाशी और आराम में ख़र्च होता था। मामूली आदमी किस तरह जीवन व्यतीत करते थे—इसका ठीक पता नहीं, क्योंकि मुसलमान इतिहासकारों ने उनके विषय में कुछ भी नहीं लिखा है।

शाही दरबार में सलाम का नियम—अकबर के दरबार में जो लोग आते थे उन्हें सिजदा करना पड़ता था। बादशाह के हाथ-पैर चूमने का भी रिवाज था। लोग बादशाह को ईश्वर समझते और झरोखे से वे दर्शन किया करते थे। शाहजहाँ ने सिजदा की प्रथा बन्द कर दी। परन्तु झरोखे से दर्शन देने का रिवाज तो औरङ्गज़ेब के समय तक प्रचलित रहा।

दस्तकारी—मुग़लों के [illegible]

मदद करने में हाथ खींच लिया। मरहठों की शक्ति बढ़ गई। बादशाह की धार्मिक नीति ने चारों ओर असंतोष फैला दिया। व्यय का अभाव, निरंकुश शासन, लम्बी लड़ाइयाँ—यही राज्य के पतन के मुख्य कारण थे। औरङ्गज़ेब के उत्तराधिकारी निकम्मे थे। उनके आलस्य और अयोग्यता के कारण शासन-प्रबन्ध दिन पर दिन खराब होने लगा। देश में राजविद्रोह की आग धधकने लगी। बाहरी आक्रमणों के लिए रास्ता साफ हो गया। प्रान्तीय सूबेदार स्वाधीन राज्य स्थापित करने का प्रयत्न करने लगे।